ARANYASANHITA

OF THE SAMAVEDA

WITH THE COMMENTARY OF

SAYANA ACHARYA AND A
BENGALI TRANSLATION BY
SATYA BRATA SAMASRAMI.

आरण्य संहिता।

सायणाचार्य्यकृत भाष्य सहिता।

वङ्गानुवादयुताच।

वि, ए, उपाधिधारिणा

श्रीजीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्येण

प्रकाशिता।

Calcutta.

PRINTED AT THE DWEIPAYANA PRESS.

1873.

To be had from Pandit Jibananda Vidyasagara B. A. Sanskrit College of Calcutta.

पण्डितकुलतिलक-पूज्यपाद श्रीमत् तर्कवाचस्पति

पाद-प्रणीत-प्रकाशित-पुस्तकान्येतानि

१	आशुबोध व्याकरणम् ...	३।
२	धातुरूपादर्शः ...	२
३	शब्दस्तोम-महानिधि [संस्कृत अभिधान]	१०
४	सिद्धान्तकौमुदी—सरलाटीकासहिता	११
५	सिद्धान्तविन्दुसार [वेदान्त] ...	॥
६	तुलादानादिपद्धति [वङ्गाक्षरैः] ...	४
७	गयाश्राद्धादिपद्धति ...	१
८	शब्दार्थरत्न ...	॥।
९	वाक्यमञ्जरी [वङ्गाक्षरैः] ...	।
१०	छन्दोमञ्जरी तथा वृत्तरत्नाकर—सटीक	॥=
११	वेणीसंहार नाटक—सटीक ...	१
१२	मुद्राराक्षस नाटक—सटीक ...	१॥
१३	रत्नावली ...	॥।
१४	मालविकाग्निमित्र—सटीक ...	१॥
१५	धनञ्जय विजय—सटीक	।
१६	महावीरचरित ...	१॥
१७	साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी—सटीक ...	२
१८	वैयाकरणभूषणसार ...	॥।
१९	लीलावती ...	॥।
२०	वीजगणित ...	१
२१	शिशुपालबध—सटीक ...	६
२२	किरातार्जुनीय—सटीक ...	२॥
२३	कुमारसम्भव—पूर्वखण्ड सटीक ...	१
२४	कुमारसम्भव—उत्तरखण्ड ...	॥
२५	अष्टकम् पाणिनीयम् ...	॥।
२६	वाचस्पत्यम् [संस्कृत-बृहदभिधान] ...	६०

आरण्य-संहिता।

ओं नमः सामवेदाय।

वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे।
यं नत्वा कृतकृत्याः स्युस्तं नमामि गजाननम्॥ १॥
यस्य निश्वसितं वेदा यो वेदेभ्योऽखिलं जगत्।
निर्म्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरम्॥ २॥

कृपालुः सायणाचार्य्यो वेदार्थं वक्तुमुद्यतः।
आरण्यकाभिधः षष्ठोऽध्यायो* व्याक्रियतेऽधुना॥ ३॥

तत्रेन्द्रेत्यादिकानान्तु पञ्चपञ्चाशतां क्रमात्।
ऋषिच्छन्दोदैवतञ्च तत्र तत्राभिदध्महे॥ ४॥
तत्राद्याया ऋचो द्रष्टा भरद्वाजः प्रकीर्त्तितः।
द्वितीयस्य वसिष्ठः स्यात्, तृतीयाया ऋचः स्मृतः॥ ५॥
वामदेवस्ततश्छन्दो बृहतीत्रिष्टुवेव च।
गायत्रीति क्रमादिन्द्रो भवेत् तिसृषु देवता॥ ६॥

---

* त्रय आर्च्चिक-ग्रन्था इति विवरणादि-सकल-ग्रन्थ-सम्मता वैदिक-प्रवादानुगताः पुस्तकाद्यन्त-समीक्षणेनोपलब्धव्याश्च। तथाच षड़ध्यायकश्छन्दो नाम एकः, अपरो नवाध्यायात्मक उत्तरः, ताभ्यामन्यत् एषोऽध्यायैकात्मक आरण्य इति व्यवहृतः। सायण-मते तु नैवम्। अयं हि पञ्चोपविभागै रेव छन्दोग्रन्थं परिसमाप्य तस्यैव षष्ठोपभाग एष इति मन्येत।

প্রথম-খণ্ডে—

সৈষা প্রথমা।

ভরদ্বাজঋষিঃ, বৃহতীচ্ছন্দঃ, ইন্দ্রোদেবতা।

২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
ওম্। ইন্দ্রজ্যেষ্ঠন্নআভরওজিষ্ঠম্পুপুরিশ্রবঃ।

১র ২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ৩ ২র
যদ্দিধৃক্ষেমবজ্রহস্ত (১) রোদসীউভেসুশিপ্রপপ্রাঃ ॥১॥

হে 'ইন্দ্র'! * 'জ্যেষ্ঠ' প্রশস্যতমম্ 'ওজিষ্ঠম্' অতিশয়েন বলকরম্ 'পুপুরি' পূরকং 'শ্রবঃ' অন্নং 'নঃ' অস্মভ্যম্ 'আভর' আহর প্রযচ্ছ। হে 'বজ্রহস্ত'! বজ্রবাহো! হে 'সুশিপ্র'! শোভন-হনুক! এবম্ভূত! হে ইন্দ্র! 'যৎ' অন্নং 'দিধৃক্ষেম' ধারয়িতুমিচ্ছেম, যচ্চান্নম্ ইমে পরিদৃশ্যমানে 'উভে রোদসী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'আ পপ্রাঃ' আ পূরয়সি, তদন্নমাহরেত্যন্বয়ঃ ॥১॥

হে দুরাত্মগণের শাস্তা, বজ্রহস্ত এবং সুন্দরহনুমৎ, সাধুগণের দর্শনীয় ঈশ্বর! আমরা যে অন্ন ধারণ করিতে ইচ্ছা করি—যে অন্নে এই পরিদৃশ্যমান, ঊর্দ্ধাধোভাগে পরিবর্ত্তমান, উভয়-লোক পরিপূর্ণ করিতেছ, সেই প্রশস্ত বলকর আশা-পূরক অন্ন আমাদিগকে প্রদান কর ॥১॥

---

(১) "যেনেমেচিত্রবজ্রহস্ত"—ইতি বহ্বৃচাং পাঠঃ।

* "ইন্দতে বৈ ঐশ্বর্য্য-কর্ম্মণঃ"-ইতি নৈরুক্তম্ ৩কা০ ১০অ০ ৮খ০ ঈশ্বরশ্চায়মিতি তদ্ভাষ্যম্।

অথ দ্বিতীয়া।

বসিষ্ঠঋষিঃ, ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ, ইন্দ্রোদেবতা।

২ ৩২ ৩ ১২ ৩ ১র ২র ৩২ ৩ ১২ ৩
ইন্দ্রোরাজাজগতশ্চর্ষণীনামধিক্ষমাবিশ্বরূপং-

১২ ১২ ৩২ ৩১২ ৩ ২উ ৩১২
যদস্য। ততোদদাতিদাশুষেবসূনিচোদদ্রাধউপস্তুতং

৩২
চিদর্বাক্॥ ২॥

যঃ 'ইন্দ্রঃ' 'জগতো' জঙ্গমস্য পশ্বাদেঃ যতো 'রাজা' ঈশ্বরো ভবতি চর্ষণীনাং মনুষ্যাণাং চ রাজা ভবতি। কিঞ্চ। অধিক্ষমা (সপ্তম্যেকবচনস্য লুক্) ক্ষমায়াং* 'বিশ্বরূপং' 'যৎ' ধনমস্তি তস্যাপি রাজা ভবতি। 'ততো দদাতি দাশুষে বসূনি' যজমানায় বসূনি ধনানি দদাতি। স ইন্দ্রোঽস্মাভিঃ উপস্তুতং সম্যক্ স্তুতং 'রাধঃ' ধনং 'অর্বাগ্' অস্মদভিমুখং 'চোদৎ' প্রেরয়তু॥২॥

ইন্দ্র—মনুষ্যদিগের এমন কি সমস্ত জঙ্গম-পদার্থের ও পৃথিবীর (অর্থাৎ স্থাবর বস্তুর) অধিপতি; এই পরিদৃশ্যমান বিবিধ ঐশ্বর্য্য ইহাঁরই। সেই নিমিত্তই তিনি আস্তিক বর্গকে বহুতর ধন বিতরণ করিতে প্রবৃত্ত আছেন—আমাদিগের আদরণীয় বস্তু, আমাদিগের সম্মুখান করিতেছেন॥২॥

(২) "অধিক্ষমা"-"অধিক্ষমি"-ইতি, "বিশ্বরূপং"-"বিষুরূপম্"-ইতি, "উপস্তুতম্"-"উপস্তুতঃ"-ইতি চ সাম্ন ঋচঃ পাঠভেদঃ।

* নিঘণ্টৌ পৃথিবী-নামসু ক্ষমা-ইতি ষষ্ঠম্ পদম্।

अथ तृतीया।

वामदेवऋषिः, गायत्रीच्छन्दः इन्द्रोदेवता।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २क २र
यस्येदमारजोयुजस्तुजेजनेवनꣳस्वः

१ २ ३ १ २ ३ २
इन्द्रस्यरन्त्यंबृहत्॥ ३ ॥

'रजोयुजः' ज्योतिभिर्युक्तस्य (ज्योतीरज उच्यत इति यास्कः) अत्यन्त तेजस्विनो 'यस्य' इन्द्रस्य 'इदं' पुरोवर्त्ति स्तोत्रयुक्तं हविरस्ति तद्धविः 'स्वः' स्वर्गं सर्वत्र वा 'तुजे' दातरि जने यजमान विषये 'वनं' यतो वननीयं सम्भजनीयं खलु। अतः 'इन्द्रस्य' दानं 'रन्त्यम्' अत्यन्तरमणीयं 'बृहत्' प्रभूतं भवति ॥३॥

যে অত্যন্ত জ্যোতিষ্মান্ ইন্দ্রের প্রজাবর্গের দানবিষয়ে এই বুদ্ধিস্থ স্বর্গ অতিপ্রভূত ও পরাকাষ্ঠা হইয়াছে, তাঁহাকে নমস্কার ॥ ৩ ॥

अथ चतुर्थी।

शुनःशेपऋषिः, चतुष्पाज्जगतीच्छन्दः, वरुणो देवता।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १ २
उदुत्तमंवरुणपाशमस्मदवाधमंविमध्यमꣳश्रथाय।

१ २ ३ २ ३ १र २र ३ २ ३ १ २
अथादित्यव्रतेवयन्तवानागसो अदितयेस्याम ॥ ४ ॥

---

(४) "अथादित्यव्रतेवयन्तव"-"अथावयमादित्यव्रततव"—इति साम्न ऋचः पाठभेदः ॥

आद्ये ऋचौ चतुष्पादे ह्येकपादयुतान्तिमा।
शौनःशेपी गार्त्समदी वामदेवीति ताः क्रमात्।
वारुणी पावमानी च वैश्वदेवीति संस्मृताः॥

हे 'वरुण'!* 'उत्तमम्' उत्कृष्टं शिरसि बद्धं 'पाशम्' 'उच्छ्रथाय' उत्कृष्टं शिथिलं कुरु। 'अधमं' निकृष्टं पादेऽवस्थितं पाशं 'अवश्रथाय' अव अधस्तात् शिथिली कुरु। 'मध्यमं' 'नाभिदेशगतं पाशं 'विश्रथाय' वियुज्य शिथिली कुरु। 'अथ' अनन्तरं हे 'आदित्य' अदितेः पुत्र! † वरुण! 'वयं' शुनःशेपाः 'तव' व्रते त्वदीये कर्म्मणि 'अदितये' खण्डन-राहित्याय 'अनागसः' अपराध-रहिताः 'स्याम' भवेम॥४॥

হে সর্ব্বাবরক দেব! আমাদের উত্তমাঙ্গে (শিরোভাগে) বদ্ধ আছে যে পাশ, তাহা শিথিল করত উপরেই তুলিয়া লও, অধমাঙ্গে (পাদভাগে) অবস্থিত পাশও শিথিল করত নিম্নভাগে খসাইয়া দাও এবং মধ্যভাগের (নাভিদেশের) পাশও শিথিল করিয়া বিযুক্ত কর। হে অখণ্ডকালের অংশ! তোমার অখণ্ডব্রতে আমরা যেন কোন রূপে অপরাধী না হই!॥৪॥

---

* "दक्षस्य वादिते जन्मनि व्रते राजाना मित्रावरुणा विवाससि। अतूर्त्त पन्थाः पुरुरथो अर्यमा सप्तहोता विषुरूपेषु जन्मसु ऋक् १०म० ६, ४, ४"-इति मन्त्रलिङ्गात्—"अहोरात्रं मित्रावरुणौ २का० ११अ० २३ख०"-नैरुक्त-भाष्याच्च मित्र-शब्देन दिवा, वरुण-शब्देन च रात्रिः सुग्रहः। "वरुणः वृणोतीति सतः ३का० १०अ० ३ख०"-इति व्युत्पादनात् सर्वेषां घटपटादीनां तमोरूपेण आवरकश्च।

† "अदितिरदीना*-* 'अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।

अथ पञ्चमी।

गृत्समदऋषिः, चतुष्पाज्जगतीच्छन्दः, पवमानीदेवता।

१ २ ३ १र २र ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
त्वयावयंपवमानेनसोमभरेकृतंविचिनुयामशश्वत्।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २३ २
तन्नोमित्रोवरुणोमामहन्तामदितिःसिन्धुःपृथिवीउत द्यौः॥ ५॥

हे 'सोम'! * पवमानेन पवित्रेण पूयमानेन 'त्वया' सहायेन 'भरे' (सङ्ग्राम-नाम) सङ्ग्रामे शश्वद् बहु 'कृतं' कर्त्तव्यं 'वयं' 'विचिनुयाम' विशेषेण कुर्य्याम। यस्मात्तव साहाय्येन कर्म्माणि कुर्म्मः 'तत्' तस्मात् अस्मान् 'मित्रो वरुणः अदितिः' एतन्नामिकाः, 'सिन्धुः' † एतदभिधाना, तथा 'पृथिवी', 'उत' अपिच 'द्यौः'। एते मित्रादयः 'नः' अस्मान् 'मा महन्ताम्, पूजयन्तु धनादि-दानेन ॥५॥

হে স্রষ্টৃদেব! আমরা তোমার পবিত্র সাহায্যে বহুতর কর্ত্তব্য সাধন করিতে পারি! অতএব দিবস ও রজনী রূপে বিভক্ত সেই অখণ্ড কাল এবং অন্তরীক্ষ, পৃথিবী ও দ্যুলোক এই ত্রিভাগীকৃত অখণ্ড দেশ আমাদিগকে পরিতৃপ্ত করুন ॥৫॥

विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्"-इत्यदितेर्विभूतिमाचष्ट एनान्यदीनानीति वा"—इति नैरुक्तम् २का० ४अ० २२ २३ख०। दितिः खण्डनं तदभावोऽदितिरिति निष्पन्नोऽर्थो भाष्यादि-लब्धः।

* सोमः सुनोतेः"-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० ११अ० २ख०। तथाच सोमः सविता स्रष्टेत्यर्थः।

† सिन्धुः समुद्रः, समुद्रइति अन्तरिक्षनामसु पञ्चदशम् पदम् नि० १, २।

अथ षष्ठी।

वामदेवऋषिः, एकपाज्जगतीच्छन्दः, विश्वे देवा देवताः।

२ १र २र ३ २ ३उ ३ २
इमंवृषणंकृणुतैकमिन्माम् ॥ ६ ॥

पूर्व्वस्या ऋचि प्रस्तुता हे मित्रादयो देवाः! यूयम् 'एकम्' अद्वितीयं दानकर्म्मणि 'इमं' सोमं 'वृषणं' कामानामभिवर्षकं 'कृणुत' कुरुत। तथा 'इमां' क्रियां फलाभिवर्षिकां कुरुत ॥६॥

হে দেবগণ! তোমরা এই সর্ব্ব-ফল-প্রদ অদ্বিতীয় ঈশ্বরকে আমায় প্রাপ্ত করাও!। ৬

अथ सप्तमी।

अमहीयु ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, पवमानी देवता।

३ २ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
सनइन्द्रायवज्यवेवरुणायमरुद्भ्यः।

२ १र २र
वरिवोवित्परिस्रव ॥ ७ ॥

गायत्री पावमान्यौ तु सनइत्यादिके ऋचौ।
अमहीयुस्तयोरेवं छन्दोदैवत-निर्णयः ॥ १ ॥

हे सोम! * 'सः' 'वरिवोवित्' धनस्य-लम्भकस्त्वं 'नः'

* "अथैषा परा भवति चन्द्रमसो वैतस्य वा"-३का० ११अ० ४ख०।

अस्माकं यज्यवे' यष्टव्यायेन्द्राय * 'वरुणाय' † 'मरुद्भ्यः' ‡ च 'परिस्रव' धारया चर ॥ ७ ॥

হে সিতরশ্মে চন্দ্র! অভীষ্ট-সাধক তুমি, আমাদিগের পূজনীয় বায়ু, বারি ও অগ্নির স্বাস্থ্যকারিতা সম্পাদনার্থ অমৃত ধারা ক্ষরণ কর।৭

अथाष्टमी।

अमहीयुरृषिः, गायत्रीच्छन्दः, पवमानोदेवता।

३ १र २र ३ २उ ३ २ ३ १ २
एनाविश्वान्यर्य आद्युम्नानिमानुषाणाम्।
१ २
सिषासन्तोवनामहे॥ ८ ॥

'एना' एनेनानेन सोमेन 'मानुषाणां' मनुष्याणां 'विश्वानि' 'द्युम्नानि' अन्नानि 'अर्यः' अभिगच्छन्तः 'सिषासन्तः' सम्भक्तुमिच्छन्तश्च वयं 'वनामहे' भजामहे ॥ ८ ॥

---

* 'इरां ददातीति वेरां दधातीति वा'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० १०अ० ८ख०। इरा शब्देन जलं प्रसिद्धम्, जलयोनित्वश्चान्तरिक्षस्थाग्नेरितीन्द्रपदेनाग्निरपि गृह्यते।

† 'वरुणः कबन्धं प्र-ससर्ज' -इत्यादि-मन्त्र-लिङ्गात् वरुणो मेघ-वर्षण-हेतु-भूतः, स च आकृष्ट-वारि-समूहः प्रसिद्धः।

‡ 'मरुतो मितराविणो वा, मितरोचिणो वा, महद्द्रवन्तीति वा इति नैरुक्तम् ३का० ११अ० १३०। 'वायु र्वै क्षेपिष्ठा देवता'-इति च श्रूयते। ततो मरुतो वायव इति सिद्धान्तः।

এই চান্দ্রমস রশ্মির প্রভাবে মনুষ্যগণের অদনীয় শস্যাদি সমস্ত পরিপুষ্ট হইতেছে, যাহার ভোগে অভিলাষী হইয়া আমরা সতত উপচর্য্যা করি।৮

अथ नवमी।

त्रिष्टुभा अन्नदेवता आत्मान मेवाह—आत्माएव ऋषिः।

२ १ २ ३ २ ३ २ ३
अहमस्मिप्रथमजाऋतस्य-

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पूर्वंदेवेभ्योअमृतस्यनाम।

२ १ २ ३ २उ ३ १ २ २
योमाददातिसइदेवमावद्-

२उ २ ३ १ ३ १ २
हमन्नमन्नमदन्तमद्मि ॥९॥

'देवेभ्यः' पूर्वं अग्नि-वरुणादि-देवेभ्यः-पुरा 'अहम्' अन्न देवता 'अमृतस्य' विनाश-रहितस्य 'ऋतस्य' सत्यस्य परब्रह्मणः सम्बन्धिनी 'प्रथमजा अस्मि नाम' प्रथमतएवोत्पन्ना भवामि खलु। 'यः' पुमान् 'मां ददाति' अन्नरूपां माम् अतिथ्यादिभ्यो ददाति 'सइत्' सएव 'एवं' परिदृश्यमान-प्रकारेण 'आवत्' अवति सर्वान् प्राणिनो रक्षति। यस्तु लोभ-युक्तः-सन् प्राणि-भ्योऽन्नमदत्वा स्वयमेव तदन्नमत्ति। 'अन्नम् अदन्त' नाना-विधान्नभक्षकं तं लोभिनम् 'अहमन्नम्' अन्न-देवता 'अद्मि' भक्षयामि विनाशयामीत्यर्थः ॥ ९ ॥

[‘उषसः’ सम्बन्धी ‘पृश्निः’ आदित्यः*[पृश्निरादित्यो भवति, प्राश्नुत एनं वर्ण इति नैरुक्ताः]। ‘अग्रियः’ अग्रः मुख्यः सोमः ‘अरूरुचत्’ रोचयति। स ‘उक्षा’ जलस्य सेक्ता पर्जन्यः सन् ‘मिमेति’ भृशं शब्दायते। ‘भुवनेषु’ भूतजातेषु ‘वाजयुः’ तेषा मन्न मिच्छन्; ‘मायाविनः’ माया प्रज्ञा तद्वन्तो देवाः ‘अस्य’ सोमस्य ‘मायया’ प्रज्ञया ‘ममिरे’ निर्मितवन्तः [सोमस्य एकैकांश-पान-वशात् अग्न्यादयः स्व-स्व-व्यापारेण जगत् सृजन्तीत्यर्थः]। तस्य ‘अस्य’ मायया ‘नृचक्षसः’ नृणां द्रष्टारः ‘पितरः’ पालकाः देवाः अङ्गिरसः पितरो वा ‘गर्भम्’ ‘आदधुः’ धारयन्ति ओषधीषु॥

सचात्र सूर्यात्मा सोमः स्तूयते। सूर्य-रश्म्यनुगमाधीन-वर्द्ध-नाच्च चन्द्रस्य॥

यद्वा अथ मुषसः पृश्निः सविता अरूरुचत् रोचयति रोचते वा। सर्वं शिष्टं समानम्। तत्सम्बन्धिनो नृणां द्रष्टारः पितरो जगद्रक्षकाः रश्मयो गर्भ मादधु र्वृष्ट्यर्थम्॥ ११॥

উষার সহচারী সূর্য্য, নানাবর্ণের কারণরূপে কিরণজাল বিস্তার করিতেছেন, চন্দ্র প্রতিনিয়ত প্রদীপ্ত হইতেছেন; পর্জন্য এই ভুবনসকলে অন্ন-কামনায় নির্ঘোষ করিতেছেন; মনুজগণের জীবনাধার ও রক্ষক, শস্যসকল গর্ভধারণ করিতেছেন—অধিক কি, দীপ্যমান স্থাবর জঙ্গমসকলই ইহাঁর প্রজ্ঞা শক্তিতেই প্রজ্ঞাবান্ হইয়া সচেতনবৎ সৃজনক্রিয়ার উপযোগিতা করিতেছেন। ১১

---

* ‘सहचारिणावुषाश्चादित्यश्च इति च नैरुक्तम् ३का० ११अ० १०ख०।

अथ तृतीया।

ऋषी मधुच्छन्दा वैश्वामित्री द्रष्टा स्याज्ञायत्रीच्छन्द इन्द्रो देवतेति।

२ ३ ३ उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रइद्धर्योःसचासम्मिस्लआवचोयुजा।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्रोवज्रीहिरण्ययः॥१२॥

'इन्द्रइत्' इन्द्रएव 'हर्योः' हरि-नामकयो रश्वयोः 'सचा' सह युगपत् 'आ सम्मिस्लः' सर्वतः सम्यङ्मिश्रयिता। कीदृशयो र्हर्योः? 'वचोयुजा' इन्द्रस्य वचनमात्रेण रथे युज्यमानयोः सुशिचितयोरित्यर्थः। अयम् 'इन्द्रः' 'वज्री' वज्र-युक्तः 'हिरण्यया' हिरण्मयसर्वाभरणैरुपेत इत्यर्थः॥१२॥

সূর্য্য এবং চন্দ্র ঈশ্বরের এই দুইটি বেগগামী অশ্ব, তিনি ইচ্ছামাত্রে ইঁহাদিগকে অহোরাত্র-করণরূপ কার্য্যে নিয়োগ করিয়া থাকেন, তিনিই একমাত্র এই অশ্বদ্বয়ের সংযোজয়িতা। ঈশ্বর, দুরাত্মদিগের জন্য বজ্রী এবং সাধুগণের সমক্ষে অমৃতময়।১২

अथ चतुर्थी।

मधुच्छन्दविश्वामित्रऋषिः, गायत्री च्छन्दः, इन्द्रो देवता।

३ १ २ ३ १ २
इन्द्रवाजेषुनोवसहस्रप्रधनेषुच।

३ २ ३ १ २ ३ १ २
उग्रउग्राभिरूतिभिः॥१३॥

হে ইন্দ্র! 'উগ্রঃ' শত্রুভিরপ্রধৃষ্যস্ত্বম্ 'উগ্রাভিঃ' অপ্রধৃষ্যাভিঃ ঊতিভিঃ অস্মদ্দ্বেষ্য-পর-পন্থাভিঃ 'বাজেষু' যুদ্ধেষু 'নঃ' অস্মান্ 'অব' রক্ষ। তথা 'সহস্রপ্রধনেষু' চ সহস্র-সঙ্খ্যাক-গজাশ্বাদি-লাভ-যুক্তেষু মহাযুদ্ধেষ্বপি রক্ষ ॥ ১৩ ॥

হে ঈশ্বর! অপ্রধৃষ্য তুমি অপ্রধৃষ্য পালন শক্তিতে আমাদগকে অন্নাদিমৎসম্পদে এবং রণক্ষেত্রাদি ঘোরবিপৎ স্থলে রক্ষা কর (সম্পদে যেন প্রমত্ত না হই! এবং বিপদে যেন ব্যাহত না হই! ।১৩

অথ পঞ্চমী।

প্রথ ঋষিঃ, ত্রিষ্টুবচ্ছন্দঃ, বিশ্বেদেবা দেবতাঃ।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২র ৩ ১
প্রথশ্চযস্যসপ্রথশ্চনামানুষ্টুভস্যহবি-
২ ৩ ২ ৩ ১র ৩ ২ ৩ ১
ষোহবির্যত্। ধাতুর্দ্যুতানাৎসবিতুশ্চবি-
২ ৩ ১ র ২ র ৩ ১ ২
ষ্ণোরথন্তরমাজভারাবসিষ্ঠঃ ॥১৪॥

অপশ্যৎ প্রথইত্যেতাং ত্রিষ্টুভং প্রথনামকঃ।
বৈশ্বদেবী ভবেদেবং ছন্দোদৈবত-নির্ণয়ঃ ॥ ১ ॥

'যস্য' বসিষ্ঠস্য 'প্রথ নাম' পুত্রঃ, যস্য ভরদ্বাজস্য 'সপ্রথঃ' নাম পুত্রঃ—তয়োর্মধ্যে 'বসিষ্ঠঃ' মম পিতা 'আনুষ্টভস্য' অনুষ্টুপ্ছন্দসা-যুক্তস্য 'হবিষঃ' ঘর্মাখ্যস্য 'হবিঃ' হবিষ্ট্বাপাদকং 'রথন্তরং'

साम तद्रथन्तरं 'धातुः' धातृसंज्ञाद्देवात् (१)। 'द्युतानात्' द्योतमानात् 'सवितुश्च' (२)'विष्णोश्च'(३) 'आ जभार' आजहार आहृतवान् (हृग्रहोर्भइति भत्वम्। रथशब्दोपपदात्तरतेः संज्ञायां भृतवृजीति खच्। अरुर्द्विषदजन्तस्येति मुमागमः ॥१४॥

সুপ্রসিদ্ধ বশিষ্ঠ ঋষি, দ্যোতমান স্রষ্টা, পাতা, সর্ব্ব-ব্যাপী দেবতার যজনে প্রবৃত্ত হইয়া—অনুষ্টুপ্ছন্দে প্রদেয় যে হবির প্রথম প্রচারয়িতা প্রথ ও সপ্রথ নামক ঋষিরা, যাহা অনুষ্টুপ্ছন্দে প্রদেয় হবির মধ্যে উৎকৃষ্ট, সেই হবি এবং রথন্তর সাম লাভ করিয়াছেন ॥ ১৪

अथ षष्ठी ॥

नियुत्वानिति गायत्री वायुं गृत्समदोऽब्रवीत्।

३ १ २ र ३ २ ३ ३ १ २
नियुत्वान्वायवागह्ययᳫंशुक्रो अयामिते।

१ २ ३ २ ३ २
गन्तासि*सुन्वतो गृहम् ॥१५॥

हे 'वायो!' (४) 'नियुत्वान्' नियुतो वाहनानि वायोः (नियुतो वायोरिति निघण्टुः) तैर्युक्तस्त्वं 'आगहि' आगच्छ।

* "गतासि" इति ऋग्वेद पाठः।

१–'धाता-विधाता' सर्वस्य इति नैरुक्तम् ३का० ११अ० १०ख०।

२—'सविता सर्वस्य प्रसविता'-इति नैरुक्तम् ३का० १०अ० ३१ख०।

३—'विष्णु र्विशतेर्वा व्यश्नोतेव।'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० ११अ० १५ख०।
एतञ्च विष्णुशब्देन सर्व्वव्यापी सर्वान्तर्यामीति सिद्धान्तः।

४—'वायुर्वातेर्वेत्तेर्वास्याद् गति-कर्मणः'-इत्यादि नैरुक्तम् ३का० १० १,२ख०।

‘अयं’ ‘शुक्रः’ दीप्यमानः सोमः ‘ते’ तुभ्यम् ‘अयामि’ (यामः कर्मणि लुङि रूपम्)नियतो गृहीत आसीत्। यतः ‘सुन्वतः’ सोमाभिषवं कुर्वतो यजमानस्य ‘गृहं’ ‘गन्तासि’ यातोसि ॥१५॥

হে সর্ব্বত্রগামিন্! তুমি সর্ব্ব কার্য্যের নিয়ন্তা, আগমন কর। তোমার জন্য এই শুক্লবর্ণ সোমরস উৎসর্গই রহিয়াছে; কারণ—অভিষবকারী যজমানদিগের গৃহে গমন করিয়াই থাক॥ ১৫

अथ सप्तमी।

नृमेधपुरुमेधौ द्वावृषी ऐन्द्र्या अनुष्टुभः।

३१ २ र ३ १ २ ३ १ २
यज्जायथा अपूर्व्यमघवन्वृत्रहत्याय।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ २१ ३ १र २
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ॥१६॥

हे ‘अपूर्व्य!’ त्वत्तो व्यतिरिक्तेन पूर्वेण वर्जित! हे ‘मघवन्!’ मंहनीयतम! धनवन्निन्द्र! ‘वृत्रहत्याय’ (१) वृत्रासुर-हननाय ‘यद्’ यदा त्वं ‘जायथाः’ उत्पन्नः प्रादुर्भूतोसि ‘तत्’ तदानीमेव ‘पृथिवीं’ प्रथमानाम् ‘अप्रथयः’ प्रसिद्धां दृढ़ामकरोः। ‘उत’ अपिच ‘दिवं’ द्यां द्युलोकं अन्तरिक्षेण ‘अस्तभ्नाः’ निरुद्धामकार्षीः (ईदृशं वीर्यं त्वदन्यस्य न भवतीत्यर्थं द्योतयितुम् अपूर्व्येति पदम् ॥१६॥

হে পূর্ব্ব-বর্জ্জিত, ঐশ্বর্য্যশালিন্! দেব! যখন তুমি মেঘ সঞ্চালনে প্রবৃত্ত হও, তখনই এই পৃথিবী শস্যোৎপাদিকা

१—‘अथास्य कर्म—रसानुप्रदानं वृत्रवधो या च का च बलकृतिरिन्द्र-कर्मैव तत्’-इति नैरुक्तम् २का० ७अ० १०ख०। ‘वृत्रवधो मेघवधः’-इति तत्रत्य-भाष्यम्।

শক্তিমতী রূপে প্রথিত হইয়া পড়ে এবং তখন দ্যুলোক স্তম্ভিত অর্থাৎ নির্ব্বাতপ্রায় করিয়া থাক ॥ ১৬

इति द्वितीयः खण्डः ॥

अथ तृतीयखण्डे—

सैषा प्रथमा।

वामदेवऋषिः प्रीतौ मयीत्यस्याः प्रजापतिः।
देवतास्यास्तत्रच्छन्दोनुष्टुप् सप्तदशतीरितम् ॥

२ ३ २ ३ २ ३ १ र २र ३ २ ३ १र २र
मयिवर्चोअथोयशोथोयज्ञस्ययत्पयः।

३ २ ३ १ २ ३ १र १ २र
परमेष्ठीप्रजापतिर्द्दिविद्यामिवदृꣳहतु ॥१७॥

'परमेष्ठी' परमे लोके तिष्ठतीति परमेष्ठी प्रजापतिः (१) 'दिवि' द्योतमाने स्वर्गे 'द्यामिव' द्योतमानां कान्तिमिव। 'मयि' अस्मदीये शरीरे 'वर्चः' तेजः ब्रह्मास्वं 'दृꣳहतु' वर्द्धयतु। 'अथो' अपिच 'यशश्च' 'दृꣳहतु'। 'अथो' किञ्च। 'यज्ञस्य' यागस्य सम्बन्धि अतएव स उत्तमं 'पयः' हविर्लक्षणमन्नं च दृꣳहतु ॥१७॥

পরম লোকস্থায়ী প্রজাগণের পাতা দেবতা আমার শরীরে সেই স্বর্গীয় ব্রহ্মতেজ পরিবর্দ্ধিত করুন এবং যশ পরিবর্দ্ধিত করুন ও যজ্ঞীয় উৎকৃষ্ট অন্নও পরিবর্দ্ধিত করুন ॥ ১৭

१—'प्रजापतिः प्रजानां पाता पालयिता वा'-इत्यादि नैरुक्तम् २का० १०अ० ४२, ४३ख०।

অথ দ্বিতীয়া।

ত্রিষ্টুভঃ পাবমান্যা স্যাদৃষি গৌতম নামকঃ।

২ ১ ২ ২ ১ ২ ২ ২ ২ ১২ ২১
সন্তেপয়াꣳসিসমুযন্তুবাজাঃসংবৃষ্ণ্যান্যভি

২ ১ ২ ২ ১ ২ ২ ১ ২
মাতিষাহঃ। আপ্যায়মানোঅমৃতায়সোম

২ ১২ ১ ২২ ২ ১ ২
দিবিশ্রবাꣳস্যুত্তমানিধিষ্ব॥ ১৮॥

হে 'সোম!' 'অভিমাতিসাহঃ' অভিমাতীনাং শত্রূণাং হন্তুঃ 'তে' তব এবংভূতং ত্বাং 'পয়াংসি' অপর্ণার্থানি ক্ষীরাণি 'সংযন্তু সংগচ্ছন্তাম্। তথা 'বাজাঃ' হবির্লক্ষনান্যন্নানি চ ত্বাং সংগচ্ছন্তাং 'বৃষ্ণ্যানি' বীর্য্যাণি চ সঙ্গচ্ছন্তাম্। হে সোম! ত্বং 'অমৃতায়' আত্মনঃ অমৃতত্বায় অমরত্বায় 'আ' সমন্তাদ্বর্দ্ধমানঃ সন্ 'দিবি' নভসি স্বর্গে 'উত্তমানি' উন্নততমানি উত্‌কৃষ্টানি 'শ্রবাংসি' অন্নানি অস্মাভিঃ ভোক্তব্যানি হবির্লক্ষণানি 'ধিষ্ব' ধারয় (তি ক্রিয়া-গ্রহণং কর্ত্তব্যমিতি কর্ম্মণঃ সংপ্রদানত্বাৎ চতুর্থ্যর্থে ষষ্ঠী ॥১৭॥

হে স্রষ্টঃ! এই পেয় হব্য তোমার উদ্দেশে গমন করিতেছে, এই অন্ন সমস্তও তোমার উদ্দেশে গমন করিতেছে; এই সমিভ্যারে প্রমত্ত শত্রুগণের বীর্য্য সকলও তোমার উদ্দেশে গমন করুক। হে দেব! তুমি সন্তুষ্ট হইয়া, আমাদের ভোগের জন্য দ্যুলোকে অক্ষয় উৎকৃষ্ট ভোগ্য বস্তু সকল আয়োজন কর॥ ১৮

अथ तृतीया ॥

(ऋष्यादिकम् पूर्ववत्)

२ १ २ १ २२ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अज-

३ २ १ २ ३ २ १ २ ३
नयस्त्वंगाः। त्वमातनो*रुर्वाऽन्तरिक्षं

१२ २२ ३ १२ २१
त्वंज्योतिषा वितमो ववर्थ ॥ १९॥

हे 'सोम'! 'त्वम्' 'इमाः' भूम्यां वर्तमानाः 'विश्वाः' सर्वाः 'ओषधीः' 'अजनयः' उत्पादितवानसि। तथा 'त्वम्' 'अपः' तासामोषधीनां कारणभूतानि वृष्ट्युदकानि अजनयः। तथा 'त्वं' 'गाः' सर्वान् पशून् उदपादयः। 'उरु' विस्तीर्णाम् 'अन्तरिक्षं' 'त्वम्' 'आतनोः' विस्तारितवानसि। तस्मिन्नन्तरिक्षे यत् 'तमः' अस्मद्दृष्टि-निरोधकम् अन्धकारं यदपि 'त्वं' 'ज्योतिषा' आत्मीयेन प्रकाशेन 'वि ववर्थ' विशिष्टं कृतवानसि। (ववर्थ वृञ वरणे लिटस्थलि, "बभूथा-ततंथ-जगृभ्म-ववर्थेति" निपात्यते ॥१९॥

হে স্রষ্টঃ! তুমি এই ভূমিতে বিদ্যমান সমস্ত ওষধি সৃজন করিয়াছ, তুমি ঐ সমস্তের কারণস্বরূপ বৃষ্টি জলের সৃজন করিয়াছ তুমি ঐ সমস্তের উৎপাদনার্থ ভূমি কর্ষণোপযোগী গো-জাতির সৃজন করিয়াছ, তুমি এই সমস্তের স্থা-

---

*"आतनोः" "आतन्थ"—इति साम्नऋचः पाठौ।

য়িত্বের জন্য এই বিস্তীর্ণ অন্তরীক্ষের বিস্তারয়িতা হইয়াছ, তুমিই জ্যোতিঃ সৃজন পুরঃসর তমোজাল বিনষ্ট করিয়া থাক॥ ১৯

অথ চতুর্থী।

অগ্নিমীডে মধুচ্ছন্দা গায়ত্র্যগ্নিসংস্তুতিঃ।

৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ৩ ২
অগ্নিমীডে* পুরোহিতং যজ্ঞস্য দেবমৃত্বিজম্।
১ ২ ৩ ১ ২
হোতারং রত্নধাতমম্॥ ২০॥

'অগ্নি'-নামকং 'দেবম্' 'ঈড়ে' স্তৌমি (ঈড স্তুতাবিতি ধাতুঃ; মন্ত্রস্যাস্য হোত্রা প্রযুজ্যমানত্বাৎ অহং হোতা স্তৌমীতি লভ্যতে) কীদৃশম্ অগ্নিম্? 'যজ্ঞস্য পুরোহিতং' যথা রাজ্ঞঃ পুরোহিতঃ তদভীষ্টং সম্পাদয়তি তথাগ্নিরপি যজ্ঞস্যাপেক্ষিতং হোমং সম্পাদয়তি। যদ্বা যজ্ঞস্য সম্বন্ধি পূর্বভাগে আহবনীয়রূপেণাবস্থিতম্। পুনঃ কীদৃশম্? 'হোতারমৃত্বিজম্' (দেবানাং যজ্ঞেষু হোতৃনামকঋত্বিগগ্নিরেব। তথাচ শ্রূয়তে—"অগ্নির্বৈ দেবানাং হোতেতি")। পুনরপি কীদৃশম্? 'রত্নধাতমম্'। যাগরূপাণাং রত্নানাম্ অতিশয়েন ধারয়িতারং পোষয়িতারম্॥

অত্রাগ্নিশব্দস্য যাস্কো বহুধা নির্বচনং দর্শয়তি—"অথাতো নুক্রমিষ্যামোঽগ্নিঃ পৃথিবীস্থানস্তং প্রথমং ব্যাখ্যাস্যামোঽগ্নিঃ কস্মাদগ্রণী ভবতি, অগ্রং যজ্ঞেষু প্রণীয়তেঽগং নয়তি সন্নমমা-

---

* "মীলে" ইতি ঋগ্বেদ পাঠঃ।

नोऽक्नोपनो भवतीति स्थौलाष्टीवि र्नक्नोपयति न स्नेहयति त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायतइति शाकपूणिरितादक्नाद्दग्धाद्वानी तास्त खल्वेते रकार मादत्ते गकारमनक्नेर्वा दहते र्वा नीः परस्तस्यैषा भवति(७,४,१)"इति ॥२०॥

হে অগ্নিদেব ! তুমি যজ্ঞের মধ্যে প্রথমেই স্থাপিত হইয়া থাক, তুমি না থাকিলে হোমকার্য্য নিষ্পন্নই হইত না, অতএব তুমিই যাগরত্নের পোষক—তোমাকে স্তব করি ॥ ২০

अथ पंचमी ।

त्रिष्टुभावामदेवोऽत्रौदग्निं तेमन्वतेति च ।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २ ३ १
तेमन्वतप्रथमन्नामगोनांत्रिःसप्तप

२ ३ १ र २ र १ २ ३ २ क २र
रमन्नामजानन् । ताजानतीरभ्यनूष

३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १ २
तचाआविर्भुवन्नरुणीर्यशसागावः* ॥२१॥

---

*"ताजानतीरभ्यनूषतचाआविर्भुवन्नरुणीर्यशसागावः"—इति छन्दोगाः । "ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिःसप्त परमं नाम जानन् । ता जानती रभ्यनूषत चा आविर्भुवन् धेनोस्त्रिः परमाणि विन्दन्। तज्जानती रभ्यनूषत चा आविर्भुव दरुणी र्यशसा गोः" —इति बह्वृचाः ।

হে 'অগ্নে!' 'তে' স্তোত্রং কুর্ব্বাণা অঙ্গিরসঃ 'গোনাং' গবাং বাচাং সম্বন্ধি নাম স্তুতি-সাধকং শব্দ-মাত্রং 'প্রথমং' পূর্ব্বম্, 'অমন্বত' অজানত। পশ্চাত্তস্যা বাচঃ সম্বন্ধীনি 'ত্রিঃসপ্ত' একবিংশতি-সংখ্যাকানি 'পরমং' পরমাণ্যুৎকৃষ্টানি 'নাম' নামানি স্তুতিসাধকানি স্তোত্রাণি (জাতাবেকবচনং। ছন্দাংসি বা, তানি চ গায়ত্র্যাদীনি জগত্যন্তানি সপ্ত, অতিজগত্যাদীনি অতিধৃত্যন্তানি সপ্ত, কৃতি-প্রভৃতীন্যুৎকৃতি-পর্য্যন্তানি সপ্ত) 'জানন্' অজানন্ অলভতম্ (এবংবিধচ্ছন্দো যুক্তৈ র্মন্ত্রৈ রগ্নি মস্তুবন্নিত্যর্থঃ) 'তাঃ' বাচঃ 'জানতীঃ' সর্ব্বং জানত্যঃ 'স্ত্রাঃ' (স্ত্রিয়ংতি গচ্ছত্যুষঃ কালং প্রাপয়ন্তি তাঃ) 'অভ্যনূষত' অস্তুবন্। ততঃ সূর্য্যস্য 'যশসা' তেজসা সহ 'অরুণীঃ' অরুণবর্ণাঃ 'গাবঃ' 'আবির্ভুবন্' প্রাদুরভূবন্। (যদ্বা 'তে' অঙ্গিরসঃ 'প্রথমং' পুরাতনং 'নাম' এহি সুরভি-গুগ্‌গুলু-গন্ধিনীতি ধেনু-নামধেয়ম্ 'অমন্বত' উচ্চারয়ামাসুঃ। পশ্চাৎ স্ব-ভূতানি পণিভিরপহৃতানি ত্রিঃসপ্ত-রত্নান্যবিন্দন্। তত উচ্চারিতং জানন্ত্যো 'গাবঃ' 'অভ্যনূষত' হম্বারব-লক্ষণং শব্দমকুর্ব্বত। তদানী মুষাঃ প্রাদুরভূদিতি ॥২১॥

সেই পূর্ব্বতন ঋষিগণ, সর্ব্ব প্রথমে একমাত্র ব্রহ্মনাম বা একমাত্র প্রণবাক্ষর জানিতেন, পরে ক্রমে একবিংশতি প্রকার ছন্দে নিবদ্ধ উৎকৃষ্ট বেদগ্রন্থ লাভ করেন, তাহা অবগত হইয়া অবধি পৃথিবীতে আস্তিক্য ও উপাসনা প্রবৃত্ত হয়, তখন তাঁহাদের নিকটে সর্ব্ব প্রথমে সূর্য্যদেবের এই তেজঃপুঞ্জ আরক্তিম দীপ্তিই উপাসনার একমাত্র অবলম্বন বলিয়া প্রকাশিত হইয়াছিল॥ ২১

अथ षष्ठी।

इतीयं त्रिष्टुबाग्नेयी दृष्टा गृत्समदेन सा॥

३　१२　　२२　३　१　　२　३　२　३　२
समन्यायन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं
क २२　　　　　　३　　३　१　२
नद्यस्पृणन्ति। तमूशुचिंशुचयोदी
३　१　२　३　१२　२२३१२३　१　२
दिवाꣳसमपान्नपातमुपयन्त्यापः* ॥२२॥

'अन्याः' वर्षाणाम् 'आपः' 'संयन्ति' भूम्यां सङ्गच्छन्ते 'अन्या' श्च 'पूर्वं' तत्रावस्थिताः 'उपयन्ति' उपगच्छन्ति। ताः सर्वा आपः 'समानं' सह 'नद्यो' नदी भूत्वा 'ऊर्वं' समुद्रमध्ये वर्त्तमानं वडवानलं 'पृणन्ति' प्रीणयन्ति (पृण प्रीणने तौदादिकः) 'तमु' तमेव 'अपान्नपातम्' 'शुचिं' निर्मलं 'दीदिवांसं' दीप्यमानं [दीदिवेति छान्दसो दीप्तिकर्म्मा लिटः क्वसुः। वस्वेकाजाद्घसा मिति नियमा दड़भावः। छन्दसीवेति वक्तव्य मिति वचनाद्द्विवचनाभावः। एवं भूतं] 'शुचयः' शुभ्राः 'आपः' 'उपयन्ति' समीपे गच्छन्ति॥

एष हि वैद्युताग्निरूपेण मेघे वर्त्तमानोऽस्मान् अजीजनदिति बुध्वा वडवानलरूपेण वर्त्तमानं तं पर्युपासत इत्यर्थः। यद्वा

---

* "अपान्नपातमुपयन्त्यापः"—"परितस्थुरापः"-इति साम-ऋचः पाठ-भेदः॥

अन्या एकधनाख्या आपः संयन्ति। चात्वालोत्करयो मध्ये वसतीवरीभिः सङ्गच्छन्ते । अन्या वसतीवर्याख्या आपश्च उपयन्ति उपगच्छन्ति एकमत्यं प्राप्ता भवन्ति। एताश्च मिलित्वा यज्ञं साधयन्त्यः तत्साध्य-वृष्टि-द्वारा नद्यो भूत्वा ऊर्वं पृणन्तीत्यादि समानम्। एवं हि आपो वा अस्पर्द्धन्त वयं पूर्वं यज्ञं वक्ष्याम इत्यादिको बह्वृच-ब्राह्मण-विनियोगश्चानुगृह्यते ॥ २२॥

উদক সকল, নভোমণ্ডল হইতে একরূপ বৃষ্টি হইতে দেখা যায়, এই ধরণীমণ্ডলের সমতল (ক্ষেত্রাদি) ভূমিতে অপর আকারে সঞ্চলিত হইয়া থাকে। নদী সকল সমুদ্রে গমন করে ; সেই সমিভ্যারে এই পবিত্র নির্ম্মল জল সকলও সেই পবিত্র দেদীপ্যমান পয়োধিতে গমন করিয়া থাকে ॥২২

अथ सप्तमी।

अस्या दनुष्टुभा रात्रिं वामदेव ऋचानया ॥

१र २र३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र
आप्रागाद्भद्रायुवतिरह्नःकेतूंत्समीर्त्सति ।
१ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभूद्भद्रानिवेशनीविश्वस्यजगतोरात्री॥ २३॥

'भद्रा' सूर्यप्रकाशसन्तापं निवारयन्ती सुखकरी 'युवतिः' तमसो मिश्रयित्री 'रात्रिः' 'आ प्रागाद्' आभिमुख्येन प्रगच्छति । 'अह्नः' चन्द्रमसः 'केतून्' रश्मीन् 'समीर्त्सति' सम्यग्वर्धयितु मिच्छति च। अतएव 'भद्रा' कल्याणी रात्री 'विश्वस्य' सर्वस्य 'जगतः' 'निवेशनी' निवेशकारिणी

'अभूत्' भवति। (अहनि स्वस्वव्यापारात् खिन्नान् सर्वप्राणिनः स्वाश्रयेषु स्वापयतीत्यर्थः ॥ २३ ॥

দিবসের প্রভা গোপনকারিণী, কল্যাণরূপা, চির যুবতি, রাত্রি প্রতিনিয়ত আগমন করিতেছেন। এই কল্যাণী সমস্ত জগতের বিশ্রাম দায়িনী হইয়াছেন ॥২৩

अथ अष्टमी ॥

वैश्वानरं जगत्या स्तौद्भरद्वाजो वार्हस्पत्यः ॥

३ २ ३ १ २   ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो

३ १ २ ३ १ २   ३   १ २ ३ १र
विदथा जातवेदसे। वैश्वानराय मतिर्न

२र ३ २ ३ १ २   ३ १ २ ३ १ २
व्यसे शुचिः सोम इव पवते चरुरग्नये* ॥ २४ ॥

'प्रक्षस्य' संपृक्तस्य व्याप्तस्य (यद्वा पृक्षं हविर्लक्षण मन्नं तद्वतः) 'वृष्णः' सेक्तुः 'अरुषस्य' आरोचमानस्य 'वैश्वानराय'[१] 'महः' पूजायुक्तं बलं तेजो वा 'नु' क्षिप्रं स्तौमि। अतएव 'नो' अस्मदीयं 'वचो'

---

* "प्रक्षस्य"—"पृक्षसा"-इति, "महः"-"सहः"-इति, "प्र नो वोचः"-"प्र नु वोचम्"-इति, "जातवेदसे"-"जातवेदसः"-इति, "नव्यसे"-"नव्यसि'-इति च साम्नश्चः पाठ-भेदः ॥

१—वैश्वानरः कस्माद् विश्वान् नरान् नयति इत्यादि नै॰ ७,२८ ॥

वचनं 'विदथे' यागे 'प्रयच्छति' स्तौतीत्यर्थः। 'जातवेदसे' जातप्रज्ञाय जातधनाय वा तमुद्दिश्येत्यर्थः। (उक्तमेव प्रकारा न्तरेणादरादाह) 'नव्यसे' नवतराय 'वैश्वानराय' 'अग्नये' 'शुचिः' निर्मला स्तोतॄणां शोधयित्री वा। 'चारुः' कल्याणी 'मतिः' मन नीया स्तुतिश्च 'पवते' मत्सकाशात् प्रभवति स्वयमेव गच्छती त्यर्थः। 'सोमइव' यथा सोमो दशापवित्रात् स्रवति तद्वदित्यर्थः॥२४

চরাচরে ব্যাপ্ত ও যথাপ্রার্থিত ফলবর্ষী, সর্ব্বত্র দেদীপ্যমান সেই দেবতার তেজ আমাদিগের বাক্য অবগত হউক। পবিত্র অগ্নির নিমিত্ত শোধিত সোমের ন্যায়—পবিত্র, আমাদের মতি, চিরমভিনব ও জাতপ্রাজ্ঞ, সর্ব্বনিয়ন্তার জন্য হউক॥২৪

अथ नवमी।

एषा त्रिष्टुब् वैश्वदेवी भरद्वाजेन नोदिता॥

१ २ ३ १र २र ३ २ ३ १र २र ३ १र
विश्वेदेवाममशृण्वन्तुयज्ञा*मुभेरोदसीअपान्न

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पात्रमन्म। मावोवचाꣳसिपरिचक्ष्याणि

३ २उ ३ १ २
वोचꣳसुम्नेष्विद्वोअन्तमामदेम॥ २५॥

'विश्वे' सर्वे 'देवाः' 'मम' मदीयं 'मन्मः' मननीयं 'यज्ञं'

"यज्ञं"—"यज्ञियाः"-इति पाठो।

यजनीयं पूजां हवींषि वा 'शृखतु' गच्छन्त्वित्यर्थः। 'अपान्न-पात्' मध्यस्थानोऽग्निश्च 'उभे रोदसी' द्यावा-पृथिव्यौ अस्मदीयं स्तोत्रं शृखन्तु चित्ते अवधारयन्तु।

अथ प्रत्यक्ष-कृताः।— हे 'देवाः'! 'वः' युष्माकं 'परिच-च्याणि' परिवर्जनीयानि यानि 'वचांसि' स्तोत्राणि 'मा वोचं' न ब्रवीमि। अपितु समीचीनानीति। अतः, वो युष्माकम् 'अन्तमाः' अन्तिकतमाः सन्तो वयं 'सुम्नेष्वित्' युष्माभिर्दत्तेषु सुखेष्वेव वर्त्तमानाः 'मदेम' मोदेम ॥ २५ ॥

এই ভূলোক, দ্যুলোক এবং অন্তরীক্ষলোকে বর্ত্তমান সমস্ত দেবগণ আমার মাননীয় প্রতিজ্ঞা শ্রবণ করুন। 'হে দেবগণ! আমি তোমাদের অহিতকর বাক্যও প্রয়োগ করিব না, তোমাদের স্থখে স্থখজ্ঞান করিয়া চিরদিন স্থখে কাল যাপন করিব' ॥২৫

अथ दशमी।

वामदेवो महापङ्क्त्या स्तौति लिङ्गोक्तदेवताः॥

१ २　३ १　२　३ १र २र　३ २
यशोमाद्यावापृथिवीयशोमेन्द्रबृहस्पती।

३ १ २　३ १ २ ३ १ २
यशोभगस्यविन्दतुयशोमाप्रतिमुच्यताम्।

३　२　२　३　२ ३ १ २ ३ १ २
यशस्वा ३ :स्याःसꣳसदोहंप्रवदितास्याम् ॥२६॥

'द्यावापृथिवी' द्यावापृथिव्यौः 'यशः' 'मा' स्तोतारम् 'आवि-

ন্দতু' লভতাং প্রাপ্নোত্বিত্যর্থঃ। কিঞ্চ, 'ইন্দ্রবৃহস্পতী'' ইন্দ্রাবৃহস্পত্যোঃ 'যশো' 'মা' মাং বিন্দতু। কিঞ্চ, 'ভগস্য' আদিত্যস্য 'যশো, মা' মাং বিন্দতু। বহুলেন যশসা যশো ময়া 'মা প্রতিমুচ্যতাং' ন প্রমুচ্যতাম্। 'যশস্তস্যাঃ'অস্যাঃ মম 'সংসদঃ' সমূহস্য 'যশো' ন প্রমুচ্যতাম্। 'অহং' প্রবদিতা সর্বত্র প্রবক্তা 'স্যাম্' ভূয়াসম্॥২৬॥

এই দ্যাবা পৃথিবীর যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই ইন্দ্র ও বৃহস্পতির যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই সূর্য্যের যশ আমাকে আশ্রয় করুক, এই আমার সভা হইতে কখন যেন যশ বিদূরিত না হয়—আমি প্রকৃত যশস্বী হইবার অভিলাষে এইরূপ প্রার্থনা করি ॥২৬

অথ একাদশী ॥

ঋষ্টা হিরণ্যস্তূপেন ত্রিষ্টুবৈন্দ্রদেবতা ॥

১ ২ ৩ ২ ক ২র ৩ ১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
ইন্দ্রস্যনুবীর্যাণিপ্রবোচংযানিচকার
৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
প্রথমানিবজ্রী। অহন্নহিমন্বপস্ত
৩ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১ ২
স্তর্দ্দপ্রবক্ষণাঅভিনৎপর্বতানাম্॥২৭॥

'বজ্রী' বজ্রযুক্তইন্দ্রঃ 'প্রথমানি' পূর্বসিদ্ধানি মুখ্যানি বা 'যানি' 'বীর্যাণি' পরাক্রমযুক্তানি 'কর্মাণি' চকার। তস্য 'ইন্দ্রস্য' তানি বীর্যাণি। 'নু' ক্ষিপ্রং 'প্রবোচং' প্রব্রবীমি। কানি বীর্যাণীতি?

तदुच्यते—'अहिं' मेघम् 'अहन्' हतवान्। तदेतदेकं वीर्यम्। 'अनु' पश्चाद् 'अपो' जलानि 'ततर्द' हिंसितवान् भूमौ पातितवानित्यर्थः। इदं द्वितीयं वीर्यम्। 'पर्वतानां' सम्बन्धिनीः 'वक्षणाः' प्रवहणशीला नदीः 'अभिनत्'। कूलद्वयकर्षणेन प्रवाहितवानित्यर्थः। इदं तृतीयं वीर्यम्॥ २७॥

ইন্দ্র বজ্র ধারণ করিয়া মুখ্য যে কয়েকটি কর্ম্ম করেন, তাহা বলি—প্রথম মেঘকে তাড়ন করেন; পশ্চাৎ ভূমিতে বৃষ্টি ধারা পাতন করেন; তাহার পরে সেই সমস্ত জল পর্ব্বত-বৃন্দ হইতে নদী রূপে প্রবাহিত করিতে থাকেন॥২৭

अथ द्वादशी।

विश्वामित्रऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दस्त्वग्निरिति द्वयीः॥
उत्तराग्नेः स्तुतिः पूर्वा स्तुतिः सर्व्वात्मनात्मनः॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १र २र
अग्निरस्मिजन्मनाजातवेदाघृतंमेचक्षु
३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २
रमृतंमआसन्। त्रिधातुरर्कोरजसो
३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
विमानोऽजस्र*ज्योतिर्हविरस्मिसर्वं॥२८॥

साक्षात्कृत-परतत्त्व-स्वरूपोऽग्निः स्वात्मनः सर्वात्मनः सर्वात्मकत्वानुभवम् अस्या ऋचि आविष्करोति—

हे कुशिकाः! भोक्तृ-भोग्य-भावेन द्विविधम् इदं सर्वं जगत्।

---

* "अजस्रं"-"घर्मः"-इति साम्नऋचः पाठ-भेदः॥

"एतावद्वा इदमन्नं चैवान्नादश्च सोम एवान्नमग्नि रन्नादः"-इति श्रुतेः। तत्र सकल-भोक्तृ-वर्ग-रूपेणान्नादोऽग्निः। स च अग्नि-वाय्वादित्य-भेदेन त्रेधा भूत्वा पृथिव्यन्तरिक्ष-द्युलोकानधितिष्ठति। तदुक्तं वाजसनेयके—"स त्रेधात्मानं व्यकुरुतादित्यं द्वितीयं वायुं तृतीय" मिति।

तत्र सोऽग्निः 'अहं 'जन्मना' एव 'जातवेदाः' 'अस्मि' श्रवण-मननादि-साधन-नैरपेक्ष्येण स्वभावतएव साक्षात्कृत-पर-तत्त्व-स्वरूपोऽस्मि। 'घृतं मे चक्षुः' यदेतद्विश्वस्यावभासकं मम स्वभाव-भूतम्प्रकाशात्मकं चक्षुः तद्घृतम् इदानी मत्यन्त-दीप्तम्। यदेतद् अमृतं कर्म-फलं दिव्यादि-विविध-विषयोपभोगात्मकं तन्मे मम आसन्नास्ये वर्तते। सकल-भोक्तृ-वर्गात्मना स्वयमेवावस्थानात्। (एवं स्वात्मनः पृथिव्यधिष्ठातृ-रूपता-मभिधाय वाय्वात्मनान्त-रिक्षाधिष्ठातृता माह—) अर्को जगतः स्रष्टा प्राणः। "सोऽर्चन्न चरत्तस्यार्चत आपो जायन्तार्चतेवै मेकमभूदिति तदेवार्कस्यार्कत्व मिति श्रुतेः। स प्राणः अहं त्रिधातुः त्रिधात्मानं विभज्य तत्र वाय्वात्मना 'रजसः' ऽन्तरिक्षस्य 'विमानः' विमाता अधिष्ठा-तास्मि। (तथा आदित्यरूपेण द्युलोकाधिष्ठातृतामाह—) 'अजस्रं ज्योतिः' अनुपक्षीणं नित्यं तेजः प्रकाशात्मा द्युलोकाधिष्ठाता आदित्योऽप्यह मस्मि। (एवं भोक्तृ-रूपता मात्मनोनुसन्धाय भोग्य-रूपता मप्यनुसन्धत्ते। यद्धविर्भोग्यं प्रसिद्ध मस्ति तत्सर्व मप्यह मेवास्मि॥

यद्वा। अह 'मग्नि रस्मि देवानां हविः-प्रापणात् अङ्गनादि-गुण-युक्तोऽस्मि। किञ्च, 'जन्मना' उत्पात्या 'जातवेदाः' जात-ज्ञानोऽस्मि। उत्पत्ति-क्षण एव सर्वज्ञोऽह मस्मि। अथवा जातं सर्वं स्वात्मतया वेत्तीति जातवेदाः सर्वात्मकइत्यर्थः। तत् कथम्? इत्युच्यते—'घृतं मे चक्षुः यदेतद् घृतं प्रसिद्धमस्ति तन्मे चक्षुः-स्थानीयम्, यथालोके चक्षुर्भासकम् एवं घृत-

मपि प्रचितं ज्वालामुत्पादयत मम भासकम्। 'अमृतं' प्रभारूपं। यदमृत मविनाशि ज्योतिः 'मे' मम 'आसन्' आस्ये वर्त्तते। 'त्रिधातुः' प्राणापानव्यानात्मकस्त्रिधा वर्तमानोऽर्कोऽर्चनीयो यः प्राणोऽस्ति सोऽप्यह मेवास्मि। तथा 'रजसः' अन्तरिक्षस्य 'विमानः' विशेषेण माता परिच्छेत्ता वायुश्चाह मस्मि। किञ्च। 'अजस्रं ज्योतिः' नैरन्तर्य्येण तापकः सूर्य्यश्चाह मस्मि। किं बहुना। आज्य-पुरोडाशादि-रूपं यदेतद्धवि रस्ति तदुपलक्षितं तत्सर्व्व मप्यह मस्मि ('सर्व्वं खल्विदं ब्रह्मेति श्रुतेः) तमनेनाधाम्नेः सर्व्वात्मकत्व-प्रतिपादनेन परब्रह्मत्व मुक्तं भवति ॥२८

ইহার অর্থ স্পষ্টরূপে বুঝিতে পারিলাম না ॥২৮

अथ त्रयोदशी।

३ ३ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १र
पात्यग्निर्विपोअग्रं* पदं वेःपाति यह्व

२र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
श्चरण ँ सूर्य्यस्य। पाति नाभा सप्तशीर्षा-

३ १र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
णमग्निःपाति देवानामुपमादमृष्वः ॥ २९ ॥

'अग्निः' 'वेः' गन्तुः सर्व्वत्र व्याप्तायाः 'विपः' रिपः भूम्याः 'अग्रं' मुख्यं 'पदं' स्थानं 'पाति' रक्षति। 'यह्वः' महान् अग्निः 'सूर्य्यस्य' 'चरणं' चरत्यनेनेति चरण मन्तरिक्षं 'पाति'। 'नाभा' नाभौ अन्तरिक्षस्य मध्ये 'सप्त शीर्षाणं' सप्तगणं मरुद्गणं 'पाति'। 'ऋष्वः' दर्शनीयोऽयम् 'अग्निः' 'देवानाम्' 'उपमादम्' उपमादकं यज्ञं 'पाति' रक्षति ॥२९

* "पात्यग्निर्विपोअग्रं"-"पाति प्रियं रिपोअग्रम्"-इति पाठौ।

অগ্নি এই প্রথিত পৃথিবীর মুখ্য পদ রক্ষা করেন। অগ্নি সূর্য্যরূপে অন্তরীক্ষের ঊর্দ্ধভাগের মুখ্য পদ রক্ষা করেন। অগ্নি সপ্তশীর্ষ হইয়া বায়ুর সহিত মিলন ভাবে (বিদ্যুদাদি রূপে) মধ্য স্থানের মুখ্য পদ রক্ষা করেন। এই দর্শনীয় অগ্নি দেবগণের আমোদ-স্থান (যজ্ঞ) রক্ষা করেন ॥২৯

इति तृतीयः खण्डः।

———०-०-०———

अथ—चतुर्थखण्डि—

सैषा प्रथमा।

वामदेवऋषिः पंक्तिर्भ्राजंत्यग्नइति द्वयोः।
आग्नेयी प्रथमर्त्तव्या द्वितीया दृश्यते तयोः॥

१ २ ३ १ २ ३
भ्राजंत्यग्नेसमिध्यानदीदिवोजिह्वाचरत्यं
२ ३ १ २ १र २र ३ १ २ ३ २ ३ १र
तरासनि। सत्वंनोअग्नेपयसावसुविद्रयिं
२र ३ १ २
वर्चोदृशेदाः॥ ३०॥

'समिधान' ऋत्विग्भिः समिध्यमान! दीप्त! हे 'अग्ने'! 'भ्राजन्ती'प्रकाशमाना 'आसनि' आस्ये'अन्तर्, मध्ये स्थिता त्वदीया 'जिह्वा' हवींषि 'चरति' भक्षयति। हे 'अग्ने'! 'वसुवित्'! धनलम्भक! त्वं'नः'अस्मभ्यं 'पयसा' अन्नेन सह'रयिं' रमणीयं धनं 'दृशे' दर्शनाय'वर्चः' तेजश्च तेजस्वित्वं वा 'अदाः' देहि॥३०

হে প্রদীপ্ত অগ্নে! তোমার এই প্রকাশমান আস্যে শিখা রূপে দেদীপ্যমান জিহ্বা হবি গ্রহণ করিতেছে; হে অভীষ্ট-দ অগ্নে! তুমি আমাদিগকে অন্ন ও তাহার সহিত অন্যান্য রমণীয় ধন প্রদান কর অপিচ আমাদের তেজস্বিতা পরিবর্দ্ধিত কর ॥৩০

অথ দ্বিতীয়া।

३ १र २र ३ १र २र ३ १र २र
वसंतइन्नुरंत्योग्रीष्मइन्नुरंत्यः। वर्षाण्यनु
३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र
शरदोहेमंतःशिशिरइन्नुरंत्यः ॥ ३१ ॥

'वसन्तः इन्नु' वसन्तएव चैत्र-वैशाखरूपवसन्त ऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः भवति। 'ग्रीष्मइन्नु'ज्येष्ठाषाढ़रूपो ग्रीष्मऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः। 'वर्षाणि' वर्षा श्रावण-भाद्रपदरूपेणावयवी-भूतः प्रावृट् ऋतुरेव 'रन्त्यः' रमणीयः। 'तान्यनु' 'शरदः' आश्विनकार्त्तिकरूपेणावयवीभूतऋतुः 'रन्त्यः' रमणीयः। 'हेमन्तः' मार्गशीर्ष-पौषरूपएव रन्त्यः' रमणीयः। 'शिशिरइन्नु' माघ-फाल्गुनरूपएव 'रन्त्यः' रमणीयः ॥३१

বসন্ত ঋতুই অতি রমণীয়, গ্রীষ্ম ঋতুই অতি রমণীয়, বর্ষা ঋতুই অতি রমণীয়, অনন্তর আগত শরৎ ঋতুই অতি রমণীয়, হেমন্ত ঋতুই রমণীয়, শিশির ঋতুই রমণীয়, (এতাবতা দেশ ভেদে, পাত্র ভেদে সকল ঋতুই রমণীয়, কেহই নিন্দনীয় নহে)॥

अथ तृतीया।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १र २

सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

१र २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २

सभूमिꣳसर्वतो* वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ३२ ॥

सर्व-प्राणि-समष्टि-रूपो ब्रह्माण्ड-देहो विराड़ाख्यो यः पुरुषः सोऽयं 'सहस्रशीर्षाः' (सहस्र-शब्दस्योपलक्षणत्वात्) अनन्तैः शिरोभिर्युक्तइत्यर्थः। यानि सर्व-प्राणिनां शिरांसि तानि सर्वाणि तद्देहान्तःपातित्वात्तदीयान्येवेति सहस्र-शीर्षत्वम्। एवं सहस्राक्षत्वं सहस्रपादत्वं च। सपुरुषो 'भूमिं' ब्रह्माण्ड-गोलक-रूपां सर्वतः 'आ' समन्तात् 'वृत्वा' परिवेष्ट्य दशाङ्गुल-परिमितं देशम् 'अत्यतिष्ठत्' अतिक्रम्य व्यवस्थितः। (दशाङ्गुलमित्युपलक्षणं) ब्रह्माण्डाद्बहिरपि सर्वतो व्याप्यावस्थितइत्यर्थः ॥३२

সেই পুরুষ—অনন্ত মস্তকে বিশিষ্ট, অনন্ত চক্ষু বিশিষ্ট, ব্রহ্মাণ্ড গোলকান্তর্ব্বর্ত্তী সমস্ত ভূমি ব্যাপিয়া দশাঙ্গুল পরিধির বহির্দ্দেশেও রহিয়াছেন ॥৩২

अथ चतुर्थी॥

३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

त्रिपादूर्द्ध्वउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः।

३ १ क २र ३ २ ३ २

तथाविष्वङ्व्यक्रामदशनानशनेअभि † ॥३४॥

* "विश्वतो"-इति ऋ०।

† "ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि" ऋ०।

योऽयं 'त्रिपात् पुरुषः' संसार-स्पर्श-रहितः ब्रह्म-स्वरूपः सोऽयम् 'ऊर्ध्वउदैत्' अस्मादज्ञान-कार्य्यात्संसाराद्बहिर्भूतः सन् तत्रत्यैर्गुणदोषै रस्पृष्टः उत्कर्षेण स्थितवान्। 'अस्य' योयं 'पादः' लेशः सोऽय मिह मायायां पुनरभवत्। सृष्टि-संहाराभ्यां पुनः पुनः रागच्छदिति (अस्य सर्वस्य जगतः परमात्म-लेशत्वं भगवता-प्युक्तं—"विष्टभ्याह मिदं कृत्स्न मेकांशेन स्थितो जगदिति") तथा मायाया मागत्यानन्तरं 'विष्वङ्' देव-तिर्य्यगादि-रूपेण विविधः सन् 'व्यक्रामत्' व्याप्तवान्। किं कृत्वा? 'अशनानशने' अभिलक्ष्य अशनं भोजनादि-व्यवहारोपेतं चेतनं प्राणि-जातम्, अनशनं तद्रहित मचेतनं गिरि-नद्यादिकम्। तदुभयथा यथा स्यात्तथा। अय मेव विविधो भूत्वा व्याप्तवानित्यर्थः ॥३३

এই ত্রিপাৎ পুরুষ, অজ্ঞান কার্য্য সংসারের উর্দ্ধে অর্থাৎ বাহিরে আছেন, কিন্তু এই সংসারেরও তাঁহার অংশ আছে, এবং তিনিই চেতন, অচেতন বিবিধ রূপে বর্ত্তমান রহিয়াছেন ॥৩৩

अथ पञ्चमी।

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २उ ३ १ २
पुरुष * एवेद्ँसर्वं यद्भूतंयच्चभाव्याम् †।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
पादोस्यसर्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि ‡॥३५॥

* "पुरुएवेदं"—† "यच्च भव्यम्"—‡ "उतामृतत्वेत्यादि" ऋ०।

यत् 'इदं' वर्त्तमानं जगत् तत् 'सर्वं' 'पुरुषएव'। 'यद्भूतम्' उत्पन्नं जगत् 'यच्च भाव्यं' भविष्यज्जगत् तदपि पुरुषएव। यथास्मिन् काले वर्त्तमानाः प्राणिनः सर्वेऽपि चराचरात्मक-पुरुषस्यावयवाः तथैव गतागामिनो ऽपि कल्पयोर्द्रष्टव्य मित्यभि-प्रायः। एतदेवोभयं स्पष्टीक्रियते—'अस्य' पुरुषस्य 'सर्वाणि भूतानि' काल-त्रय-वर्त्तीनि प्राणि-जातानि 'पादः' चतुर्थोऽंशः। 'अस्य' पुरुषस्यावशिष्टं 'त्रिपात्' स्वरूपम् 'अमृतं' 'विनाश-रहितं' सत् 'दिवि' द्योतनात्मके स्व-प्रकाश-स्वरूपे व्यवतिष्ठतइति शेषः। (यद्यपि "सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म"-इत्यनन्तस्य परब्रह्मणो-ह्रीयदल्पत्वाभावात् पादचतुष्टयं निरूपयितु मशक्यं, तथापि जगदिदं ब्रह्म-स्वरूपापेक्षया अल्पमिति विवक्षित्वात् पादत्वो-पचारः॥३४

যাহা কিছু উৎপন্ন হইয়াছে ও যাহা কিছু উৎপন্ন হইবে —এই সমস্তই সেই পুরুষ, এই বিনশ্বর জগৎ এই ত্রিপাৎ পুরুষের এক অংশ অথচ তিনি দ্যু-লোকে অবিনশ্বর পূর্ণ স্বরূপে বিরাজমান আছেন ॥৩৪

अथ षष्ठी।

१ २ २ २उ २ १ २ ३ १ २
तावानस्य * महिमाततो † ज्यायाꣳश्चपूरुषः ‡।
३ १ २ ३ १र २र ३ १र २र ३ १ २
उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥ ३६॥

---

* "एतावानस्य"—† "अतोज्यायांश्च"—‡ "पादोऽस्येत्यादि" ऋ०।

अतीतानागतवर्त्तमान-रूप-जगदाद्याधारो योऽस्ति 'तावान्' सर्व्वोऽपि 'अस्य' पुरुषस्य 'महिमा' स्वकीय-सामर्थ्य-विशेषः। न तु तस्य वास्तवं स्वरूपं। वास्तवस्तु 'पुरुषः' 'ततो' महिम्नोऽपि 'ज्यायान्' अतिशयेनाधिकइत्यर्थः। 'उत' अपिच 'अमृतत्वस्य' देवत्वस्य 'अयम् ईशानः' स्वमायया 'यत्' यस्मात्कारणात् 'अन्नेन' प्राणिनां भोगेन अन्नेन निमित्त-भूतेन 'अतिरोहति' स्वकीयां कारणावस्था मतिक्रम्य परिदृश्यमान-जगदवस्थां प्राप्नोति। तस्मात् प्राणिनां कर्म्म-फल-भोगाय जगदवस्था-स्वीकारात् नेद-न्तस्य वस्तु-तत्व मित्यर्थः ॥३५

উক্ত সমস্তই ইহাঁর মাহাত্ম্য, অপিচ যেহেতু ইনি ভোগ্য বস্তুর অনুরোধে স্বীয় স্বরূপ অতিক্রম করিয়া জীবত্ব আরোহণ করেন অথচ সমস্ত অবিনশ্বরের ঈশ্বর অতএব বর্ণিত-স্বরূপ হইতেও অতিশয় শ্রেষ্ঠ ॥৩৫

अथ सप्तमी।

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ततो * विराडजायतविराजोअधिपूरुषः।

२ १र २र ३ २उ ३ १ २ ३ २
सजातोअत्यरिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ३७ ॥

"विष्वङ् व्यक्रामत्"-इति यदुक्तं तदेवात्र प्रपञ्चयति—'ततः' तस्मादादि-पुरुषात् 'विराट्' ब्रह्माण्ड-देहः 'अजायत' उत्पन्नः।

* "तस्माद्" ऋ०।

(विविधानि राजन्ते वस्तून्यत्रेति विराट्) 'विराजो अधि' विराड्देहस्योपरि तमेव देहमधिकरणं कृत्वा 'पुरुषः' तद्देहाभिमानी कश्चित्पुमानजायत। योऽयं सर्व-वेदान्त-वेद्यः परमात्मा सएव स्वकीयया मायया विराड्देहं ब्रह्माण्ड-रूपं सृष्ट्वा तत्र जीव-रूपेण प्रविश्य ब्रह्माण्डाभिमानी देवतात्मा जीवोऽभवत् (एतच्चाथर्वणिकउत्तरतापनीये विस्पष्टमामनन्ति—"स वा एष भूतानीन्द्रियाणि विराजं देवताः कोशांश्च सृष्ट्वा प्रविश्य मूढोमूढइव व्यवहरन्नास्ते माययैवेति)। 'स जातः' विराट् पुरुषः 'अत्यरिच्यत' अतिरिक्तोऽभूत्। विराड्व्यतिरिक्तो देवतिर्य्यङ्मनुष्यादिरूपोऽभवत्। पश्चाद्देवादि-जीव-भावादूर्ध्वं भूमिं ससर्जेति शेषः। 'अथो' भूमि-सृष्टेरनन्तरं तेषां जीवानां 'पुरः' ससर्ज [पूर्य्यन्ते सप्तभि र्धातुभि रिति पुरः] शरीराणि ॥३६

সেই পুরুষরূপ কারণ হইতে বিরাট্ অর্থাৎ ব্রহ্মাণ্ড দেহাভিমানী জীব পুরুষ হইয়াছেন, সেই জীব পুরুষ উৎপন্ন মাত্রই দেব তির্য্যঙ্ মনুষ্যাদি রূপে বিরাট্ হইতে ব্যতিরিক্ত হইয়াছেন, তাহার পরে ভূম্যাদি সপ্ত ধাতু, তদনন্তর জীবাশ্রয় শরীর সকল হইয়াছে ॥৩৬

मन्येवामिति पञ्चर्चो वामदेवेन वीक्षिताः।
अत्राद्यैकान्तिमे च द्वे त्रिष्टुभस्तासु चादिमा॥
उपरिष्टाज्ज्योतिरिति बहृचैव विधीयते।
अन्ये अनुष्टुभौ द्यावा-पृथिव्योः प्रथमा तथा॥
द्वितीयैन्द्री चतुर्थी च तृतीयाग्नीर्निजात्मनः।
स्तुतिर्गवा मन्तिमेति छन्दो दैवत-निर्णयः॥

অথ অষ্টমী

বামদেবঋষিঃ। ত্রিষ্টুপ্‌ছন্দঃ। দ্যাবাপৃথিবী দেবতে।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ১র ২র ৩ ১
মন্যেবাং দ্যাবাপৃথিবীসুভোজসৌযেঅপ্রথেথাম
৩ ১র ২র ১ ২ ৩ ১ ২
মিতমভিযোজনম্। দ্যাবাপৃথিবীভবতং
৩ ১র ২র ৩ ১ ২
স্যোনেতেনোমুঞ্চতমংহসঃ॥ ৩৭ ॥

হে 'দ্যাবাপৃথিবী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ! 'বাং' যুবাং 'সুভোজসৌ' শো-ভনপালয়িত্র্যাবিতি 'মন্যে' অহং জানামি হে দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'অমিতম্' অপরিমিতং 'যোজনং' [যুজ্যতে পুরুষোঽনেনেতি যোজনং] ধনাদি তৎ 'অভ্যপ্রথেথাম্' অভিবিস্তারযতম্ হে 'দ্যাবাপৃথিবী' দ্যাবাপৃথিব্যৌ! যুবাং অস্মাকং 'স্যোনে' সুরূপে স্বসুখকার্যে 'ভবতম্' 'তে' দ্যাবাপৃথিব্যৌ 'নঃ' অস্মান্ 'অংহসঃ' পাপাৎ 'মুঞ্চতং' 'মোচ-য়য়তম্'॥ ৩৭

আমি স্বীকার করি—এই দ্যাবা-পৃথিবী আমাদের মঙ্গল কারী, যাঁহারা অপরিমিত সম্বন্ধের বা অপরিমিত ভোগ্য বস্তুর বিস্তার করিতেছেন ; হে দ্যাবাপৃথিবী ! আমাদিগের কল্যাণের জন্য আমাদিগকে পাপ হইতে মুক্ত কর ॥৩৭

अथ नवमी।

अनुष्टुप्छन्दः। इन्द्रो देवता। वामदेव ऋषिः।

१ २   ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
हरीतइन्द्रश्मश्रूण्युतोतेहरितौहरी।
१ २   ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
तंत्वास्तुवन्तिकवयःपरुषासोवनर्गवः॥ ३८॥

हे 'इन्द्र' 'ते' तव 'श्मश्रूणि' 'हरी' सोम-पानेन हरित-वर्णानि' [तथाचश्रूयते—'इन्द्रः श्मश्रूणि हरिताभि प्रष्णुत' इति। "शेश्छन्दसि बहुल"-मिति हरि-शब्दात्परस्य शेर्लुक] 'उतो' अपिच। 'ते' 'हरी' अश्वौ 'हरितौ' हरिद्वर्णौ। 'कवयः' मेधाविनः 'पुरुषासः' पुरुषाः 'वनर्गवः' वननीयाः सम्भजनीया सेवनीया गावो येषां ते वनर्गवः [मध्यरेफश्छान्दसः। गोस्त्रियो रितिह्रस्वत्वं] तादृशः कवयः 'तं' 'त्वा' त्वां स्तुवन्ति॥ ४८॥

হে ইন্দ্র! যাঁহাদিগের ভাল ভাল গোধন আছে, সেই বড় বড় কবিগণ, বর্ণনা করেন—যে, হরিত বর্ণ সোম রস পান করিয়াই তোমার শ্মশ্রু সকল হরিত বর্ণ হইয়াছে এবং এই কারণেই ত্বদীয় অশ্বগণও হরিত বর্ণ॥৩৮

॥ अथ दशमी ॥

वामदेव ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । आशासने विनियोज्या ।

२उ ३ १२ ३२३ २३ १ ३२ ३ २ ३
यद्वर्चोहिरण्यस्ययद्वावर्चोगवामुत । सत्यस्य
१ २३ २३ १२ ३ १२
ब्रह्मणोवर्चस्तेनमासꣳसृजामसि ॥ ४९ ॥

'हिरण्यस्य' हित-रमणीयस्य एतन्नामकस्य 'यद्वर्चः' तेजोऽस्ति । 'यद्वा' अपिच । 'गवाम्' एतन्नामकानां 'यद्वर्चः' तेजोऽस्ति । 'उत' अपिच । 'सत्यस्य' सर्वैः सम्मतस्य 'ब्रह्मणः' यद्वर्चोऽस्ति तेन तैः 'मा' 'संसृजामसि' सम्पादयामः। धनवन्तः पशुमन्तः श्रोत्रिया भवेमेति तात्पर्यार्थः ॥ ४९ ॥

আমরা হিরণ্ময়ের (তেজের) সত্ত্বা, গোসকলের (অর্থাৎ পৃথিবী, জল ও বায়ুর) সত্ত্বা এবং সত্য স্বরূপ ব্রহ্মের সত্ত্বায়-সৃষ্ট হইয়াথাকি ॥ ৩৯

॥ अथ एकादशी ॥

३ १ २ ३ २ ३ २क २र १ २
सहस्तंनइन्द्रदध्योजईशेह्यस्यमहतोविरप्-
३ २ ३ ११ २र ३ १ २ ३ २ ३ १
शिन् । क्रतुन्नन्नृम्णꣳस्थविरंचवाजंवृत्रेषुशत्रू-
२ ३ १ २
न्त्सुहनाकृधीनः ॥ ४० ॥

हे ' विप्रिशन्' ! विशेषेण रपणं व्यक्त-वचनं तदस्यास्तीति विरप्शी, तस्य सम्बोधनं हे विप्रिशन्! विशेषेण स्तोत्र-विषये सत्यवाक्य! 'इन्द्र'! 'ते' तव 'सहः' शत्रूणामभिभवन-रूपम् 'ओजो' बलं 'नः' अस्मभ्यं 'दद्धि' देहि (ददातेश्छान्दसं रूपं लोड़ि हेर्द्धिभावादिना) यस्मात् त्वं तस्य 'अस्य' 'महतः' बलस्य 'ईशे' ईश्वरो भवसि। अतो हे इन्द्र! 'नः' अस्माकं 'क्रतुं न' यज्ञमिव 'नृम्णं' धनं 'स्थविरम्' अतिशयेन प्रवृद्धं, "वाजं" बलं च 'कृधि' कुरु। किञ्च नोऽस्माकं 'शत्रून्' 'वत्रेषु' आवरकेषु उपायेषु 'कृधि' कुरु ॥ ४०

যাঁহার স্তুতি কার্য্যে সততই স্ফুট বাক্যের স্ফূর্ত্তি হইয়া-থাকে এতাদৃশ! হে ইন্দ্র! যেহেতু তুমিই সুমহৎ বলের অধিপতি অতএব আমাদিগকে ইন্দ্রিয়-দমনোপযোগি ত্বদীয় সামর্থ্য প্রদান কর। ইন্দ্র! আমাদিগকে আবশ্যকানুযায়ি সমধিক সামর্থ্য ও ধন প্রদান কর এবং অস্মদাদির শত্রুবর্গকে আবরণের অন্তর্গত কর ॥ ৪০

॥ अथ द्वादशी ॥

२ १ २   २ १ २   २ २ ३ १ २ ३ २   ३ २
सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वारूपाणि बिभ्र
२ २ ३ २ ३ १ २   ३ २ ३ १र
तीर्द्धुनीः। उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इम
२र   ३ २ ३ १ २
आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥ ४१ ॥

हे 'सहर्षभाः' वृषभैः सहिताः! 'सहवत्साः' वत्सैः सहिताः! गावः! 'द्धुनीः' सायं प्रातः काले द्विविधान्यंशांसि

যাসাং তা হূয়ধ্নী: হূয়ধ্নঃ। 'বিশ্বা' সর্ব্বাণি নানা রূপাণি বিভ্রতী' বিভ্রত্য: যূয়ম্ 'উদেত' উদ্গচ্ছত সমৃদ্ধা: সত্য: আগচ্ছত। কিঞ্চ। 'উরু:' বহু: 'পৃথু:' বিস্তীর্ণ: (উরু: পৃথু রিতি শব্দাভ্যাম্ আয়াম-বিস্তারৌ উচ্যেতে। 'অয়ং লোক:' 'ব:' যুষ্মাকম্ 'অস্তু' ভবতু। 'ইমা আপ:' 'ইহ' লোকে ভূতলে অস্মিংস্থানে 'সুপ্রপাণা:' সুখেন প্রকর্ষেণ পাতুং যোগ্যা: সন্তু তস্মাদিহ বহ্বীভূতা: 'স্ত' ভবত উপবিশতেতি পূর্ব্বেণ সম্বন্ধ: ॥ ৪১ ॥

হে অনন্তদীপ্তে ! অনন্তস্রষ্টঃ! তেজ:পুঞ্জ! তোমরা সায়ং প্রাত:কালে বিবিধ আকার ধারণ করত উদিত হইতেছ ; এই সুবিস্তীর্ণ ভূলোক তোমার কৃপাপাত্র হউক, এই লোকস্থ বায়ু বারি সমস্ত স্বাস্থ্যকর কর ॥ ৪১

ইতি চতুর্থ: খণ্ড: ।

—:-০-:—

অথ পঞ্চমে খণ্ডে—

॥ অথ প্রথমা ॥

চতুর্দশাগ্নআয়ূংষীত্যাদ্যাস্তত্র জগত্যসৌ ।
বিভ্রাট্‌ত্রিষ্টুপ্চিত্রমিতি গায়ত্রী দ্বাদশেতরা: ।
আদ্যাগ্নে: পবমানস্য স্তুতি: সৌর্য্যস্ত্রয়োদশ ।

ऋषीणां विप्रकीर्णत्वात्तत्र तत्राभिदध्महे ।
मतं वैखानसा एवं दृष्टवन्तो महर्षयः ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २
अग्न आयूंषिपवस आसुवोर्जमिषंचनः ।
३ १ २ ३ १ २
आरेबाधस्वदुच्छुनाम् ॥ ८२॥

हे 'अग्ने' पवमान-रूप ! अस्माकमायूंषि अन्नान्येतन्नामकानि वा 'पवसे' चरसि 'नः' अस्माकम 'ऊर्जम्' अन्नरसम् 'इषम्' अन्नं च 'आसुव' आभिमुख्येन प्रेरय । किञ्च । 'दुच्छूनां' (रक्षोनामैतद्) रक्षांसि 'आरे' अस्मत्तो दूरएव 'बाधस्व' सम्पीड़य ॥ ४२ ॥

হে অন্তরীক্ষস্থ অগ্নে ! আমাদিগের আয়ু বৃদ্ধি কর এবং আমাদিগের আয়ুর উপযোগী অন্ন ও জল সুখকর কর, বিপক্ষ দলকে দূরেই দলন কর ॥ ৪২

॥ अथ द्वितीया ॥

वभ्राण्नामकएत-त्तु सूर्य-पुत्रीददर्शंसः ॥

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३
विभ्राड्वृहत्पिबतुसोम्यंमध्वायुर्दधद्यज्ञपता
१ २ १ ३ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १
वविह्रुतम् । वातजूतोयोअभिरक्षतित्मनाप्रजाः
२ ३ १र २र
पिपर्त्तिबहुधाविराजति ॥ ८३ ॥

'विभ्राट्' विभ्राजमानः विशेषेण दीप्यमानः सूर्यः 'बृहत्' परिवृढ़ं 'सोम्यं' सोममयं 'मधु' पिबतु। किं कुर्वन्? 'यज्ञपतौ' यजमाने 'अविह्रुतम्' अकुटिलम् अकण्टकम् 'आयुर्दधत्' अन्नं वा कुर्वन्। 'यः' सूर्यो 'वातजूतः' वातेन वायुना प्रेर्यमाणः सन् 'त्मना' आत्मना स्वयमेव अभिरक्षति सर्वं जगद्-भिम्नन् पालयति(रश्मि-चक्रस्य वायु-प्रेर्यत्वात् सूर्यस्यापि तत्प्रेर्यत्वम्) स सूर्यः 'प्रजाः' पिपर्ति'* वृष्ट्यादि-प्रदानेन पूरयति पालयति वा। 'बहुधा' 'विराजति' विशेषेण दीप्यते च। ४३ ॥

যে সূর্য্য, বায়ু-কর্তৃক* চালিত হইয়া স্বয়ং এই সমস্ত জগৎ সংরক্ষণ করিতেছেন, যে সূর্য্য বৃষ্ট্যাদি প্রদান দ্বারা সমস্ত তৃষা নিবারণ করিতেছেন, যে সূর্য্য দিবসে ও নিশিতে বিভিন্ন প্রকারে আলোক দান করিতেছেন, বিশেষ রূপে প্রদীপ্ত; সেই সূর্য্য যজ্ঞকারী আমাদিগকে অকপট আয়ু প্রদান করত এই সোমীয় মধু পান করুন ॥ ৪৩

॥ अथ तृतीया ॥

कुत्सः ।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
चित्रंदेवानामुदगादनीकंचक्षुर्मित्रस्यवरुण-

---

*"पिपर्ति"-"पुपोष"-इति, "बहुधा" "पुरुधा" इति च पाठौ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १

स्याग्नेः। आप्राद्यावापृथिवीअन्तरिक्षꣳसू-

२ ३ १र २र ३ १ २

र्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च ॥ ४४ ॥

'देवानां' दीव्यतीति देवा रश्मयः, तेषां देवानामेव वा प्रसिद्धानाम् 'अनीकं' तेजः-समूह-रूपं 'चित्रम्' आश्चर्य-करं सूर्य-मण्डलम् 'उदगात्' उदयाचलं प्रयासीत्। कीदृशं ? 'मित्रस्य वरुणस्याग्नेश्च' (चक्षुरुपलक्षणमेतत्) एतदुपलक्षितानां जगतां 'चक्षुः' प्रकाशकं चक्षुरिन्द्रियस्थानीयं वा। उदयं प्राप्यैव 'द्यावा-पृथिवी' दिवं च पृथिवीं च 'अतरिक्षं' च 'आप्राः' स्वकीयेन तेजसा 'आ' समन्तात् अपूरयत्। ईदृग्भूत-मण्डलान्तरवर्ती सूर्यः अतर्यामितया सर्वस्य प्रेरकः परमात्मा 'जगतो' जङ्गमस्य 'तस्थुषश्च' स्थावरस्य च 'आत्मा' स्वरूप-भूतः स हि सर्वस्य स्थावर-जङ्गमात्मकस्य कार्य-वर्गस्य (कारणाच्च कार्यं नातिरिच्यते। तथाच पारमर्ष-सूत्रं—"तदनन्यत्वमारम्भण-शब्दादिभ्यः"-इति। यद्वा। स्थावर-जङ्गमात्मकस्य सर्व-प्राणि-जातस्य जीवात्मा। उदिते हि सूर्ये मृतप्रायं सर्वं जगत् पुनश्चेतन-युक्तं सत् उप-लभ्यते! तथाच श्रूयते-"योसौ तमो नुदेति सर्वेषां भूतानां। प्राणाना-दायोदेती ति ॥ ४४ ॥

দিবারাত্রি ও অগ্নির চক্ষু স্থানীয় প্রকাশক, তেজ সমস্তের আকর স্বরূপ আশ্চর্য্যরূপ এই সূর্য্য ভূলোক দ্যুলোক এবং অন্তরীক্ষলোক স্বীয় প্রভায় পরিপূর্ণ করিয়া থাকেন। ইনি কি স্থাবর, কি জঙ্গম, সকল প্রকার প্রাণীরই জীবন ॥ ৪৪

॥ अथ चतुर्थी ॥

आयङ्गौः पृश्निरित्यस्य सार्पराज्ञी समैक्षत ।
ऋचस्तिस्रोभवेदासां विकल्पेनात्मदैवता ॥

१र   २र   ३ १ २   ३ १ २
आयंगौःपृश्निरक्रमीदसदन्मातरं

३ २   ३ १ २   ३ १ २
पुरः। पितरंचप्रयंत्स्वः ॥ ४५ ॥

'गौः' गमनशीलः 'पृश्निः' प्राष्टवर्णः व्याप्ततेजाः 'अय' सूर्यः 'आक्रमीत्' आक्रान्तवान् उदयाचलं प्राप्तवानित्यर्थः। आक्रम्य च 'पुरः' पुरस्तात् पूर्वस्यां दिशि 'मातरं' सर्वस्य भूत-जातस्य निर्मात्रीं 'भूमिम्' 'असदत्' आसीदति प्राप्नोति (सदे श्छान्दसो लेट्। लृदित्वात् च्लेरङादेशः) ततः 'पितरं' पालकं द्युलोकं, 'च' शब्दा दन्तरिक्षं 'प्रयन्' प्रकर्षेण शीघ्रं गच्छन् 'स्वः' सु अरणः शोभन-गमनो भवति। यद्वा। पितरं स्वर्द्युलोकं प्रवर्त्तते ॥ ४५ ॥

এই সর্ব্বত্রগামী, প্রাষ্ঠবর্ণ, তেজঃপুঞ্জরূপী সূর্য্য সতত পূর্ব্বদিকে উদিত হইয়া থাকেন, উদিত হইয়াই ভূতসমস্তের নির্ম্মাণ-ভূমি মাতৃরূপা এই পৃথিবীকে প্রসন্না করেন এবং পিতৃরূপে সমস্ত প্রাণিবর্গের পালয়িতা দ্যুলোকেরও প্রকাশক হইয়া থাকেন ॥ ৪৫ ॥

॥ अथ पञ्चमी ॥

३ १ २ २उ ३ १ २ ३ २
अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती।
२उ ३ १र २र
व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ ४६ ॥

'अस्य' सूर्य्यस्य 'रोचना' रोचमाना दीप्तिरन्तःशरीर-मध्ये मुख्य-प्राणात्मना 'चरति' वर्त्तते। किं कुर्वती? 'प्राणाद-पानती' (मुख्य-प्राणस्य प्राणाद्याः पञ्च वृत्तयः। तत्र प्राणनं नाड़ीभि रूर्ध्वं वायो र्निर्गमनं) तथाविधात्प्राणात् प्राणनादनन्त-रम् अपानती (अपाननं नाड़ीभि रवाङ्मुखं वायो र्नयनं) तत्-कुर्वन्ती (अपपूर्वादनिति लटः शतृ, अदादित्वाच्छपो लुक्। उगितश्चेति ङीप्। शतुरनुमइति नद्याउदात्तत्वम्।

यद्वा। 'अन्तः' द्यावापृथिव्योर्मध्ये "अस्य" सूर्य्यस्य "रोचना" रोचमाना दीप्तिः "चरति" गच्छति (रुच दीप्तौ। अनुदात्तेतश्च हलादेरिति युच्) किंकुर्वन्ती ? "प्राणात्" प्राणनादुदयादनन्तरम् 'अपानती' सायाह्न-समये अस्तङ्गच्छन्ती। ईदृश्या दीप्त्या युक्तः) अतएव 'महिषो' महान् सूर्य्यः 'दिवम्' अन्तरिक्षं उदयास्तम-योर्मध्ये 'व्यख्यत्' विचष्टे प्रकाशयति (महेरचि महेष्टिषजिति औणादिकष्टिषच् प्रत्ययः। चक्षिङःख्याञ् छांदसे लुङि अस्यति-वक्तिख्यातीत्यादिना च्लेरङादेशः॥

এই সূর্য্যের প্রভা দ্যাবা পৃথিবীর মধ্য ভাগে প্রকাশিত

হইয়া অধোমুখে এই পৃথিবীকে প্রকাশ করিতেছেন অপিচ এই মহাভাগ সূর্য্যদেবই দ্যুলোকও প্রকাশ করিতেছেন ॥ ৪৬

॥ অথ ষষ্ঠী ॥

२ २उ २ १ २ २१ २ २ १ २
त्रिंशद्धामविराजतिवाक्पतंगायधी

३ २ ३ २ ३१ २
यते । प्रतिवस्तोरहद्युभिः ॥ ४७ ॥

'त्रिंशद्धाम' धामानि स्थानानि (वचनव्यत्ययः) 'वस्तोः' वासरस्य अहोरात्रस्यावयवभूतानि । 'अह' शब्दोऽवधारणे । 'द्युभिः' सूर्य्यस्य दीप्तिभिरेव 'विराजति' विराजते विशेषेण दीप्यते (व्यत्ययेनैकवचनं । मुहूर्त्तान्यत्रधामान्युच्यन्ते । पञ्चदशरात्रिः पञ्चदशाह्नः) 'पतङ्गाय' पतति गच्छतीति पतङ्गः सूर्य्यः तस्मै सूर्य्याय स्तुति-रूपा 'वाक्' 'प्रतिधीयते' प्रतिमुखं स्तोतृभि र्विधीयते क्रियते [यद्वा 'वस्तोः' अहः 'त्रिंशत्' 'धाम' धामानि (घटिकाभिप्रायमेतत्) त्रिंशद्घटिकाः (अत्यन्तसंयोगे द्वितीया) एतावत् कालं 'द्युभिः' दीप्तिभि रसौ सूर्य्यो 'विराजति विशेषेण दीप्यते । तस्मिंश्च समये 'वाक्' त्रयीरूपा तस्मै 'पतङ्गाय' 'प्रतिधीयते' प्रतिमुखं धार्य्यते] तं पूर्व्वं सेवतइत्यर्थः ॥ [श्रूयते हि "ऋग्भिः पूर्व्वाह्णे दिवि देवईयते, यजुर्व्वेदे तिष्ठति मध्ये अह्नः । सामवेदे नास्तमये महीयते वेदैरशून्यस्त्रिभिरेति सूर्य्यः"-इति । यदा त्विह सूक्ते सार्पराज्ञ्या आत्मस्तुतिस्तदा सूर्य्यात्मना स्तूयतइत्यवगन्तव्यम् ॥ ४७ ॥

পতঙ্গরূপী এই সূর্য্য স্বীয় দীপ্তিতে প্রতি দিবসকে ত্রিংশৎভাগে ভোগ করিয়া থাকেন, এতাদৃশ হিতকারী দেবতার স্তুতি-ক্রিয়ায় বাক্যপ্রয়োগ সাধুমাত্রেরই কর্ত্তব্য ॥ ৪৭

॥ अथ सप्तमी ॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अपत्येतायवोयथानक्षत्रायंत्यक्तुभिः ।

१ २ ३ १ २
सूरायविश्वचक्षसे ॥ ४८ ॥

'तेऽ' 'तायवो' 'यथा' प्रसिद्धास्तस्करा इव 'नक्षत्राणि' देव-गेहरूपाणि ("देवगृहा वै नक्षत्राणि" इति श्रुत्यन्तरात्) यद्वा । इह लोके मानुषा ये स्वर्ग मापुवन्ति ते नक्षत्ररूपेण दृश्यन्ते । तथाच—श्रूयते—'यो वा इह यजते अमुं स लोकं नक्षते तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्व' मिति । यद्वा, तेषां सुकृतिनां ज्योतींषि नक्षत्राण्युच्यन्ते । 'सुकृतां वा एतानि ज्योतींषि यन्नक्षत्राणी' त्याम्नानात् । यास्कस्त्वाह—'नक्षत्राणि नक्षतेर्गतिकर्मणो नेमानि न क्षत्राणीति च ब्राह्मण' मिति) यथाविधानि नक्षत्राणि 'अक्तुभिः' रात्रिभिः सह 'अपयन्ति' अपगच्छन्ति । 'विश्वचक्षसे' विश्वस्य सर्वस्य प्रकाशकस्य 'सूराय' सूर्यस्य आगमनं दृष्ट्वेति शेषः (तस्करा नक्षत्राणि च रात्रिभिः सह सूर्यमागमिष्यतीत्या-कुलायन्तीत्यर्थः । तायुरिति स्तेननाम । तायुस्तस्कर इति तन्नामसु पाठात् । अक्तुरिति रात्रिनाम । शर्वरी अक्तुरिति तन्नामसु-पाठात् ॥ ४८ ॥

নিশাকালে নভোমণ্ডলে পরিদৃশ্যমান উড়ুগণ বিশ্ব-প্রকাশক এই সূর্য্যদেবের উদয়ে তস্কর দলের ন্যায় স্ব-সাহায্যকারিণী নিশার সহিত প্রস্থান করেন ॥ ৪৮ ॥

॥ অথাষ্টমী ॥

১ ২   ৩ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩

অদৃশ্রন্*স্যকেতবোবিরশ্ময়োজনাঁ

১ ২   ১ ২   ৩ ১ ২

অনু। ভ্রাজন্তোঅগ্নয়োযথা ॥ ৪৯ ॥

'অস্য' সূর্য্যস্য 'কেতবঃ' প্রজ্ঞাপকা 'রশ্ময়ো' দীপ্তয়ঃ 'জনান্-অনুঅদৃশ্রন্' জনান্ সর্ব্বান্ অনুক্রমেণ প্রেক্ষন্তে। সর্ব্বং জগৎপ্রকাশয়ন্তীত্যর্থঃ। তত্র দৃষ্টান্তঃ—'ভ্রাজন্তো' দীপ্যমানা 'অগ্নয়-ইব' ॥ ৪৯ ॥

এই সূর্য্যের বিখ্যাতিকারী, জ্বলন্ত অগ্নির ন্যায় দেদীপ্যমান, এই রশ্মিপুঞ্জই সমস্ত জগৎ প্রকাশ করিতেছেন ॥ ৪৯ ॥

॥ অথ নবমী ॥

৩ ১ ২ ৩ ১ ২   ৩ ১ ২

তরণির্ব্বিশ্বদর্শতোজ্যোতিষ্কৃদসি

৩ ১ ২   ৩ ২

সূর্য্য। বিশ্বমাভাসিরোচনম্ ॥ ৫০ ॥

---

* "অদৃশ্রন্"—"অদৃশ্রম্" ইতি পাঠো ॥

हे 'सूर्य' त्वं 'तरणिः' प्रगन्ता अन्येन गन्तुमशक्यस्य महतोऽध्वनो गन्तासि (तथाच स्मर्यते—"योजनानां सहस्रे द्वे द्वे शते द्वे च योजने। एकेन निमिषार्द्धेन क्रममाणं नमोस्तु ते"-इति। यद्वा। उपासकानां रोगात्तारयितासि। "आरोग्यं भास्करादिच्छे" दिति स्मरणात्) तथा 'विश्वदर्शतः' विश्वैः सर्वैः प्राणिभिर्दर्शनीयः (आदित्य-दर्शनस्य चण्डालादि-दर्शन-जनित-पाप-निबर्हण-हेतुत्वात्। तथाचापस्तम्बः—'दर्शने ज्योतिषां दर्शन' मिति। यद्वा, 'विश्वं' सर्वं भूतजातं 'दर्शतं' द्रष्टव्यं प्रकाश्यं येन स तथोक्तः) तथा 'ज्योतिष्कृत्' ज्योतिषः प्रकाशस्य कर्ता। सर्वस्य वस्तुनः प्रकाशयितेत्यर्थः (यद्वा। चन्द्रादीनां। रात्रौ हि अस्तमये चन्द्रादिषु सूर्य-किरणाः प्रतिफलिताः अतोन्धकारं निवारयन्ति। यथा द्वारस्थ दर्पणोपरि निपतिताः सूर्यरश्मयो गृहान्तर्वर्ति तमो निवारयन्ति तद्वदित्यर्थः यस्मादेवं तस्मात् 'विश्वं' प्राप्तं 'रोचनं' रोचमानम् 'अन्तरिक्षम्' 'आ' समन्तात् 'भासि' प्रकाशयसि॥

यद्वा। हे "सूर्य" अन्तर्यामितया सर्वस्य प्रेरक परमात्मन्! "तरणिः" संसाराब्धेस्तारकोसि। यस्मात् त्वं 'विश्वदर्शतः' विश्वैः सर्वैर्मुमुक्षुभिर्दर्शतोद्रष्टव्यः साक्षात्कर्तव्य इत्यर्थः [अधिष्ठान-साक्षात्कारे हि आरोपितं निवर्तते] ज्योतिषः सूर्यादेः कर्त्ता [तथाम्नायते-"चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायते" ति] ईदृशस्त्वं चिद्रूपतया 'विश्वं' सर्वं दृश्यजातं 'रोचमानं' दीप्यमानं यथा भवति तथा 'आभासि' प्रकाशयसि (मैवं न्यक्करणे हि सर्वं जगत् दृश्यते। तथाचाम्नायते-"तमेवभांतमनुभातिसर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाती" ति॥ ५०॥

হে সূর্য্য! তুমি সমস্ত জগতের দর্শনীয় ও জ্যোতিকারী এবং প্রকাশক রূপে পথ-প্রদর্শক হইতেছ এই অন্তরীক্ষ সমস্তও প্রকাশ করিয়া রাখিয়াছ ॥ ৫০ ॥

॥ अथ दशमी ॥

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १र २र ३ १
प्रत्यङ्देवानांविशः प्रत्यङ्ङुदेषिमा

२ १ २ क २र ३ २
नुषान्। प्रत्यङ्विश्वꣳस्वर्दृशे ॥ ५१ ॥

हे सूर्य्य! त्वं 'देवानां' 'विशः' मरुन्नामकान् देवान् ['मरुतो वै देवानां विशः"-इति श्रुत्यन्तरात्। तान्मरुत्सञ्ज्ञकान्देवान् 'प्रत्यङ् उदेषि' प्रतिगच्छन्नुदयं प्राप्नोषि। तेषामभिमुखं यथा भवति तथेत्यर्थः। तथा 'मानुषान्' मनुष्यान् प्रत्यङ् उदेषि। तेपि यथास्मदभिमुखएव सूर्य्यउदेतीति मन्यन्ते तथा। 'विश्वं' प्राप्तं 'स्वः' द्यां लोकं 'दृशे' द्रष्टुं 'प्रत्यङ्' उदेषि। यथा स्वर्लोक-वासिनो जनाः स्वस्याभिमुखेन पश्यन्ति तथा उदेषीत्यर्थः [एतदुक्तं भवति—ये लोकाः पश्यन्ति ते जनाः सर्वेऽपि स्वस्वाभिमुख्येन सूर्य्यं पश्यन्तीति। तथाचाम्नायते—'तस्मात्सर्व एव मन्यन्ते मां प्रत्युदगा' दिति ॥ ५१ ॥

হে সূর্য্য! তুমি অন্তরীক্ষস্থ দেবগণের সম্মুখে উদয় হইতেছ, তুমি ভূলোকস্থ আমাদিগেরও সম্মুখেই উদয় হইতেছ এবং দ্যুবাসিদিগের দর্শনার্থ তাহাদিগেরও সম্মুখেই উদয় হইতেছ—কি আশ্চর্য্য! একমাত্র তুমি লোকত্রয়ের

সম্মুখস্থ হইতেছ, যিনি যথা হইতে দর্শন করুন তোমাকে সম্মুখেই দেখিতে পাইবেন ॥ ৫১

অথ একাদশী।

১ ২ ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩
যেনাপাবকচক্ষসাভুরণ্যন্তংজনাঁ৺
১ ২ ১ ২ ৩ ১ ২
অনু। ত্বংবরুণপশ্যসি ॥ ৫২ ॥

হে 'পাবক' সর্বস্য শোধক 'বরুণ' অনিষ্ট-বারক সূর্য ! ত্বং 'জনান্' প্রাণিনঃ 'ভুরণ্যন্তং' ধারয়ন্তং পোষয়ন্তং বা ইমং লোকং যেন 'চক্ষসা' প্রকাশেনানু পশ্যসি অনুক্রমেণ প্রকাশয়সি তং প্রকাশং স্তুমইতি শেষঃ। [যদ্বা। উত্তরস্যামৃচিসম্বন্ধঃ, তেন চক্ষসা উদেষীতি। তথা চ যাস্কেনোক্তং—তত্তে বয়ং স্তুমইতি বাক্যশেষোপিবোত্তরস্যা মন্বয়স্তেন ব্যাখ্যাতীতি' ॥ ৫২ ॥

সমস্ত পদার্থের শোধক ও অনিষ্টবারক হে সূর্য্য! তুমি প্রাণিগণকে পোষণ করত যে প্রকাশে প্রতিনিয়ত প্রকাশিত করিয়া থাক, সেই প্রকাশ সর্ব্বথা বর্ণনীয় ॥ ৫২

অথদ্বাদশী।

১র ২র ৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২ ৩
উদ্যা*মেষিরজঃ পৃথ্বহামিমানোঅ
১ ২ ২ ৩ ১ ২
ক্তুভিঃ। পশ্যংজন্মানিসূর্য ॥ ১২ ॥

* "উদ্যাম্"—"বিদ্যাম্"—ইতি পাঠৌ ॥

हे 'सूर्य !' त्वं 'पृथु' सुविस्तीर्णं 'रजः' लोकं [लोका रजांस्युच्यन्ते"-इति यास्क-वचनात्] द्युलोकं 'द्याम्' अन्तरिक्षलोकम् 'उदेषि' उद्गच्छसि । किं कुर्वन् ? 'अहानि' 'अक्तुभिः' रात्रिभिः सह 'मिमानः' उन्मानयन् [आदित्यगत्यधीनत्वादहोरात्रविभागस्य] तथा 'जन्मानि' जननवन्ति भूतजातानि 'पश्यन्' प्रकाशयन् ॥ ५३ ॥

হে সূর্য্য ! তুমি এই সুবিস্তীর্ণ অন্তরীক্ষ লোক, দ্যুলোক ও ভূলোক অহোরাত্রে পরিমাণ করত এবং সমস্ত পদার্থের প্রকাশয়িতা হওত প্রতিনিয়তই উদয় হইতেছ ॥ ৫৩

अथ त्रयोदशी ।

१ २   ३ २ ३ २ ३   २ ३ १   क   २र

अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्यः

१   २   ३   १   २

ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥ १३ ॥

'सूरः' सर्वस्य प्रेरकः सूर्यः, 'शुन्ध्युवः' शोधिका अश्वास्त्रियः । तादृशीः सप्त सप्त संख्याकाः 'अयुक्त' स्व-रथे योजितवान् । कीदृशीः ? 'रथस्य' 'नप्त्यः' नपातयित्र्यः । याभिर्युक्तो रथो याति न पतति ईदृशीरित्यर्थः । एवं भूताभिस्ताभिरश्वस्त्रीभिः स्वयुक्तिभिः स्वकीय-योजनेन रथे संबद्धाभिर्याति यजमानगृहं प्रत्यागच्छति । अतस्तस्मै हविर्दातव्य मिति वाक्य-शेषः ॥ ५४ ॥

সূর্য্য সেই সপ্ত ঘোটকী স্বীয় রথে যুক্ত করেন, যাহারা তাঁহার ভার বহনে সক্ষম ; সেই স্বকীয় রথে সর্ব্বত্র গমন করিয়া থাকেন ॥ ৫৪

অথ চতুর্দশী।

৩ ১ ২ ৩ ২ ৩ ২ ৩ ১ ২
সপ্তত্বাহরিতোরথেবহন্তিদেবসূর্য।

৩ ১ ২
শোচিষ্কেশংবিচক্ষণ ॥ ১৪ ॥

হে 'সূর্য' 'দেব!' দ্যোতমান! 'বিচক্ষণ'! সর্বস্য প্রকাশয়িতঃ! 'সপ্ত' সপ্ত-সঙ্খ্যাকাঃ 'হরিতঃ' অশ্বাঃ রস-হরণ-শীলা রশ্ময়ো বা 'ত্বা' ত্বাং 'বহন্তি' প্রাপ্নুবন্তি। কীদৃশং 'রথে' অবস্থিত মিতি শেষঃ তথা 'শোচিষ্কেশং' শোচীংষি তেজাংস্যেব যস্মিন্ কেশাইব দৃশ্যন্তে স তথোক্তস্তমিতি ॥ ৫৫ ॥

হে সূর্য্য! হে সমস্ত জগতের প্রকাশয়িতঃ! দেব! তোমাকে হরিতবর্ণ সপ্ত অশ্বে * বহন করিয়া থাকে; তাহারা তোমার রথে সুনৈপুণ্যে সংযুক্ত রহিয়াছে এবং তাহাদের স্কন্ধদেশীয় কেশ সকল অতি শুভ সুচিক্কণ ॥ ৫৫

* সায়ণাচার্য্য বলেন—রশ্মিপুঞ্জই অশ্বরূপে কল্পিত এবং তদীয় প্রভাপুঞ্জই কেশস্থানীয়।

—:০:—

॥ ইতি শ্রীমদ্ ভগবত্ কুথুমর্ষি প্রাদুষ্কৃতা ভাষ্যেণানুবাদেন চ সমেতা সামবেদীয়া আরণ্যসংহিতা সমাপ্তা ॥

२७	कादम्बरी—सटीक ...	४
२८	राजप्रशस्ति ...	≡
२९	अनुमानचिन्तामणि तथा अनुमानदीधिति	४
३०	सर्वदर्शनसंग्रह ...	१
३१	भामिनीविलास—सटीक ...	१
३२	हितोपदेश—सटीक ...	१
३३	भाषापरिच्छेद मुक्तावलीसहित ...	१
३४	बहुविवाहवाद ...	।
३५	दशकुमारचरित—सटीक ...	१॥
३६	परिभाषेन्दुशेखर ...	॥।
३७	कविकल्पद्रुम (वोपदेवकृत धातुपाठ)	॥
३८	चक्रदत्त (वैद्यक) ...	१॥
३९	उणादिसूत्र—सटीक ...	२
४०	मेदिनी कोष ...	१
४१	पञ्चतन्त्रम् [श्रीविष्णु-शर्म्म-सङ्कलितम्]	२॥
४२	विद्वन्मोदतरङ्गिणी (चम्पूकाव्य) ...	॥
४३	माधवचम्पू ...	।≡
४४	तर्कसंग्रह (इंराजी अनुवाद सहित)	॥
४५	प्रसन्नराघवनाटक (श्रीजयदेवकविरचित)	१
४६	विवेकचुड़ामणि [श्रीमत्शङ्कराचार्य्य विरचित]	।=
४७	काव्यसंग्रह [सम्पूर्ण] ...	५
४८	लिङ्गानुशासन (सटीक) ...	।
४९	ऋतुसंहार—सटीक ...	।≡
५०	विक्रमोर्वशी—सटीक ...	१॥
५१	वसन्ततिलक भाण ...	॥–
५२	गायत्री [वङ्गाक्षरैः] ...	
५३	सांख्यदर्शन (भाष्यसहित) सांख्यप्रवचनभाष्य	२

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिरे—बि,ए,उपाधिधारिणः
श्रीजीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यस्य
सकाशात् लभ्यानि ।

24/10.74

MANTRA BRAMHANAM

OF THE SAMAVEDA

WITH A COMMENTARY AND BENGALI TRANSLATION BY

SATYA BRATA SAMASRAMI.

सामवेदस्य मन्त्रब्राह्मणम् ।

भाष्यसहितम् ।

वङ्गानुवादयुक्तञ्च ।

वि, ए, उपाधिधारिणा
श्रीजीवानन्द विद्यासागर भट्टाचार्य्येण
प्रकाशितम् ।

Calcutta.

PRINTED AT THE DWEIPAYANA PRESS.

1873.

To be had from Pandit Jibananda Vidyasagara B. A. Sanskrit llege of Calcutat.

पण्डितकुलतिलक-पूज्यपाद श्रीमत् तर्कवाचस्पति

पाद-प्रणीत-प्रकाशित-पुस्तकान्येतानि

१	आशुबोध व्याकरणम्	...	३।
२	धातुरूपादर्शः	...	२
३	शब्दस्तोम-महानिधि [संस्कृत अभिधान]		१०
४	सिद्धान्तकौमुदी—सरलाटीकासहिता		११
५	सिद्धान्तविन्दुसार [वेदान्त]	...	॥
६	तुलादानादिपद्धति [वङ्गाक्षरैः]	...	४
७	गयाश्राद्धादिपद्धति	...	१
८	शब्दार्थरत्न	...	॥।
९	वाक्यमञ्जरी [वङ्गाक्षरैः]	...	।
१०	छन्दोमञ्जरी तथा वृत्तरत्नाकर—सटीक		॥=
११	वेणीसंहार नाटक—सटीक	...	१
१२	मुद्राराक्षस नाटक—सटीक	...	१॥
१३	रत्नावली	...	॥।
१४	मालविकाग्निमित्र—सटीक	...	१॥
१५	धनञ्जय विजय—सटीक		।
१६	महावीरचरित	...	१॥
१७	साङ्ख्यतत्त्वकौमुदी—सटीक	...	२
१८	वैयाकरणभूषणसार	...	॥।
१९	लीलावती	...	॥।
२०	वीजगणित	...	१
२१	शिशुपालबध—सटीक	...	६
२२	किरातार्जुनीय—सटीक	...	२॥
२३	कुमारसम्भव—पूर्वखण्ड सटीक	...	१
२४	कुमारसम्भव—उत्तरखण्ड	...	॥
२५	अष्टकम् पाणिनीयम्	...	॥।
२६	वाचस्पत्यम् [संस्कृत-वृहदभिधान]	...	६०

मन्त्र-ब्राह्मणम्।
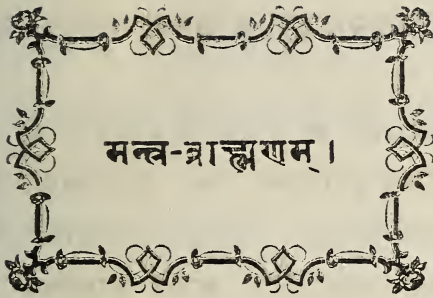
॥ अथ प्रथमः प्रपाठकः ॥

तत्र

प्रथम-खण्डः।

ओं। देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु ॥१॥ काम वेद ते नाम मदो नामासि समानया

हे 'देव' द्योतमान! 'सवितः'! जगत्-प्रसवितः! त्वम् 'यज्ञं' इदं कर्म्म 'प्रसुव' अनुजानीहि; 'भगाय' कर्म्म-फल-भाजनाय 'यज्ञपतिं' यजमानं माम् 'प्रसुव' अनुजानीहि, अनुष्ठित-कर्म्म-फल-भाजं मां कुरुतेति यावत्। किञ्च, 'दिव्यः'

হে দ্যোতমান জগৎপ্রসবিতা দেবতা! তুমি এই কর্ম্ম অবগত হও এবং এই কর্ম্মের ফলভাগী করণার্থ আমাকে

---

१ — परमेष्ठि-प्रजापतिर्ऋषिः *। यजुः। सविता देवता।

* यावन्न भवति ऋष्यन्तरस्योपन्यासः, तावदेष एव ऋषिरित्यवं सर्वत्र। विनियोगस्तु वृत्तिकारवचनानुसारादवगन्तव्यः।

মু্ঙ্ সুরা তে অভবত্। পরমত্র জন্মাগ্নে তপসো নির্মি তোসি স্বাহা ॥২॥ ইমন্ত উপস্থং মধুনা সং্ সৃজামি

দ্যুলোকস্থঃ 'গন্ধর্ব্বঃ' গাং পৃথিবীং ধারয়তি যঃ সঃ 'কেতপূঃ' কেতং চিত্তং প্রজ্ঞানং তৎ পুনাতি সঃ 'নঃ' অস্মাকম্ 'কেতং' চিত্তম্ 'পুনাতু' নির্ম্মলীকরোতু । কিঞ্চ, 'বাচস্পতিঃ' বাচামধিপতিঃ 'নঃ' অস্মাকম্ 'বাচঃ' গিরঃ 'স্বদতু' আস্বাদয়তু ॥ ১ ॥

হে 'কাম'! 'তে' তব 'নাম' 'বেদ' জানাতি সর্ব্বং জগদিতি শেষঃ ; কিম্পুনস্তদিত্যাহ—'মদঃ' মদকরঃ 'নাম' প্রসিদ্ধঃ 'অসি' ভবসি ; 'তে' ত্বদর্থা ত্বদুৎপত্ত্যর্থা ইয়ং কন্যা 'সুরা'

কর্ম্ম-কর্ত্তা বলিয়া অবগত হও। চিত্ত-পবিত্র-কারী পৃথিবীর ধারয়িতা দেবতা, আমাদিগের চিত্তক্ষেত্র পবিত্র করুন। বাক্যের অধিষ্ঠাত্রী দেবতা, আমাদিগের বাক্যকে সুমধুর করুন ॥১

হে কাম দেবতা! তোমার নাম সকলই বিদিত আছে, তুমি মাদক বলিয়া প্রসিদ্ধ; তোমার উৎপত্তির আকর —সুরা-স্বরূপা এই কন্যাকে আত্ম-নিয়োগার্থ প্রাপ্ত হও (অর্থাৎ এই কন্যাতে আবির্ভূত হও)। হে কামাগ্নে! এই স্ত্রীজাতিতেই তোমার শ্রদ্ধেয় জন্ম, তুমি পুরুষার্থ-সিদ্ধির জন্যই সৃষ্ট হইয়াছ ॥২॥

---

২ – প্রস্তারপঙ্‌ক্তিশ্ছন্দঃ। কামো দেবতা।

प्रजापतेर्मुखमेतद् द्वितीयं तेन पुंसोऽभिभवासि सर्वा-
नवशान्वशिन्यसि राज्ञी स्वाहा ॥३॥ अग्निं क्रव्याद-
मकृण्वन्गुहानाः स्त्रीणामुपस्थमृषयः पुराणाः । तेना-

सुराभूता 'अभवत्' 'अमुं' कन्यकां 'समानय' स्वात्मानं प्रापय, इहोत्पद्यतामिति भावः। हे 'अग्ने' कामाग्ने! 'अत्र' स्त्री-जातिष्वेव तव 'परं जन्म' उत्कृष्टा जनिः, त्वं 'तपसः' पुरुषार्थस्य सिद्ध्यर्थं निर्म्मितः सृष्टः 'असि' भवसि। 'स्वाहा'-एष शब्दः प्रसिद्धार्थः ॥ २ ॥

हे 'कन्यके'! 'इमं' 'ते' तव 'उपस्थं' आनन्देन्द्रियं 'मधुना' 'संसृजामि' संयोजयामि; 'एतत्' 'प्रजापतेः' 'द्वितीयम्' अपरं 'मुखम्'; 'तेन' उपस्थ-प्रभावेण 'सर्व्वान्' 'अवशान् अपि' 'पुंसः' 'अभिभवासि' वशीकरोषि, 'वशिनी' कान्ति-मती 'राज्ञी' च स्वामिनी सर्व्वकामानाम् 'असि' भवसि ॥३॥

হে কন্যে! এই ত্বদীয় আনন্দেন্দ্রিয় মধু-ষিক্ত করি, ইহা প্রজাপতির একটি মুখ (অর্থাৎ প্রজোৎপত্তির দ্বার); এই ইন্দ্রিয়-প্রভাবেই অ-বশ পুরুষ সকলকেও বশীভূত করিয়া থাক এবং কান্তিমতী স্বরূপে সর্ব্বকামের অধিপতি হইয়াছ ॥ ৩

---

३ – मध्ये ज्योतिर्जगतीच्छन्दः। उपस्थरूपः कामी देवता।

ज्यमक्रण्वं स्त्रैष्टुङ्गं त्वाष्ट्रं त्वयि तद्दधातु स्वाहा ॥४॥
या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देव्यो अन्तान
भितो ततन्थ । ता स्त्वा देव्यो जरमा संव्ययन्त्वायुष्मती

'गृहानाः' तत्वदर्शिनः 'पुराणाः' पुरातनाः 'ऋषयः' 'स्त्रीणां' स्त्री-जातीनाम् 'उपस्थं' 'क्रव्यादम्' मांस-भक्षकम् 'अग्निम्' इति 'अकृण्वन्' स्वीकृतवन्तः । किञ्च, 'तेन' संयुतं 'त्रैस्तृङ्गं' त्रिस्तृङ्गं पुरुषमिस्नं तेन निर्वृत्तं 'त्वाष्ट्रं' त्वष्टा विश्व-कर्मा जगत्स्रष्टा तद्देवताकं शुक्रम् 'आज्यम्' इति 'अकृण्वन्' निर्णयं कृतवन्तः । हे कन्ये! 'तत्' शुक्रं 'त्वयि' 'दधातु' स्थापयतु कामी देवता पतिर्वेति शेषः ॥ ४ ॥

'याः' 'देव्यः' पण्ड्यः व्यवसायिन्य'स्त्रिय' इदं परिधेयं वस्त्रं 'अकृन्तन्' कर्त्तितवत्यः एतद्वस्त्र-निर्माणार्थं सूत्रं निर्मितवत्य इत्यर्थः, 'याः' 'अवयन्, उतवत्यः तन्तुसन्तानं कृतवत्यः,

তত্ত্বদর্শী, পুরাতন, ঋষিগণ স্ত্রীজাতির আনন্দেন্দ্রিয়কে মাংস-ভক্ষক অগ্নি বলিয়া স্বীকার করিয়াছেন এবং বিশ্ব-কর্ম্মা (সর্ব্ব-স্রষ্টা) দেবতার ইচ্ছায় তৎসংযোগে পুরুষে-ন্দ্রিয় হইতে প্রাদুর্ভূত শুক্রকে হোমীয় ঘৃত বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন। হে কন্যে! তোমাতে তাহা স্থাপিত হউক ॥ ৪ ॥

---

४ – उपरिष्टाज्ज्योतिरियं त्रिष्टुप् । उपस्थरूपः कामी देवता ।

दं परिधत्स्व वासः ॥५॥ परि धत्तधत्त वाससैनाᳪं शता-
युषोᳪं कृणुत दीर्घमायुः। शतं च जीव शरदः सुवर्च्चाव
सूनि चार्य्यै विभजासि जीवन् ॥६॥ सोमो ददद्गन्धर्वाय

'याः' 'अतन्वत' तनु विस्तारे विस्तारितवत्यः, 'याः च' अन्तान् पट-सन्नान् 'अभितः' उभयपार्श्वयोः 'अततन्थ' ग्रथितवत्यः, 'ताः देव्यः' हे कन्ये ! 'त्वां' 'जरसा' जरान्तं यावत् 'संव्ययन्तु' परिधापयन्तु। हे 'आयुष्मति !' दीर्घायुषि ! 'इदम्' प्रकृतं 'वासः' वसनम् 'परिधत्स्व' परिधानं कुरु ॥५॥

हे परिधापयितारः ! ऋत्विजादयः ! 'शतायुषीम्' शतव-र्षजीविनीम् 'एनां' कन्यकाम् 'वाससा' वस्त्रेण 'परि' सर्वतः 'धत्त धत्त' धारयतैव वेष्टनं कुरुतैव; किञ्च एतदीयम् 'आयुः'

যে দেবীরা এই বসনের সূত্র সকল প্রস্তুত করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহা বয়ন করিয়াছেন, যে দেবীরা ইহাকে এই আকারে বিস্তৃত করিয়াছেন, এবং যে দেবীরা ইহার উভয় পার্শ্বের ছিলা সকল গ্রথন করিয়াছেন হে কন্যে ! সেই দেবীরা তোমাকে জরাবস্থা পর্য্যন্ত সোৎসাহে বস্ত্র পরিধান করাইতে থাকুন ; হে আয়ুষ্মতি ! এই বস্ত্র পরিধান কর ॥৫

হে বস্ত্র-পরিধাপয়িতৃগণ ! তোমরা শতবর্ষজীবিনী এই কন্যাকে বসনে পরিবেষ্টিত কর এবং আশীর্ব্বাদন দ্বারা ইহার

५—जगतीच्छन्दः। वस्त्रकारादेवता। वस्त्रपरिधापने विनियोगः।

६—त्रिष्टुप्छन्दः। परिधापयितारो देवताः। उत्तरीय परिधापने विनियोगः।

गन्धर्वो ददद्‌ग्नये। रयिञ्च पुत्रां श्चादा दग्निर्मह्य मथो इमाम् ॥७॥ प्र मे पति या नः पन्थाः कल्पता

दीर्घं 'कृणुत' कुरुत। एवम् परिधापयितारोऽभिधाय अधुना तामेव साक्षादाशास्ते—हे 'आर्ये!' आर्यदेशोद्भवे! माननीये! वा, 'सुवर्च्चाः' तेजस्विनी सती 'शरदःशतं' शत-शरदृतु-परिमितं कालं 'जीव' 'च' अपिच 'जीवन्' जीवन्ती सती 'वसूनि' ऐश्वर्याणि 'विभजासि' भजस्व ॥६॥

'इमा'' कन्या' 'सोमः' सूयतइति सोमः स्रष्टृदेवता 'गन्धर्वाय' गां धारयति यः तस्मै पालकाय 'ददत्' अदात् समर्पयत; सच 'गन्धर्वः' अग्नये ददत्' अग्निसमीपमधुना समर्पयत्; 'अग्नि साक्षिरूपेण स्थितः 'मह्यं' परिणेत्रे 'अदात्;' 'अथो' अनन्तरं 'रयि'' धनं 'पुत्रान् च' अदादित्याशास्महे ॥७॥

পরমায়ু পরিবর্দ্ধিত কর। হে আর্য্যদেশোদ্ভবে! কন্যে! তুমি তেজস্বিনী হইয়া শত শরৎ (অর্থাৎ শতবর্ষ) জীবিত থাক এবং জীবিত থাকিয়া ঐশ্বর্য্যসকল ভোগ কর ॥৬

স্রষ্টা এই কন্যাকে পাতার হস্তে সমর্পণ করেন, পাতা এই অগ্নির নিকটে উপনীত করিয়াছেন, অগ্নি সাক্ষীরূপে উপস্থিত থাকিয়া ইহা আমাকে প্রদান করিলেন, ভরসা করি ধন পুত্রাদিও এই সমভিব্যারেই প্রদত্ত হইল ॥৭

७—अनुष्टुप्छन्दः। सोमादयो देवताः।

शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम् ॥८॥ अग्निरेतु प्रथमो देवताभ्यः सो स्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्यु-पाशात्। तदयं राजा वरुणोनु मन्यतां यथेयं स्त्री पौत्र मघन्नरोदात् स्वाहा ॥९॥ इमा मग्नि

'नः' अस्माकम् 'पतिः' पाता देवः 'मे' मदर्थं 'पन्थां' पन्थानम् 'प्र कल्पताम्' प्र करोतु; 'या' येन पथा, कीदृशेन ? 'शिवा' शिवेन कल्याणमयेन 'अरिष्टा' अरिष्टेन विघ्नशून्येन 'पतिलोकम्' पतिकूलं 'गमेयम्' गच्छेयम् अहमिति शेषः ॥८॥

'देवताभ्यः' देवतानां 'प्रथमः' मुख्यः 'अग्निः' 'एतु' आगच्छतु आगत्य च 'सः' 'अस्यै' अस्याः भाविनीं 'प्रजां' सन्तति-ततिं 'मृत्युपाशात्' अकाल-मरण-भयात् 'मुञ्चतु'; 'अयं' 'राजा' राजमानः वरुणः 'तत्' तथा अनुमन्यतां, यथा' 'इयं स्त्री' 'पौत्रम्' पुत्रसम्बन्धि 'अघम्' पाप-मूलकं शोकं प्राप्य 'न रोदात्' रोदनं न कुर्य्यात् ; नैव प्राप्नुयादिति यावत् ॥९॥

অমাদিগের পাতা, আমাদের জন্য সেই পথ কল্পিত করুন যে কল্যাণময় বিঘ্নশূন্য পথে পতি-কূল-কার্য্য-নির্ব্বাহ করিতে পারি ॥৮

দেব-শ্রেষ্ঠ অগ্নি আগমন করুন ; তিনি এই কন্যার ভবিষ্যৎ সন্ততিগুলিকে মৃত্যুভয় হইতে মুক্ত করুন; এই রাজমান রজনি দেবতা সেইরূপ অনুমতি করুন যাহাতে এই স্ত্রী পাপমূলক পুত্রশোক প্রাপ্ত হইয়া ক্রন্দন না করেন্ ॥৯

८—त्रिपाद् जगतीच्छन्दः । पतिर्देवता । पदप्रवर्त्तने विनियोगः ।

९—अतिजगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । आज्यहोमे विनियोगः ।

ত্রায়তাং গার্হপত্যঃ প্রজামস্যৈ জরদষ্টিং কৃণোতু। অশূ-ন্যোপস্থা জীবতা মস্তু মাতা পৌত্র মানন্দমভিবিবুধ্যতা মিয়ঙ্ স্বাহা॥১০॥দ্যৌস্তে পৃষ্ঠঙ্ রক্ষতু বায়ুরূরূ অশ্বিনৌ চ। স্তনন্ধয়স্তে পুত্রাঁত্ সবিতাভি রক্ষত্বা

'গার্হপত্যঃ' 'অগ্নিঃ' 'ইমাং' কন্যাং 'ত্রায়তাং' পালয়তু 'অস্যৈ' এতদর্থম্ 'জরদষ্টিং' জরান্বিতাং দীর্ঘায়ুষীম্ প্রজাং সন্ততি-ততিং 'কৃণোতু' বিদধাতু, কিঞ্চ 'ইয়ম্' 'জীবতাং' জীবত্পুত্রাণাং মাতা 'সতী' 'অশূন্যোপস্থা' অশূন্যাগারা অবিধবা 'অস্তু' অপিচ 'পৌত্রম্' আনন্দং সুপুত্র-সম্বন্ধিন মানন্দং 'বিবুধ্যতাম্' বিশেষেণ জানীয়াত্ ॥১০॥

হে 'কন্যে! 'তে' তব 'পৃষ্ঠং' পৃষ্ঠদেশং 'দ্যৌঃ' দ্যু-লোকো 'রক্ষতু'; 'ঊরূ' ঊরুদেশৌ 'বায়ুঃ' 'চ' অপিচ 'অশ্বিনৌ' দিবা-রাত্রৌ রক্ষতু; 'তে' তব 'স্তনন্ধয়ঃ' স্তনন্ধয়ান্ 'পুত্রান্ হৃদয়-রূপান্ 'সবিতা' 'অভিরক্ষতু'; 'আ বাসসঃ পরিধানাত্'

গার্হপত্য, এই কন্যাকে সতত রক্ষা করুন, ইহার জন্য ভাবি-জরাক্রান্ত (অর্থাৎ দীর্ঘজীবী) প্রজা বিধান করুন; এই কন্যা জীবিত পুত্রগণের মাতা হইয়া পতির সহিত বাস করুন এবং সৎপুত্রজনিত আনন্দ উপভোগ করুন ॥১০

হে কন্যে! দ্যুলোক তোমার পৃষ্ঠদেশ রক্ষা করুন, বায়ু এবং দিবস রজনি ঊরুদ্বয় রক্ষা করুন, তোমার স্তন্য-পায়ী

---

১০ — অতিজগতীচ্ছন্দঃ। অগ্নির্দেবতা। আজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।

वाससः परिधानाद् बृहस्पति र्विश्वेदेवा अभिरक्षन्तु पश्चात् स्वाहा॥११॥ मा ते गृहेषु निशि घोष उत्थादन्यत्र त्वद्रुदत्यः संविशन्तु॥ मा त्वꣳ रुदत्युर आवधिष्ठा जीवपत्नी पतिलोके विराज पश्यन्ती प्रजाꣳ सुमन-स्यमानाꣳ स्वाहा॥१२॥ अप्रजस्यं पौत्रमर्त्यं पाप्मान

वास-परिधानं यावत् प्रच्छन्नदेशं ‘बृहस्पतिः’ अभिरक्षतु; ‘पश्चात्’ ततोऽधस्तनस्थानानि पादाग्रादीनि, उर्द्धभागउपरितन-स्थानानि ग्रीवादीनि च ‘विश्वेदेवाः’ ‘अभिरक्षन्तु’ ॥११॥

हे ‘कन्ये! ‘ते’ तव ‘गृहेषु’ ‘निशि’ रात्रौ ‘घोषः’ आर्त्त-शब्दः ‘मा उत्थात्’ न उत्तिष्ठेत्; किन्तु ‘त्वत्’ त्वत्तः ‘अन्यत्र’ शत्रुगृहादौ ‘रुदत्यः’ स्त्रियः ‘प्रविशन्तु,’ ‘त्वं’ ‘रुदत्’ रुदती

হৃদয় স্বরূপ পুত্রদিগকে সবিতা রক্ষা করুন, পরিধেয় বস্ত্রে যাবৎ আবৃত থাকে তৎসমস্ত অঙ্গ বৃহস্পতি রক্ষা করুন, এতদ্ব্যতিরিক্ত (পাদাগ্রপ্রভৃতি ও গ্রাবা-প্রভৃতি) বিশ্বেদেবা দেবতারা রক্ষা করুন !১১

হে কন্যে ! তোমার গৃহে কদাপি নিশাভাগে আর্ত্তনাদ উত্থিত না হউক ! তোমার শত্রু-গৃহাদিতে স্ত্রীগণ ক্রন্দন করিতে করিতে প্রবিষ্ট হউক ! রোদন করিতে করিতে অন্তঃ-

---

११ – शक्करीच्छन्दः। विश्वेदेवा देवताः। आज्यहोमे विनियोगः।

१२ – अतिजगतीच्छन्दः। अग्न्यादयो देवताः। आज्यहोमे विनियोगः।

मुत वा अघम्॥ शीर्ष्णः स्रजमिवोन्मुच्य द्विष-द्भ्यः प्रति मुञ्चामि पाशं स्वाहा ॥१३॥परैतु मृत्युर मृतं म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु॥ परं मृत्यो

सती 'पुरः' अन्तःपुरे 'मा' 'आवधिष्ठाः' न कदाचिदपि परि-जनान् घातयेः ; किन्तु 'जीवपत्नी' जीवत्पतिका सती 'सुमन-स्यमानां' हृष्टचित्तां 'प्रजां' 'पश्यन्ती' वीक्षमाणा 'पतिलोके' पतिगृहे 'विराज' शोभस्व ॥१२॥

हे कन्ये ! 'अप्रजस्यम्' बन्ध्यात्वं 'पौत्रमर्त्यम्' पुत्र-सम्बन्धि-मरणं 'पाशम्' मृत्योः पाशरूपम् 'पाप्मानम्' 'उत वा' अन्यदपि 'अघम्' अरिष्टं त्वयि यद् स्थितं तत् सर्वं 'शीर्ष्णः' मस्तकात् 'स्रजम् इव' मालामिव त्वत्तः 'उन्मुच्य'अवतार्य्य द्विष-द्भ्यः द्वेष्टृभ्यः 'प्रति मुञ्चामि' प्रतिक्षिपामि ॥१३॥

পুর বাসী-দিগকে তোমায় পীড়িত করিতে না হয় ! স-ধবা থাকিয়া হৃষ্টচিত্তে পুত্রাদি লইয়া আমোদ প্রমোদ করত পতি-গৃহে সুখে বাস কর ॥১২

হে কন্যে ! বন্ধ্যাত্ব, পুত্র-শোক প্রভৃতি মৃত্যুর পাশ স্বরূপ যে সকল পাপ ও অরিষ্ট তোমাতে আছে, তৎসমস্তই তোমার মস্তক মইতে মালা-উন্মোচনের ন্যায় উন্মুক্ত করিয়া শত্রুবর্গের প্রতি নিঃক্ষিপ্ত করিতেছি ॥১৩

---

१३ – उपरिष्टाद्बृहतीच्छन्दः । अग्न्यादयो देवताः । आज्यहोमे विनियोगः ।

अनु परेहि पन्थां यत्र नो अन्य इतरो देवयानात्॥चक्षु-ष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषोमोत वी-रान् स्वाहा ॥१४॥

'मृत्युः' 'परैतु' पराङ्मुखो गच्छतु 'मे' मम 'अमृतम्' अमरणम् 'आगात्' आगच्छतु नाहं म्रिये! इति भावः, 'वैवस्वतः' 'नः' 'अस्माकम् 'अभयं' 'कृणोतु' करोतु। 'मृत्यो!' 'यत्र' 'नः' अस्माकम् 'अन्यः' सदृशम् मर्त्यभूमि-कृत-वासः जीवः अस्ति—यः 'देवयानात्' देवमार्गात् 'अन्यः', तम् 'परं' परलो-कीयं 'पन्थां' पन्थानम् 'अनु' संलक्ष्य 'परेहि' पराङ्मुखो गच्छ। 'चक्षुष्मते' पश्यतः 'शृण्वते' दर्शतः 'ते' तव सन्निधौ 'ब्रवीमि' प्रार्थयामि—'नः' अस्माकं 'प्रजां' परिवारं' 'उत' अपिच (विशेषेण) 'वीरान्' पुत्रान् 'मा' रीरिषः' मा हिंसीः ॥१४॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य

प्रथमः खण्डः ॥१॥

—०—

মৃত্যু পরাঙ্‌মুখ হইয়া গমন করুন, অমর ভাব আমার নিকটে আসিয়া উপস্থিত হউক; বৈবস্বত আমাদিগের অভয় বিধান করুন। হে মৃত্যো! যে স্থলে আমাদিগের ন্যায় মর্ত্ত্য জীব সকল আছে—যাহা দেবগণের গমনীয় নহে, সেই (প্রেতলোকের) পথ লক্ষ্য করত পরাঙ্‌মুখ হইয়া গমন কর। উৎকৃষ্ট দর্শনবান্—উৎকৃষ্ট শ্রুতিমান্ তোমার নিকটে প্রার্থনা করি—আমার পরিবার বর্গকে বিশেষত পুত্রদিগকে নষ্ট করিও না ॥১৪

१४—मन्त्र, त्रिष्टुप्छन्दः। वैवस्वतो देवता। आज्यहोमे विनियोगः।

দ্বিতীয়-খণ্ডঃ—

ইম মশ্মান মারোহা শ্মেব ত্বꣳ স্থিরা ভব ॥ দ্বিষ ন্ত মপ বাধস্ব মা চ ত্বং দ্বিষতা মধঃ॥১॥ ইয়ং নার্যু- পব্রূতে গ্নৌ লাজানাবপন্তী। দীর্ঘায়ু রস্তু মে পতিঃ

হে কন্যে ! 'ইমম্' প্রত্যক্ষম্ 'অশ্মানম্' শিলাখণ্ডম্ 'আরোহাঃ' আক্রম। তথাচ 'ত্বম্''অশ্মা ইব'পাষাণইব 'স্থিরা' অচলা 'ভব' ; অস্মিন্নেব পতি-কুলে জীবনং যাপয়েত্যর্থঃ। কিঞ্চ কন্যে ! 'দ্বিষন্তম্' শত্রুকুলম্ 'অপবাধস্ব' পীড়য়, 'চ' 'অপিচ' 'ত্ব'' 'দ্বিষতাং' তেষাম্ 'অধঃ' অধস্তাৎ অবরভাবেন 'মা' অভূঃ ; ত্বদীয়াগমনেনাত্র কুলে মঙ্গলং—শত্রু-কুলে অমঙ্গলঞ্চ ভবত্বিত্যাশয়ঃ ॥ ১ ॥

'ইয়ং নারী' 'লাজান্' ভ্রষ্টব্রীহীন্ 'আবপন্তী' প্রক্ষিপন্তী সতী 'উপ' অস্মৎ-সমীপে 'ব্রূতে' কথয়তি ; কিমিত্যাহ—'মে' মম 'পতিঃ, 'দীর্ঘায়ুঃ' দীর্ঘজীবী 'অস্তু' 'শতং বর্ষাণি জীবতু' ইতি ; কিঞ্চ 'মম' জ্ঞাতয়ঃ 'এধন্তাম্' পরিবর্দ্ধন্তাম্ ॥ ২ ॥

কন্যে ! এই শিলাখণ্ডে আরোহণ কর, তুমি এই প্রস্তরবৎ দৃঢ় রূপে অবিচলভাবে পতি-গৃহে বাস কর। কন্যে ! শত্রু-কুল নষ্ট কর এবং শত্রুদিগের নিকটে কখন অপদস্থ হইও না। অর্থাৎ তোমার আগমনে রিপুগণ নিস্তেজ হউক ॥১

এই নারী লাজাগুলি বিক্ষিপ্ত করত ক্রমে আমাদের নিকটস্থ হইয়া বলিতেছেন—যে, "আমার পতি দীর্ঘজীবী

১ – অনুষ্টুব্ ছন্দঃ। অশ্মা দেবতা। অশ্মাক্রমণে বিনিয়োগঃ।

शतं वर्षाणि जीवत्वेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा ॥२॥ अर्यमणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमान्देवो अर्य्यमा प्रेतो मुञ्चातु मा मुत स्वाहा ॥३॥ पूषणं नु देवं कन्या अग्नि मयक्षत ॥ स इमां देवः पूषा प्रेतो

'उत' अपिच, इयं 'कन्या' 'अर्य्यमणम्' अर्य्यमाख्यम् 'अग्निम्' 'देवं' 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' उद्दिश्य 'प्रमुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु मह्यं ददातु इत्यर्थः ॥ ३ ॥

'उत' अपिच इयं 'कन्या' 'पूषणं' पूष-नामकम् 'अग्निम्' 'देवं' 'नु' निश्चयम् 'अयक्षत' पूजितवती ; 'सः' पूजितोऽग्निः 'इमां' कन्यकाम् 'इतः' पितृकुलात् 'माम्' 'प्रमुञ्चातु' प्रकर्षेण स्थिरतया मुञ्चतु ॥ ४ ॥

হউন, শতবর্ষ পরমায়ু লাভ করুন এবং আমার দেবর প্রভৃতি জ্ঞাতিরা পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুন" ॥২

এবং এই কন্যা অর্য্যমা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি, এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়াছেন ॥৩

এবং এই কন্যা পূষা নামক অগ্নিদেবতাকে নিশ্চয় অর্চ্চনা

२ – उपरिष्टाज्जगतीच्छन्दः । अग्निर्देवता । लाज*होमे विनियोगः ।

* लाजा भृष्टव्रीहयः ।

३—उपरिष्टाद् बृहतीच्छन्दः । अर्य्यमा देवता । लाजहोमे विनियोगः ।

मुञ्चातु मामुत स्वाहा ॥४॥ कन्यला पितृभ्यः पतिलोकं पतीयमप दीक्षामयष्ट॥ कन्या उत त्वया वयं धारा-उदन्या इवाति गाहेमहि द्विषः ॥५॥ एकमिषे विष्णु-स्त्वानयतु ॥ द्वे ऊर्ज्जे विष्णुस्त्वा नयतु ॥ त्रीणि व्रताय

'कन्यला' कन्या 'पितृभ्यः' पितृ-मातृ-भ्रातृ-प्रभृतिभ्यः 'अप' तान् परित्यज्य 'पतिलोकं' पतिगृहम् आगत्य 'पतीयं' पति-सम्बन्धिनीं 'दीक्षाम्' 'अयष्ट' इष्टवती। 'उत' अपिच 'कन्या' 'त्वया' सह एकत्रीभूताः 'उदन्या धाराः' उदकधाराः 'इव' बलवन्तो वेगवन्तो परस्पर-भेद-शून्यास्तादात्म्य-भावाश्च वयं 'द्विषः' द्विष्टॄन् 'अति गाहेमहि' अतिक्रान्त्य विलोड़यामः उद्वे-जयामः ॥ ५ ॥

हे कन्ये! 'विष्णुः' व्यापको देवः 'त्वाम्' 'एकं' पदं 'इषे' अन्नलाभाय 'नयतु' प्रापयतु। 'विष्णुः' 'त्वां' 'द्वे' पदे 'ऊर्जे'

করিয়াছিল ; সেই অর্চ্চিত অগ্নি এই কন্যাকে, এই পিতৃকুল হইতে বিভিন্ন করিয়া আমাকে স্থিররূপে সমর্পন করিয়াছেন ॥৪

কন্যা, পিতা মাতা ভ্রাতা প্রভৃতিকে ত্যাগ করিয়া পতিগৃহে আগমন করত পতি-সম্বন্ধী উপদেশ গ্রহণ করিতেছে, এবং কন্যে ! আমরা তোমার সহিত একত্র হইয়া জলধারাসমূহের ন্যায় বলবান্, বেগবান্ ও পরস্পর অভিন্নভাবে স্থিত হইয়া দ্বেষ্টৃগণকে উদ্বিগ্ন করি ॥৫

४—उपरिष्टाद्‌ बृहतीच्छन्दः। पूषा देवता। लाजहोमे विनियोगः।

५—त्रिष्टुप्छन्दः। कन्या देवता। लाजहोमे विनियोगः।

विष्णुस्त्वा यतु ॥ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु॥ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु ॥ षड्रायस्पोषाय विष्णु-स्त्वा नयतु॥ सप्त सप्तभ्यो होत्राभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु॥६॥ सखा सप्तपदी भव सख्यं ते गमेयꣳ सख्यं ते मायोषाः सख्यं ते मायोष्टाः ॥७॥ सुमङ्गली रियं वधू रिमाꣳ

बललाभाय 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'त्रीणि' पदानि 'व्रताय' पञ्च-महायज्ञान्तर्गत-बलि-कर्म्मणे 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'चत्वारि' पदानि 'मायोभवाय' सौख्ये 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'पञ्च' पदानि 'रायस्पोषाय' धनस्य पोषणाय 'नयतु'। 'विष्णुः' 'त्वाम्' 'सप्त' पदानि 'सप्तभ्यः होत्राभ्यः' यज्ञीय-सप्त-र्त्त्विक्प्राप्तये 'नयतु' ॥ ६ ॥

'सप्तपदी' सप्तपदाक्रान्ता त्वं कन्या 'सखा' मम सहचा-रिणी 'भव'; अहञ्च 'ते' तव 'सख्यं' 'गमेयम्' उपभुञ्जेयम्।

হে কন্যে! এই সর্ব্বব্যাপী দেবতা অন্নলাভের জন্য এক পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন। বললাভের জন্য দ্বিতীয়। নিত্য কার্য্য পঞ্চ মহাযজ্ঞাদি সিদ্ধির জন্য তৃতীয়। সৌখ্যের জন্য চতুর্থ। পশুলাভের জন্য পঞ্চম। ধনরক্ষার জন্য ষষ্ঠ। সপ্ত ঋত্বিক্ লাভের জন্য অর্থাৎ সম্পত্যাদি হইলে কোন প্রশস্ত কাম্য যাগাদি কার্য্য করিবার জন্য ঋত্বিক্ আবশ্যক হইয়া থাকে, সেই অবস্থা সিদ্ধির জন্য, সপ্তম পদ অতিক্রমণ করাইতেছেন ॥৬

६—विराट्छन्दः। विष्णुर्देवता। पदाक्रमणे विनियोगः।

७—नामकी पङ्क्तिश्छन्दः। आशास्यमाना देवता। आशासने विनियोगः।

समेत पश्यत ॥ सौभाग्य मस्यै दत्वा याथास्तं विपरेतन ॥८॥ समञ्जन्तु विश्वे देवाः समापो हृदयानि नौ ॥

'ते' तव मया सह 'सख्य' 'योषाः' स्त्रियः विद्विषिकाः समस्ताः 'मा' विच्छिन्दन्तु इति शेषः । अपितु 'मायोष्ठाः' अस्मत्सुखहितैषिण्यः स्त्रियः 'ते' तव तत् सख्यं मया सह सखित्वं वर्द्धयन्त्विति शेषः ॥७॥

हे ईक्षकाः ! यूयं 'समेत' एकत्रीभूत्वा आगच्छत, एत्य च 'इयं' परिणीता 'वधूः' 'सुमङ्गलीः' कल्याणी इति मत्वा 'इमां' 'पश्यत !' किन्तु 'अस्यै' 'सौभाग्य' दत्वा (आशीर्भिरितियावत्) 'अस्तं' गृहं 'विपरेतन याथाः' प्रत्यावृत्तं गच्छत ॥ ८ ॥

'विश्वेदेवाः' हूयमानाः दीप्यमानाः समस्ताः पदार्थ-जाताः 'नौ' आवयोः 'हृदयानि' 'समञ्जन्तु' शोधयन्तु । 'आपः'

এই একত্র সপ্তপদগমনা কন্যা, তুমি চিরদিনের জন্য আমার সহচারিণী হও ! আমি ত্বদীয় সখ্য ভোগ করি ! তোমার সহিত সুদৃঢ় সংস্থাপিত এই সখ্য (ঘরভাঙানি) বিচ্ছেদকারিণী স্ত্রীগণে বিচ্ছিন্ন করিতে না পারে ! বরং অস্মদাদির হিতৈষিণা ভদ্রা স্ত্রীরা এই অভিনব সঞ্জাত সখ্য সদুপদেশ প্রদানাদি দ্বারা ক্রমে পরিবর্দ্ধিত করিতে থাকুন ॥৭

হে পরিদর্শকগণ ! তোমরা একত্র হইয়া এই অগ্নিসমীপে আগমন কর, অনন্তর এই পরিণীতা বধূকে কল্যাণকারিণী বিবেচনায় দর্শন কর এবং ইহাকে আশীর্ব্বাদ-বলে সৌভাগ্য প্রদান করত নিজ নিজ নিকেতনে প্রতি গমন কর ॥৮

८—अनुष्टुप्छन्दः । आशास्यमाना देवता । दर्शक-प्रतिमन्त्रणे विनियोगः ।

सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु नौ ॥৯॥ गृभ्णा-मि ते सौभगत्वाय हस्तं मया पत्या जरदष्टि र्यथासः ॥ भगो अर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वा दुर्गार्हपत्याय देवाः ॥১০॥ अघोरचक्षु रपतिघ्न्येधि शिवा पशुभ्यः

जलदेवताः 'सम्' अञ्जन्तु-इति कर्षणीयः। 'मातरिश्वा' वायुः 'सम्' अञ्जन्तु। 'धाता' प्रजापतिः 'सम्' अञ्जन्तु। किञ्च 'उ-देष्ट्री' देवी 'नौ' आवयोः हृदयानि 'संदधातु' एकीकुर्व्वन्तु ॥৯॥

हे कन्ये ! 'पुरन्धिः' पुर-रक्षकरूपः 'भगः' 'अर्य्यमा' 'सविता' च नामभेदेन विभिन्ना एते 'देवाः' 'त्वा' त्वां 'गार्हपत्याय' गार्हस्थ्य-कार्य्य-निर्व्वाहाय 'मह्यम्' 'अदुः'। ततश्च 'मया पत्या' 'जरदष्टिः' जरान्तं यावत् 'यथा असः' यथा भवसि तथा 'सौ-भगत्वाय' सौख्याय 'ते' तव 'हस्तं' पाणिम् 'गृभ्णामि' गृह्णामि ॥১০॥

এই সমস্ত দেদীপ্যমান পদার্থসকল আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, জলদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, অন্তরীক্ষচারী বায়ুদেবতা আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন, প্রজাপতি (আকাশ) আমাদের উভয়ের হৃদয় পবিত্র করুন। সদুপদেশকারিণী ভদ্র মহিলাগণ আমাদের উভয়ের হৃদয়-দ্বয়ের ঐক্য সম্পাদন করুন ॥৯

হে কন্যে! অর্য্যমা, ভগ, সবিতা প্রভৃতি নাম ভেদে বিভিন্ন পুর-রক্ষক এই সূর্য্য দেবতা এই উদ্বাহ কার্য্যে সাক্ষী রূপে

৯—अनुष्टुब्छन्दः। विश्वेदेवाद्या देवताः। मूर्द्धाभिषेचने विनियोगः।

सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्ज्जीवसू र्देवकामा स्योना शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥११॥ आ नः प्रजां जनयतु प्रजापति राजरसाय समनक्त्वर्य्यमा॥ अदुर्म्मङ्गलीः

हे कन्ये! त्वम् 'अघोरचक्षुः' अक्रूरदृष्टिः 'अपतिघ्नी' अविधवा, 'पशुभ्यः शिवा' गो-वत्सादि-पालन-कारिणी, 'सुमनाः' सहृदया, 'सुवर्चाः' तेजस्विनी, 'वीरसूः' पुत्रप्रसूतिः, 'जीवसूः' जीवत्पुत्रा 'देवकामा' पञ्चयज्ञानुकूला 'स्योना' सुखकरी किं बहुना—'नः' अस्माकं सर्व्वथैव 'शं' कल्याणकरी 'एधि' भव। किन्तु अन्यस्मिन्नपि द्विपदे 'च' अपिच 'चतुष्पदे' प्राणिजातौ 'शं' कल्याणकरी 'भव' ॥११॥

हे कन्ये! 'प्रजापतिः' 'नः' अस्माकं 'प्रजां' पुत्रपौत्रादिकम् 'आ' आभिमुख्येन 'जनयन्त'। 'अर्य्यमाः' सः तान् 'समनक्तु' অবস্থিত থাকিয়া তোমাকে গার্হস্থ্য কার্য্য সম্পাদানার্থ আমায় সমর্পন করিয়াছেন, আমিও পালনকারী হইয়া জরাবস্থা পর্য্যন্ত যতদিন তুমি জীবিতা থাকিবে তাবৎ কালের জন্য সুখ-ভোগাশয়ে তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ॥১০

হে কন্যে! তুমি মন্দেক্ষণা ও পতিঘাতিনী না হইয়া-গো-বৎসাদির পালন কারিণী, সহৃদয়া, তেজস্বিনী, জীবৎ-সন্ততি, পঞ্চযজ্ঞান্তর্গত বলি কার্য্য-পরায়ণা, সুখকরী—অধিক কি, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের বংশের কল্যাণ-সাধিনী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চতুষ্পদ প্রাণীদের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১১

---

१० — त्रिष्टुप्छन्दः। भगादयो देवताः। पाणिग्रहणे विनियोगः।

११ — त्रिष्टुप्छन्दः। कन्या देवता। आशासने विनियोगः।

पतिलोक माविश शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१२॥ इमां त्व मिंद्र मीढ्वः सुपुत्राꣳ सुभगांकृधि ॥ दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कुरु ॥१३॥ सम्राज्ञी श्वशुरे

रूपगुणादिभिर्व्यञ्जयन्तु । 'मङ्गलीः' मङ्गलाकारिण्यो देवताः त्वां मह्यम् 'अदुः' दत्तवन्तः, अतस्त्वं 'पतिलोकम्' 'आविश' । एवं सर्व्वथैव 'नः' अस्माकं 'शं' कल्याणी 'च' अपिच अन्यस्मिन्नपि 'द्वि-पदे' 'चतुष्पदे' प्राणिजातौ 'शं' कल्याणी भव ॥ १२ ॥

हे 'इन्द्र!' ऐश्वर्य्यमान् देव 'मीढ्वः' द्युलोकस्थ सेक्ता तर्पयिता 'त्वम्' 'इमां' कन्यां 'सुपुत्रां' सत्पुत्रवतीं 'सुभगां' सौभाग्यशा-लिनीं 'कृधि' कुरु । किञ्च 'अस्यां' कन्यायां 'दश पुत्रान्' 'आधेहि' आधानं कुरु अपिच अस्याः 'पतिम्' भर्त्तारं तैः सह सङ्कलनया 'एकादशं' 'कुरु' ॥१३॥

হে কন্যে ! প্রজাপতি আমাদের পুত্র পৌত্রাদি প্রদান করুন, অর্য্যমা তাহাদিগকে রূপগুণাদিতে প্রসিদ্ধ করুন। মঙ্গল-কারিণী দেবীরা তোমাকে আমায় সমর্পন করিয়াছেন অতএব তুমি পতিগৃহে প্রবেশ কতিছ, সর্ব্বপ্রকারে আমাদের কল্যাণ-কারিণী হও এবং অস্মৎসম্বন্ধী অন্যান্য দ্বিপদ, চতু-ষ্পদ প্রাণিগণের পক্ষেও কল্যাণরূপিণী হও ॥১২

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্ ! দেব ! তুমি এই কন্যাকে সৎপুত্র-জননি, সৌভাগ্যশালিনী কর এবং কন্যার দশটি গর্ভ পালন কর, ঐ দেশের সহিত পতিকে সঙ্কলন করিলে ইহার একাদশ জনা রক্ষক হইতে পারিবে! ॥১৩

१२—जगतीच्छन्दः । प्रजापतिर्द्दैवता । आशासने विनियोगः ।

१३—अनुष्टुप्छन्दः । इन्द्रो देवता । आशीः-प्रार्थने विनियोगः ।

भव संम्राज्ञी श्वश्र्वां भव ॥ ननान्दरि संम्राज्ञी भव संम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥१४॥ मम व्रते ते हृदयं दधातु मम चित्त मनुचित्तन्ते अस्तु ॥ मम वाच मेकमना जुषस्व बृहस्पति स्त्वा नियुनक्तु मह्यम् ॥१५ ॥

कन्ये ! त्वं 'श्वशुरे' श्वशुर-मनोरञ्जने 'संम्राज्ञी प्रधाना' 'भव'। 'श्वश्र्वां' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'ननान्दरि' 'सम्राज्ञी' 'भव'। 'देवृषु' देवरेषु 'अधि' अधिकृत्य 'सम्राज्ञी' भवेति अनुकर्षणीयः ॥१४॥

कन्ये ! 'ते' तव 'हृदयं' 'ममव्रते' मदीय-कर्मणि 'दधातु' धेहि धारय। 'ते' 'चित्तं' 'मम' 'अनुचित्तम्' 'अस्तु'। त्वम् 'एक-मनाः' सती मम' वाचम्' जुषस्व' सेवस्व। 'बृहस्पतिः' जगत्पतिर्देवः त्वां 'मह्यं' 'नियुनक्तु' मां प्रसादयितुं मनोर-ञ्जिनीं करोतु ॥१५॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथम-प्रपाठकस्य द्वितीयःखण्डः ॥२॥

হে কন্যে ! তুমি শ্বশুর, শশ্রু, ননন্দা, দেবর প্রভৃতি তাবৎ পরিজনের উপরেই আধিপত্য করিতে সক্ষমা হও ॥১৪

হে কন্যে ! তোমার হৃদয় আমার কার্য্যে নিযুক্ত কর, তোমার চিত্ত আমার চিত্তের অনুগামী হউক, তুমি একমনা হইয়া আমার আজ্ঞা প্রতিপালন কর। এই বৃহৎ জগতের পালয়িতা দেবতা তোমাকে আমার মনোরঞ্জনে নিযুক্ত করিতেছেন ! ॥১৫

१४—अनुष्टुप्छन्दः। कन्या देवता। सम्राज्ञीकरणे विनियोगः।

१५—त्रिष्टुप्छन्दः। प्रार्थ्यमान देवता। एकीभाव-प्रार्थने विनियोगः।

অথঃ তৃতীয় খণ্ডঃ—

লেখা সন্ধিষু পক্ষ্মস্বাবর্ত্তেষু চ যানি তে॥ তানি তে পূর্ণাহুত্যা সর্ব্বাণি শময়াম্যহম্॥ ১ ॥ কেশেষু যচ্চ পাপক মীক্ষিতে রুদিতে চ যৎ॥ তানি তে পূর্ণাহুত্যা সর্ব্বাণি শময়াম্যহম্॥২॥ শীলেষু যচ্চ পাপকং ভাষিতে

হে কন্যে! 'তে' তব 'লেখা-সন্ধিষু' লেখানাং রেখানাং সন্ধয়ো যত্র তাদৃশেষু মূর্দ্ধ-প্রদেশেষু, কিঞ্চ 'পক্ষ্মসু' চক্ষুর্লোমসু 'চ' অপিচ 'আবর্ত্তেষু' নাভিরন্ধ্রাদিষু 'যানি' অপচিহ্নানি (সন্তীতি শেষঃ)—অহং পাণিগ্রহঃ 'তানি সর্ব্বাণি' 'পূর্ণাহুত্যা' অনয়া শেষাহুত্যা 'সময়ামি' উপশমিতানি করোমি ॥ ১ ॥

হে কন্যে! 'যচ্চ' 'পাপকং' পাপং অশুভকারং 'তে' তব 'কেশেষু (অস্তীতি শেষঃ) 'চ' অপিচ 'ঈক্ষিতে দর্শন-ক্রিয়ায়াং 'রুদিতে' চলিতে গমন ক্রিয়ায়াং 'যৎ' অস্তি—'অহং' ইত্যাদি ॥২॥

হে কন্যে! তোমার শরীরস্থ রন্ধ্রগত রেখা সমস্তের সন্ধি সকলে, চক্ষুরিন্দ্রিয়ের পরিরক্ষক পক্ষ্মসকলে, এবং নাভি কূপাদি প্রদেশে যে সকল অমঙ্গল চিহ্ন আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥ ১

হে কন্যে! তোমার কেশ সমস্তে যে পাপ আছে এবং তোমার ঈক্ষণে, চলনে, যাহা কিছু পাপ আছে— আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥২

১—লিখিল্যাদীনাং ষণ্ণাম্—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। অভিধীয়মানা দেবতা।
পাণি-গ্রহস্যাজ্যহোমে বিনিয়োগঃ।

হসিতে চ যত্॥ তানি তে পূর্ণাহুত্যা সর্বাণি শময়াম্যহম্॥৩॥ আরোকেষু চ দন্তেষু হস্তয়োঃ পাদয়োশ্চ যত্॥ তানি তে পূর্ণাহুত্যা সর্বাণি শময়াম্যহম্॥৪॥ ঊর্বোরুপস্থে জঙ্ঘয়োঃ সন্ধানেষু চ যানি তে॥ তানি তে পূর্ণাহুত্যা সর্বাণি শময়াম্যহম্॥৫॥যানি কানি চ ঘোরা-

হে কন্যে! 'তে' তব 'শীলেষু' ব্যবহারেষু 'যত্' 'পাপকং' যচ্চ 'ভাষিতে' কথন-ক্রিয়ায়াং 'চ' অপিচ 'হসিতে' হসন-ক্রিয়ায়াং পাপকম্ অস্তি—'অহং' ইত্যাদি ॥ ৩ ॥

হে কন্যে! 'তে' তব 'আরোকেষু' দন্তান্তরেষু (মেড়ে ইতি প্রসিদ্ধেষু) 'চ' অপিচ 'দন্তেষু', 'হস্তয়োঃ', 'পাদয়োঃ' 'যচ্চ' পাপকম্ অস্তি—'অহং' ইত্যাদি ॥ ৪ ॥

হে কন্যে! 'তে' তব 'ঊর্বোঃ' ঊরু-দ্বয়য়োঃ 'উপস্থে' গোপনীয়ে ইন্দ্রিয়ে 'জঙ্ঘয়োঃ' 'চ' অপিচ 'সন্ধানেষু' অন্যান্য-প্রদেশেষু 'যত্' পাপকং অস্তি—'অহং' ইত্যাদি ॥ ৫ ॥

কন্যে! তোমার ব্যবহারে যে পাপ আছে, এবং তোমার কথনে, হসনে, যে পাপ প্রকাশ পায়—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৩

হে কন্যে ? তোমার দন্তের মেড়েগুলিতে এবং দন্তসকলে, হস্তদ্বয়ে, ও পাদদ্বয়ে যে পাপ আছে— আমি এই শেষ অহুতিদ্বারা তৎ সমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৪

হে কন্যে ! তোমার উরূদ্বয়ে, উপস্থেন্দ্রিয়ে, জঙ্ঘাদ্বয়ে এবং অন্যান্য সন্ধি প্রদেশে যে পাপ আছে—আমি এই শেষ আহুতি দ্বারা তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৫

णि सर्वाङ्गेषु तवाभवन् । पूर्णाहुतिभि राज्यस्य सर्वाणि तान्यशीशमम् ॥६॥ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्व मिदं जगत् ॥ ध्रुवासः पर्वता इमे ध्रुवा स्त्री पति-कुले इयम् ॥ ७ ॥ अन्नपाशेन मणिना प्राण-सूत्रेण

'च' अपिच हे कन्ये ! 'तव' सर्वाङ्गेषु' समस्त-शरीरांशेषु 'यानि कानि' 'घोराणि' पापानि 'अभवन्'—'अहं' 'तानि सर्व्वाणि' 'आजास्य' घृतस्य 'आहुतिभिः' 'अशीशमम्' शमित-वानिव ॥ ६ ॥

हे प्रार्थ्यमान-देव ! यथा इयं 'द्यौः' 'ध्रुवा' स्थिरा, इयं 'पृथिवी' 'ध्रुवा', 'इदं' दृश्यमानं विश्वम् सर्व्वं जगत् चरा-चरं समस्तं 'ध्रुवम्', 'इमे' दृश्यमानाः पर्व्वताः गिरयश्च 'ध्रुवासः' ध्रुवाः स्थिराः, 'इयं' 'स्त्री' 'पतिकुले' अत्र पतिगृहे, तथैव 'ध्रुवा' भवत्विति शेषः ॥ ७ ॥

এবং হে কন্যে! তোমার সর্ব্বাঙ্গে যেসকল ঘোরতর পাপ হইয়াছে—আমি এই ঘৃতের পূর্ণাহুতি প্রদানে তৎসমস্তই উপশমিত করিতেছি ॥৬

হে প্রার্থ্যমান দেব! যেমন এই দ্যুলোক চিরস্থায়ী, এই পৃথিবী চিরস্থায়িনী, এই পরিদৃশ্যমান সমস্ত চরাচর চিরস্থায়ী, এই অচলরাজিও চিরস্থায়ী—এই স্ত্রীও, এই পতিগৃহে সেই-রূপ চিরস্থায়িনী হউক ॥৭

৩—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। অভিধীয়মানা দেবতা। অনুমন্ত্রণে বিনিয়োগঃ।

ণিনা॥ বধ্নামি সত্যগ্রন্থিনা মনশ্চ হৃদয়ঞ্চ তে॥৮॥ যদেতদ্ধৃদয়ং তব তদস্তু হৃদয়ং মম॥ যদিদং হৃদয়ং মম তদস্তু হৃদয়ং তব॥ ৯॥ অন্নং প্রাণস্য পড্বিং

হে বধু! 'তে' তব 'মনঃ' চিত্তং 'চ' অপিচ 'হৃদয়ং' ভাবং 'বধ্নামি' বন্ধনং করোমি স্ববশং নয়ামীত্যর্থঃ। কথম্? ইত্যাহ— 'মণিনা' মণিতুল্যেন, রত্ন-সদৃশেন 'প্রাণ-সূত্রেণ' অপিচ 'সত্য-গ্রন্থিনা' সত্যরূপ-গ্রন্থিনা। অয়ং ভাবঃ—তুভ্যং মণিময়ং যদিদং অন্নম্ দদামি তব হৃদয়স্য মনসশ্চ বন্ধনায় তৎ পাশরূপং ভবতি, যদিদং রত্নতুল্যং মদীয়ং প্রাণসত্ত্বং তৎ সমস্তমেব তুভ্যং মুৎসৃজে, তৎসৃষ্টঞ্চৈতৎ তৎপাশ-বন্ধনায়োপযোগি সূত্রং ভবতি, তত্র চ গ্রন্থিঃ সত্য-বচনং প্রতিজ্ঞা-কথনমিতি॥ ৮॥

হে বধু! 'যৎ এতৎ' অনুভূতং 'তব' সম্বন্ধি 'হৃদয়ং' 'তৎ' 'মম' সম্বন্ধি 'অস্তু' ভবতু—কিঞ্চ, 'মম' 'যৎ' 'হৃদয়ং' 'তৎ' 'তব' 'অস্তু' আবয়োরৈক্য-হৃদয়ং ভবতু ইত্যর্থঃ॥ ৯॥

হে বধূ! তোমার মন ও হৃদয় মণিতুল্য অন্নদানরূপ পাশে এবং রত্ন সদৃশ প্রাণরূপ সূত্রে ও সত্যস্বরূপ গ্রন্থি দ্বারা বন্ধন করিতেছি॥৮

হে বধূ! এই যে ত্বদীয় হৃদয়—ইহা আমার হউক অর্থাৎ তুমি মর্ম্মবেদনা পাইলে সেই যাতনা আমার হউক এবং আমার এই হৃদয় তোমার হউক অর্থাৎ আমার মর্ম্মবেদনা তোমার মর্ম্মাঘাত-কর হউক। এইরূপ তোমার সুখে আমার সুখ এবং আমার সুখে তোমার সুখ হউক॥৯

৮—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। অন্ন দেবতা। অন্ন-প্রাশনে বিনিয়োগঃ।
৯—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। প্রার্থ্যমানা দেবতা। হৃদয়ৈক্যে বিনিয়োগঃ।

ण स्तेन बध्नामित्वासौ ॥ १० ॥ सुल्मकिंशुकं शल्मलिं विश्वरूपं सुवर्णवर्णं सुकृतं सुचक्रम्। आरोह सूर्ये अमृतस्य नाभिं स्योनं पत्ये वहन्तु कृणुष्व ॥११॥

हे बधु ! 'अन्न' अदनीयं वस्तुजातं 'प्राणस्य' वायोः 'पड्विंशः' वन्धनं यतः, अतः 'तेन' अन्नेन 'त्वा' त्वां 'वध्नामि' वन्धनं करोमि ॥ १० ॥

हे 'सूर्ये !' यथा सूर्या तेजोरूपा तद्वत्तेजस्विनि ! त्वं 'सूचक्र' सुन्दर-चक्रोपेतम् इमं रथम् 'स्वारोह' सुखेनारोहणं कुरु। कीदृशं रथमित्याह—'किंसुकं' पलाश-कुसुममिव रक्तवर्णं, 'शल्मलिं' शाल्मलि-कुसुममिव आरादिविशिष्ट'विश्वरूपं' विचित्रं, 'सुवर्णवर्णं' रक्तपीताभं, 'सुकृतं' सुनिर्मितं। इमे रथाश्वाः 'अमृतस्य' कल्याणस्य 'नाभिम्' उत्पत्तिस्थानं त्वां 'वहन्तु'। त्वञ्च 'पत्ये' भर्त्रे 'स्योनं' सुखं 'कृणुष्व' कुरु ॥ ११ ॥

হে বধূ! এই যে সমস্ত অদনীয় বস্তু—ইহাই প্রাণের রক্ষণোপায় বন্ধন স্বরূপ হইয়া থাকে, অতএব এই অন্নদানে তোমাকে আবদ্ধ করিতেছি ॥১০

হে সূর্য্যতুল্য তেজস্বিনি ! তুমি এই—পলাশ কুসুমের ন্যায় রক্তবর্ণ, শিমুল গুচ্ছের চিত্রে চিত্রিত, সুবর্ণ বর্ণ, বিবিধ চিত্রে সুশোভিত, সুন্দর চক্র-সমন্বিত, উৎকৃষ্ট কারুবর-বিনির্ম্মিত রথে আরোহণ কর। এই রথের অশ্বগণ কল্যাণের আকর তোমাকে ভালরূপে বহন করুক এবং তুমি সর্ব্বদা পতি যাহাতে সুখী হন তাহাই করিবা ॥১১

१०—द्विपाद् गायत्रीच्छन्दः। अन्न देवता। अन्नस्तु तौ विनियोगः।
११—त्रिष्टुप्छन्दः। कन्या देवता। रथारोहणे विनियोगः।

মা বিদন্ পরিপন্থিনো য আসীদন্তি দম্পতী সুগেভি র্দুর্গমতীতা মপদ্রান্ত্বরাতয়ঃ॥১২॥ ইহ গাবঃ প্রজায়ধ্ব-মিহাশ্বা ইহ পূরুষাঃ। ইহো সহস্রদক্ষিণো পি পূষা নিষীদ তু॥১৩॥' ইহ ধৃতি রিহ স্বধৃতি রিহ রন্তি রি-

'যে' 'পরিপন্থিনঃ' দস্যবঃ 'আসীদন্তি' পথীতি শেষঃ, তে ইমৌ 'দম্পতী' জায়াপতী রথারূঢ়ৌ ইতি 'মা বিদন্' নহি বিদিতা ভবেয়ুঃ। কিঞ্চ 'সুগেভিঃ' সুগমৈ র্মার্গৈঃ 'দুর্গম্' দুর্গমং পন্থানম্ 'অতীতাম্' ব্যতীতাম্। অন্যেপি 'অরাতয়ঃ' শত্রবঃ 'অপদ্রান্তু' অপগতা যথা স্যুস্তথা পলায়ন্তু ॥ ১২ ॥

'ইহ' বধূবর সম্বন্ধিনি গৃহে 'গাবঃ' 'প্রজায়ধ্বম্' বহুলা ভবন্তু। 'ইহ' 'অশ্বাঃ' প্রজায়ধ্বম্। ইহ 'পূরুষাঃ' পুত্রাদয়ো বংশাঃ প্রজায়ধ্বম্। 'উ' অপিচ 'সহস্র-দক্ষিণোऽপি' যস্য দেবস্য প্রসাদাত্ গো-সহস্র-দক্ষিণা অপি ক্রতবঃ সম্পদ্যন্তে সোऽসৌ 'পূষা' আদিত্যো দেবঃ 'ইহ' 'নিষীদন্তু, প্রসীদন্তু॥১৩॥

এই দম্পতীতে রথারূঢ় হইলেন পথি মধ্যে বিঘ্নকারী যে সমস্ত দস্যুদল আছে, তাহারা যেন জানিতে না পারে! দুর্গম পথ সকল যেন সুগমরূপে অতীত হয়! শত্রুরা সকলেই যেন দূর হইয়া যায়! ॥১২

এই বধূ ও বরসম্বন্ধী গৃহে গোধন পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক এবং এই গৃহে অশ্বসম্পত্তি পরিবর্দ্ধিত হইতে থাকুক। এই গৃহে

১২—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। আশাস্যমানা দেবতা। চতুষ্পথায়ামন্ত্রণে।

১৩—অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। আশাস্যমানা দেবতা। গৃহ-প্রবেশে বিনিয়োগঃ।

ह रमस्व। मयि धृति मयि स्वधृति मयि रमो मयि रमस्व ॥१४॥

हे बधू 'इह' अस्मिन् गृहे तव 'धृतिः' धैर्य्यम् अस्तु। 'इह' तव 'स्वधृतिः' स्वैरात्मीयैः धृति धारणम् एकत्र मेलनम् अस्तु। इह तव 'रन्तिः' रमणम् अस्तु। 'इह' 'रमस्व' आमोदेन तिष्ठ। किन्तु 'मयि' भर्त्तरि तव धृत्यादिकं विशेषेणास्तु इत्याह—धृतिरित्यादि ॥ १४ ॥

পুত্রাদি বংশবৃদ্ধি হউক। অপর যে দেবতার প্রসাদে সহস্র দক্ষিণার উপযুক্ত যজ্ঞ সকল হইতে পারে সেই পূষা (সূর্য্য) দেবতা এই গৃহে সর্ব্বদা প্রসন্ন থাকুন ॥১৩

হে বধু! এই গৃহে তোমার স্থির মতি হউক, এই গৃহে তুমি সানন্দে কাল যাপন কর। এবং আমাতে তোমার স্থির মতি হউক, আমার আত্মীয় গণের সহিত তোমার মিলন হউক, আমাতে তোমার আশক্তি হউক, আমার সহিত তুমি সানন্দে কাল যাপন কর ॥১৪

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य तृतीयः खण्डः ॥ ३ ॥

——:०:——

१४—बृहतीच्छन्दः। कन्या देवता। होमे विनियोगः।

অথ চতুর্থঃ খণ্ডঃ।

অগ্নে প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকাম উপধাবামি যাস্যাঃ পাপী লক্ষ্মীস্তামস্যা অপজহি ॥১॥ বায়ো প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকাম উপধাবামি যাস্যাঃ পতিঘ্নী তনূস্তামস্যা অপজহি ॥ ২॥ চন্দ্র প্রায়শ্চিত্তে

'প্রায়শ্চিত্তে' প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান! 'অগ্নে!' 'ত্বং' দেবানাম্ অস্মদাদীনাং 'প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি' ভবসি, অতঃ 'নাথকামঃ' নাথঃ অধিনায়কঃ মে ভূয়াদিতি কামনাবান্ 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বাম্' 'উপধাবামি' অভ্যর্চ্চামি। ত্বং হি 'অস্যাঃ' 'পাপী লক্ষ্মী' অশুভসম্বন্ধিনী শোভা 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' বধ্বঃ 'তাম্' দুষ্ট শোভাম্ 'অপজহি' অপগতাং কুরু ॥ ১

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান! 'বায়ো!' 'ত্বং' 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাং প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি' ভবসি, অতঃ 'নাথকামঃ' 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বা' 'উপধাবামি'; 'অস্যাং' 'পতিঘ্নী

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান অগ্নে! তুমি দেদীপ্যমান আমাদিগের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি (অর্থাৎ আমার কেহ নাথ [মুরুব্বী] হউক এরূপ অভিলাষী) ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর অমঙ্গল শোভা যাহা থাকে তাহা দূর করিয়া দাও ॥ ১

হে প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান বায়ো! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে পতিবিয়োগ-কারণ দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥২

---

১ —অগ্ন্যাদয় ইমে পঞ্চ মন্ত্রা নিগদাঃ (যজুর্বিশেষঃ)। অগ্ন্যাদি দৈবতাকাঃ। চতুর্থীতি প্রসিদ্ধ হোম কর্ম্মণি বিনিযুক্তাঃ।

ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথকামউপ-ধাবামি যাস্যা অপুত্র্যা তনূস্তামস্যা অপজহি॥৩॥ সূর্য্য প্রায়শ্চিত্তে ত্বং দেবানাং প্রায়শ্চিত্তিরসি ব্রাহ্মণস্ত্বা নাথ কামউপধাবামি যাস্যা অপশব্যা তনূস্তামস্যা অপ-

পতি-হনন-কারিণী 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাং' তদ্-দূষণ-বিশিষ্টাং তনূম্ 'অপজহি' দূষণ-বিনির্ম্মুক্তাং কুরু ইত্যর্থঃ॥২

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান 'চন্দ্র!' 'ত্ব' 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাং 'প্রায়শ্চিত্তিঃ' দোষস্য উপশমিতা 'অসি', অতঃ 'নাথ-কামঃ' 'অহং' 'ব্রাহ্মণঃ' 'ত্বাম্' 'উপাধাবামি', 'অস্যাঃ' 'অ-পুত্র্যা' পুত্রায় হিতা পুত্র্যা তদ্বিপরীতা বন্ধ্যাত্বাদি-দূষণ-দূষিতা 'তনূঃ' 'যা' স্যাৎ, 'অস্যাঃ' 'তাম্' 'অপজহি' ॥৩

'প্রায়শ্চিত্তে' কার্য্যে আরাধ্যমান 'সূর্য্য!' 'ত্বং' 'দেবানাম্'

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে চন্দ্র! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথকাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে বন্ধ্যা হইবার কারণ যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৩

প্রায়শ্চিত্ত কার্য্যে আরাধ্যমান হে সূর্য্য! তুমি দেদীপ্যমান আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাকে অর্চ্চনা করিতেছি, তুমি এই বধূর শরীরে অ-পশব্য* দোষ যাহা থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৪

जहि ॥ ४ ॥ अग्नि वायु चन्द्र सूर्य्याः प्रायश्चित्तयो यूयं देवानां प्रायश्चित्तयस्थ ब्राह्मणोवो नाथकाम उपधावामि यास्याः पापी लक्ष्मी र्या पतिघ्नी यापुत्रा या पशव्या ता अस्या अपहत ॥५॥ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा

अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तिः' दोषस्य उपशमिता 'असि', अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'त्वाम्' 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'अ-पशव्या' पशवे हिता पशव्या तद्विपरीता पशु-नाश-दूषण-दूषिता 'तनूः' 'या' स्यात्, 'अस्याः' 'ताम्' 'अपजहि' ॥४

हे अग्नि-वायु-चन्द्र-सूर्य्याः ! 'यूयं' 'देवानाम्' अस्मदादीनां 'प्रायश्चित्तयः' दोषस्य उपशमितारः 'स्थः' अतः 'नाथ-कामः' 'अहं' 'ब्राह्मणः' 'वः' युष्मान् 'उपधावामि'; 'अस्याः' 'पापी लक्ष्मी' 'या' तनूः, 'पतिघ्नी' 'या' तनूः, अपुत्रा' 'या' तनूः, अ-पशव्या' 'या' 'तनूः, 'अस्याः' 'ताः' तद्विधाः समस्ताः तन्वः 'अपहत' दूरं कुरुत दूषण-दूषिताः तन्वः दूरीकृत्य निर्दुष्टाः कुरुतेत्यर्थः ॥ ५

হে অগ্নি, বায়ু, চন্দ্র ও সূর্য্য ! তোমরা আমাদের দোষের উপশমকারী হইতেছ অতএব নাথ-কাম আমি ব্রাহ্মণ, তোমাদিগকে অর্চ্চনা করিতেছি, তোমরা এই বধূর শরীরে অমঙ্গল শোভা, পতি বিয়োগ-কারণ দোষ, বন্ধ্যা দোষ, অপশব্য দোষ প্রভৃতি যে কোন দোষ থাকে, তাহা দূর করিয়া দাও ॥৫

---

* যে দোষে গো-মহিষাদি গৃহপশুর হানি হয়।

रूपाणि पिंशतु ॥ आसिंचतु प्रजापति र्धाता गर्भन्दधातु ते ॥६॥ गर्भन्धेहि सिनीवालि गर्भन्धेहि सरस्वति। गर्भन्ते अश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्करस्रजौ ॥ ७ ॥

हे बधु ! 'विष्णुः' व्यापको देवः 'ते' तव 'योनिं' गर्भस्थानं 'कल्पयतु' गर्भग्रहणोपयुक्तां करोतु। 'त्वष्टा' स्रष्टा सएव देवः 'रूपाणि' गर्भाकारान् 'पिंशतु' प्रकाशयतु। तमेव गर्भं गर्भस्थानं योनिं वा सएव 'प्रजापतिः' प्रजानां पालको देवः 'आ सिञ्चतु' सिञ्चनं करोतु जीवनीनामशक्तिविशेषः। 'धाता' धारयिता सएव देवः तं 'दधातु' धारयतु ॥ ६

हे 'सिनीवालि' चन्द्र-शक्ते ! अस्यां 'गर्भं' 'धेहि' धारय पोषय वा। हे 'सरस्वति' अस्मद्वाणि ! अस्यां 'गर्भं धेहि' अस्मत्कथनादेवास्यां गर्भमस्तु इतिभावः। हे बधु ! 'अश्विनौ देवौ' द्यावापृथिव्यौ ! ते तव 'गर्भम्' 'आधत्ताम्' धारयताम् कीदृशौ तावित्याह—'पुष्करस्रजौ' पुष्करमम्बरमेव स्रगिव स्रग् ययोः तौ अम्बरेण व्यापिताविल्यर्थः ॥ ७

হে বধু ! বিষ্ণু (ব্যাপক দেব) তোমার যোনি প্রদেশকে গর্ভ গ্রহণোপযুক্ত করুন। স্রষ্টৃরূপী সেই দেব তাহাতে গর্ভাকার প্রকাশ করুন। প্রজাগণের পালক সেই দেবতা জীবনী শক্তিতে সেই গর্ভ সিঞ্চন করুন। ধারয়িতা রূপী সেই দেব তাহাকে ধারণ করুন, যাহাতে গর্ভ নষ্ট না হয়।॥৬

হে চন্দ্রমার অমৃতময় শক্তে ! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে অস্মদ্ বাক্যামৃত ! এই বধূতে গর্ভ ধারণ কর। হে বধু !

পুমাংসৌ মিত্রাবরুণৌ পুমাংসা বশ্বিনা বুভৌ॥ পুমানগ্নিশ্চ বায়ুশ্চ পুমান্ গর্ভ স্তবোদরে ॥ ৮॥ পুমা-

হে বধু! যথা 'মিত্রাবরুণৌ' অহোরাত্রৌ কালৌ 'পুমাংসৌ' প্রজননশক্তিমন্তৌ, তত্রৈবৈতৎসমস্তস্য জায়মানত্বাৎ; 'উভৌ' দ্যাবা-পৃথিবী 'অশ্বিনৌ' অশ্বাবিব বেগগামিনী 'পুংমাসৌ' পূর্ববৎ; 'অগ্নিঃ' পার্থিবো দেবঃ 'চ' অপিচ 'বায়ুশ্চ' অন্তরীক্ষস্থো দেবশ্চ 'পুমান্'—'তব উদরে' অপি এবমেব 'পুমান্ গর্ভঃ' ভবতু ॥ ৮

হে বধু! যথা 'অগ্নিঃ' পার্থিবো দেবঃ 'পুমান্', যথা 'ইন্দ্রঃ' অন্ত-রীক্ষস্থো দেবো 'পুমান্', যথা 'বৃহস্পতিঃ' বৃহতাং বিপুলানাং রাশি-চক্রাণাং পতিঃ পালকঃ সূর্য্যঃ দ্যুস্থোদেবঃ 'পুমান্'—এবমেব ত্বমপি 'পুমাংসং' প্রজনন-শক্তিমন্তং পুত্রং 'বিন্দস্ব' লভস্ব। কিঞ্চ তং লব্ধ-পুত্রম্ 'অনু' অন্যোঽপি 'পুমান্' পুমাংসঃ পুত্রাঃ 'জায়তাম্' তবোদরে ইতি শেষঃ ॥ ৯

এই অম্বর-মাল্য-ধারী দ্যব্যাপৃথিবী তোমার গর্ভ ধারণ করুন ॥৭

হে বধু! এই অহোরাত্রকালেই সমস্ত প্রজা উৎপন্ন হই-তেছে অতএব ইহা যেরূপ পুরুষ (প্রজনন ক্রিয়াক্ষম) এই অশ্বের ন্যায় বেগগামী এই দ্যাবাপৃথিবী যেরূপ পুরুষ এবং এই পৃথিবীর দেবতা অগ্নি ও অন্তরীক্ষের দেবতা বায়ু যেরূপ পুরুষ—তোমার উদরেও সেইরূপ পুরুষ অর্থাৎ প্রজননক্ষম গর্ভ উৎপন্ন হউক ॥৮

হে বধু! এই পৃথিবীর দেবতা যেরূপ পুরুষ, অন্তরীক্ষের

नग्निः पुमानिन्द्रः पुमान्देवो बृहस्पतिः ॥ पुमाꣳ सं पुत्रं विन्दस्व तं पुमाननु जायताम् ॥ ८ ॥

দেবতা ইন্দ্র (আকাশ) যেরূপ পুরুষ, এই অতিবিপুল রাশিচক্রের পালন কর্ত্তা সূর্য্য যেরূপ পুরুষ—তুমিও সেইরূপ পুরুষ সন্তান লাভ কর। অপিচ সেই সন্তানের পরে তোমার উদরে আরও প্রজননশালী সন্তানগণ উৎপন্ন হউক॥৯

इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य चतुर्थः खण्डः ॥ ४ ॥

---:०-:---

॥ अथ पञ्चमः खण्डः ॥

अयमूर्ज्जावतो वृक्ष ऊर्ज्जीव फलिनी भव ॥ पर्णम्वनस्पते नुत्वा नुत्वा सूयताꣳरयिः ॥१॥ येनादितेः सोमानं

'अयम्' 'ऊर्ज्जावतः' उडुम्बरः वृक्षः 'ऊर्ज्जी' बहुतेजःसम्पन्नः 'इव' अयमिव त्वमपि 'फलिनी' बहुतरफलशालिनी बहुपुत्रवती भव। हे 'वनस्पते'! 'पर्णं' स्वकीयकहरनं 'नुत्वा नुत्वा' भूयः प्रेरयित्वा तथासंख्यो वेतिभावः 'रयिः' धनं 'सूयताम्' प्रसूयताम् अस्मै इत्यर्थः ॥ १

এই বহু-ফল-শালী তেজস্বী উড়ুম্বর বৃক্ষের ন্যায় তুমি পুত্ররূপ বহু-ফল-শালিনী হও। হে উড়ুম্বর বৃক্ষ! তোমার পত্র পত্র গণনা করিয়া তৎপরিমিত ধন ইহার জন্য প্রসব কর ॥১

নযতি প্রজাপতি র্মহতে সৌভগায॥ তেনাহ মস্যৈ সীমানং নযামি প্রজা মস্যৈ জরদষ্টিং কৃণোমি॥২॥ রাকা মহং সুহবাং সুষ্টুতী হুবে শৃণোতু নঃ সুভগা বোধতু

'প্রজাপতিঃ' জগৎস্রষ্টা দেবঃ 'যেন' হেতুনা প্রজোৎপত্তি কামনাস্য 'দেবানাম্' অস্মদাদীনাম্ মাতৃভূতস্য অণ্ডস্য 'সীমানং' অবধিম্ নযতি নীতবান্—(দ্বিধাকরণেনেতি যাবৎ) 'তেন' এব হেতুনা 'অহম্' ভর্ত্তা অপি 'অস্যৈ' অস্যাঃ 'সীমানং' 'নযামি' উন্নযনং উন্নতিশীলং করোমি। কিন্তু প্রজাপতেস্তথা নযনে কিং নিমিত্তম্? উচ্যতে—'মহতে সৌভগত্বায' অতিবিপুল-সৌভাগ্যায তস্যাণ্ডস্যেতি শেষঃ, জগৎ-প্রকাশায়েতি যাবৎ—তথৈবাহমপি 'অস্যৈ' অস্যাঃ 'জরদষ্টি' জরাবস্থা পর্য্যন্ত-জীবিনীং 'প্রজাম্' 'কৃণোমি' করোমি ; এতযৈব ক্রিযযেতি ভাবঃ অস্যা এতদেব মহৎ সৌভাগ্যম্, এতদর্থমেব সীমন্তোন্নযনম্ ॥ ২

প্রজাপতি যে হেতুতে (প্রজোৎপত্তি কামনায়) চরাচর সমস্তের মাতা স্বরূপ অখণ্ড অণ্ডের দ্বিধাভাগ করত সীমার উন্নতি করিয়াছেন—আমিও (ভর্ত্তা) সেই হেতুতেই এই বধূর সীমন্তের উন্নতি করিতেছি। তাঁহার সেই সীমার উন্নয়ন ক্রিয়াতে সেই অণ্ডের বিপুল সৌভাগ্য প্রকাশ পাইয়াছে অর্থাৎ তাহাতেই এই সমস্ত আবিভূ‘ত হইয়াছে—আমিও এই সীমন্তোন্নয়ন ক্রিয়ার প্রভাবে ইহাকে মহৎ সৌভাগ্যবতী করিতেছি—ইহার প্রজা জরাবস্থ হইয়া বিনষ্ট হইবে, তাহাদের অকাল-মৃত্যু হইবে না সুতরাং ইহাকে শোকাতুরা হইতে হইবে না ॥২

उपागहि सहस्र पोषं सुभगे रराणा ॥ ३ ॥ किं पत्मना ॥ सीव्यत्वपः सूच्या छिद्यमानया ददातु वीरं शतदायुमुख्यम् ॥ ४ ॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभि र्द्ददासि दाशुषे वसूनि ॥ ताभि र्नो अद्य सुमना

'अहं' भर्त्ता सुष्टुनो 'सुस्तुतया' 'सुहवां' शोभनाह्वानां 'राकां' अमावास्यां तिथि-कालं 'हुवे' आह्वयामि । 'सुभगा' सौभाग्यवती सा देवी 'नः' अस्माकं एतत् आह्वानं 'शृणोतु;' किञ्च 'त्मना' आत्मना स्वयमेव 'बोधतु' बुध्यतु । अपिच सैवदेवी 'अपः' भविष्यमाणान् कर्मरूपान् पुत्रादीन् 'अच्छिद्यमानया' अभज्यमानया 'सूच्या' वेधनयन्त्रेण 'सीव्यतु' । अपरञ्च 'शतदायुमुख्यम्' शतदायुषु बहु-दानक्षमेषु मुख्यम् एवं 'वीरं' पुत्रं 'ददातु' ॥ ३

हे 'सुभगे' सौभाग्यवति ! 'ते' तव 'या' 'सुपेशसः' सुरूपाः 'सुमतयः' 'याभिः' सुरूप-सुमतिभिः 'दाशुषे' यजमानाय 'वसूनि' धनानि 'ददासि', 'ताभिः' मतिभिः साकं 'सुमनाः' प्रसन्नचित्तस्त्वं 'नः' अस्मभ्यम् 'सहस्रपोषं' बहु-प्रतिपालकं पुत्रं 'रराणा' ददाना सती 'अद्य' 'उपागहि' समागच्छ ॥४

সুন্দর স্তবে আহ্বানের উপযুক্ত অমাবশ্যা তিথিরূপ দেবতাকে আমি (ভর্ত্তা) আহ্বান করিতেছি। সৌভাগ্যবতী সেই দেবী আমাদের এই আহ্বান শ্রবণ করুন এবং আহ্বানের অভিপ্রায় আপনা হইতেই বুঝিয়া লউন। অপরঞ্চ ভবিষ্যমাণ পুত্রাদিকে যাহা ভাঙ্গিবার নহে এরূপ সূচি দ্বারা সীবন (সেলাই) করুন এবং বদান্যাগ্র-গণ্য প্রপুত্র দান করুন॥৩

স্থসি প্রজাং পশূন্ত্সৌভাগ্যং মহ্যং দীর্ঘায়ুষ্ট্বং পত্যুঃ॥৫॥ যাতিরশ্চী নিপদ্যতে অহং বিধরণী ইতি। তাং ত্বা

ভর্ত্তা পৃচ্ছেৎ—হে বধু! অত স্থাল্যা 'প্রজাং' 'পশূন্', 'মহ্যং সৌভাগম্' 'পত্যুঃ' মম 'দীর্ঘায়ুষ্ট্বং' 'পশ্যসি' 'মিম্?' ॥ ৫ ॥

'যা' দেবতা অত্র শুভ কর্ম্মণি "তিরশ্চী" ন বাঞ্ছিতফল-বিঘ্নকর্ত্রী "নিপদ্যতে" ভবতি, "অহং" ভর্ত্তা তাং দেবতাং "বিধরণী শুভদায়িনী 'ইতি' মত্বেতি শেষঃ 'তাং" "ত্বা" ত্বাং "সংরাধনীং" কার্য্যসাধিনীং দেবীং "অহং" ভর্ত্তা "ঘৃতস্যধারা" আহুত্যা 'যজে' অর্চ্চয়ামি ॥ তথাচার্চ্চন-মন্ত্রঃ——"সংরাধন্যৈ" কার্য্যসাধিন্যৈ "দেব্যৈ" ইষ্টফলদাত্র্যৈ—"দৈব্যৈ' স্বাহেতি মন্ত্র-শেষঃ ॥ ৬ ॥

হে সৌভাগ্যবতি! রাকে! তোমার যে সুন্দর মতি সমস্ত আছে, যে মতি সমস্তে যজমানদিগকে বিবিধ ধনদান করিয়া থাক, সেই সমস্ত মতির সহিত প্রসন্ন মনে আমা-দিগকে বহুপোষী পুত্র প্রদানাশয়ে অদ্য আগমন কর ॥ ৪

ভর্ত্তা জিজ্ঞাসা করিবেন—

হে বধূ! এই স্থালীতে পুত্র পৌত্রাদি প্রজা, গো মহি-ষীপ্রভৃতি গৃহপশু, মদীয় সৌভাগ্য, তোমার পতির অর্থাৎ আমার দীর্ঘায়ু দেখিতে পাইতেছ কি? ৫

যে দেবতা এই শুভ কর্ম্মে বাঞ্ছিত ফলের বিঘ্নকারিণী হইতেছেন, আমি (ভর্ত্তা) তাঁহাকে শুভ-ফল-দায়িনী বিবেচনা করিয়া, কার্য্যসাধিনী সেই দেবতাকে ঘৃতের ধারা প্রদান পুরঃসর অর্চ্চনা করিতেছি॥ যথা মন্ত্র—"কার্য্যসাধিনী, ইষ্টফলদায়িনী, দেবীকে এই ঘৃতাহুতি প্রদান করি" ॥ ৬

घृतस्य धारया यजे सु्ं राधनीमहं॥ स्ंराधन्यै देव्यै देष्ट्रे ॥ ६ ॥ विपश्चित्पुच्छम भरत्तद्धातापुनराहरत् ॥ परे हि त्वं विपश्चित् पुमानयं जनिष्यतेऽसौ नाम ॥७॥ इय माज्ञे दमन्न मिद मायु रिदममृतम्॥ ८ ॥ मेधां ते मित्रावरुणौ मेधामग्निर्दधातु ते ॥ मेधां ते अ-

एवं हि श्रुतम्—"विपश्चित्" देवः 'पुच्छ' पुत्रस्य प्रतिष्ठा-स्थानम् 'अभरत्' अहरत् 'तत्' तदेव प्रतिष्ठा स्थानम् 'धाता' देवः 'पुनराहरत्' आहरणं करोति। 'हि' यतः, अतः हे 'विपश्चित्' देव ! 'त्वं' 'परेहि' आगच्छ प्रसन्नोभव, 'अयं' पुरुषः 'असौ नाम' एतन्नामकं पुत्रं 'जनिष्यते' उत्पादयतु ॥ ७ ॥

हे बालक ! 'इयम्' 'आज्ञा' प्रज्ञा प्रज्ञावर्द्धकत्वात् प्रज्ञारूपमेव 'इदम्' 'अन्नम्' 'आयुः' आयुष्कारनत्वात्, 'इदम्' 'अमृतम्' प्राणाधारत्वात्, ॥ ८ ॥

हे 'कुमार!' 'ते' तव 'मेधां' पठित-श्रुत-धारणविषयां शक्तिं

এইরূপ শ্রুত আছে—যে, বিপশ্চিৎ দেবতা পুত্রের স্থান আহরণ করেন, বিধাতা তাহাই ধারণ করেন। অতএব বিপশ্চিৎ দেবতা তুমি প্রসন্ন হও এই পুরুষ আপনাকে (দেখাইয়া) এই নামক পুত্রের উৎপাদক হউক।৭

হে বালক! এই প্রজ্ঞাবর্দ্ধক সুতরাং প্রজ্ঞাস্বরূপ অন্ন,আয়ুর্ব্বৃদ্ধিকারক অতএব আয়ুঃস্বরূপ ও ইহা অমৃতস্বরূপ।৮

७—विपश्चिद्दे वता। यजुः। गर्भाधानाङ्गकर्मणि विनियोगः।

८—बालक देवता। यजुः। अङ्गुष्ठानामिकाभ्यां बालकस्य व्रीहियवचूर्णप्राशने विनियोगः।

শ্বিনৌ দেবা বাধত্তাং পুষ্করস্রজৌ ॥ ৯ ॥ যত্তে সুসীমে হৃদয়ং হিতমন্তঃ প্রজাপতৌ ॥ বেদাহং মন্যে তদ্ ব্রহ্ম-মাহং পৌত্রমঘং নি গাম্॥১০॥যৎপৃথিব্যা অনামৃতং দিবি

'মিত্রাবরুণৌ' অহোরাত্ররূপৌ দেবৌ 'আধত্তাম্' স্থাপয়তাম্। যথা 'তে' 'মেধাম্' 'অগ্নিঃ' দেবঃ 'দধাতু' স্থাপয়তু। তথা 'তে' 'মেধাং' 'পুষ্করস্রজৌ' অম্বরমালা-ধারিণৌ 'অশ্বিনৌ' সূর্য্যাচন্দ্রমসৌ 'দেবৌ' প্রদীপ্তৌ "আধত্তাম্ স্থাপয়তাম্ ॥ ৯ ॥

হে চন্দ্র! 'যৎ' 'তে' তব 'প্রজাপতৌ' প্রজাপালকে 'সুসীমে' জ্যোৎস্নারূপ-শীতল-দ্রব্যে 'অন্তঃ' প্রবিষ্টতয়া "হৃদয়" সারভাগঃ 'নি' 'হিতং' স্থাপিতমস্তি, 'অহং' 'তৎ' 'বেদ' জানামি, 'ব্রহ্ম' সর্ব্বব্যাপকম্ ইতি 'মন্যে', ততশ্চাস্তি বালকান্তরেপি, অতঃ সম্ভাবয়ে—'পৌত্রং' পুত্রসম্বন্ধি 'অঘং' পাপফলং শোকাদিকং 'মা গাম্' নাপ্নুয়াম্ ॥ ১০ ॥

হে বালক! এই আহোরাত্র দেবতারা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন, এই অগ্নি দেবতা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন, অম্বরমালাধারী এই প্রদীপ্ত চন্দ্র সূর্য্য দেবতারা তোমাতে মেধা স্থাপন করুন। ৯

হে চন্দ্র! প্রজাগণের পোষক ত্বদীয় শীতল জ্যোৎস্নার অন্তর্গত যে সার পদার্থ আছে, আমি তাহাকে সর্ব্বব্যাপী বলিয়া জানি, সুতরাং মদীয় বালকান্তরেও অবশ্য আছে; অতএব ভরসা করি—আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল (শোকাদি) প্রাপ্ত হইব না! ।১০

৯—মিত্রাবরুণাদয়ো দেবতাঃ। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। সর্পিঃপ্রাশনে বিনিয়োগঃ।

১০—এষাং চতুর্ণাং চন্দ্রোদেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। শিশোঃ প্রসবদিন-তৃতীয়স্যাং জ্যোৎস্নায়াং চন্দ্রদর্শনে বিনিয়োগঃ।

चन्द्रमसि श्रितं। वेदामृतस्याहं नाम माहं पौत्रमघ-ꣳरिषम्॥११॥ इन्द्राग्नी शर्म यच्छतं प्रजापती। यथा यन्न-प्रमीयेत पुत्रो जनित्र्या अधि॥ १२॥ यददश्च

'यत्' 'अमृतं' 'पृथिव्याः,' 'न' 'दिवि' द्युलोके 'चन्द्रमसि' त्वयि 'श्रितम्' आश्रितम्, 'तत्' 'अमृतस्य' गुणम् 'अहं' 'वेद' जानामि; अतः सम्भावये—'पौत्रम्' पुत्र-सम्बन्धि 'अघम्' पाप-फलं शोकादिकं 'मा रिषम्' नाप्नुयाम्॥ ११॥

'मे' मम 'प्रजायै' पुत्राय 'इन्द्राग्नी' देवते 'शर्म' कल्याणं 'यच्छतम्' ददताम्, 'प्रजापती' प्रजापतिः प्रजानां पालको देवः तथा कुरुतात् 'यथा' असौ 'पुत्रः' 'जनित्र्याः' जनन्या, 'अधि' उत्सङ्गे (जीवितायां मातरीति भावः)'न प्रमीयेत' न म्रियात्॥ १२॥

যে অমৃত পৃথিবীতে নাই=দ্যুলোকে চন্দ্রমাকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে, সেই অমৃতের গুণ আমি অবগত আছি; অতএব ভরসাকরি আমি পুত্র সম্বন্ধি পাপফল) শোকাদি প্রাপ্ত হইব না।। ১১

ইন্দ্রাগ্নী দেবতারা আমার এই পুত্রকে কল্যাণ প্রদান করুন, প্রজাগণের পালক দেবতাও সেইরূপ করুন—যাহা-তে জননীর ক্রোড়ে (অর্থাৎ জননী জীবিতা থাকিতে) এই পুত্রের মৃত্যু না হয়॥১২

ন্দ্রমসি কৃষ্ণং পৃথিব্যা হৃদয়ꣳ শ্রিতং । তদহং বিদ্বাꣳ স্তৎপশ্যন্ মাহং পৌত্র মঘꣳরুদম্ ॥ ১৩ ॥ কোঽসি কতমোঽস্যেষোঽস্যমৃতোঽসি ॥ আহস্পত্যং মাসং প্রবিশাসৌ ॥১৪॥

‘চন্দ্রমসি’ ত্বয়ি ‘পৃথিব্যাঃ’ ‘হৃদয়ং’ ছায়ারূপম্ ‘কৃষ্ণং’ কৃষ্ণবর্ণং লাঞ্ছনং ‘শ্রিতম্’ ‘আশ্রিতম্ ‘অহং’ ‘বিদ্বান্’ পদার্থবিত্ ‘তত্’ লাঞ্ছনং ‘পশ্যন্’ তত্ত্বতো জানন্ আশাসে—‘পৌত্রম্’ পুত্রসম্বন্ধি ‘অঘ’ পাপফলং শোকাদিকম্ উপভুজ্য ‘মা রুদম্’ ন রুদ্যামিত্যর্থঃ ॥ ১৩ ॥

হে বালক ! ত্বং ‘কোঽসি’ কিন্নামধেয়োঽসি ? ‘কতমোঽসি’ অকালমরণধর্মাসি ? আহোস্বিত্ পূর্ণায়ুর্ভাগসি ? ন জানাসি চেচ্ছৃণু—“এষোঽসি” এতন্নামকঃ ভবসি কিন্তু “অমৃতোঽসি” অমরণধর্মা ভবসি । অতঃ ‘অসৌ’ এতন্নামকঃ ত্বং ‘আহস্পত্যং’ অহস্পতেঃ সূর্য্যস্য ইদং সংক্রান্তি-কৃতং সৌরং ‘মাসং’ কালং “প্রবিশ” উপভুঙ্ক্ষ ॥ ১৪ ॥

হে চন্দ্র! তোমাতে আশ্রিত পৃথিবীর ছায়াস্বরূপ যে কৃষ্ণবর্ণ লাঞ্ছন তাহার প্রকৃত তত্ত্ব আমি অবগত আছি; ভরসা করি—তোমাকে পুত্র সম্বন্ধি পাপ-ফল শোকাদি ভোগ করত ক্রন্দন করিতে হইবে না ॥ ১৩

হে বালক! তোমার কি নাম? তুমি কে? (অর্থাৎ অকাল-মৃত্যুর পথিক অথবা দীর্ঘায়ু)। যদি অবগত নহ, তবে শ্রবণ কর—তোমার এই নাম, তুমি পূর্ণায়ু হইবে; দিবাকরের কৃত (সৌর) এই মাসক্রমে কালাতিপাত কর ॥ ১৪

১৪ —আদিত্য দেবতা। যজুঃ। নাম করণে বিনিয়োগঃ।

स त्वाह्ने परिददात्वहस्त्वा रात्र्यै परिददातु रात्रि-स्त्वाहोरात्राभ्यां परिददात्वहोरात्रौ त्वार्द्धमासेभ्यः परिदत्ता मर्द्धमासास्त्वा मासेभ्यः परिददतु मासा-स्त्वर्त्तुभ्यः परिददत्वृतवस्त्वा संवत्सराय परिददतु संवत्सरस्त्वायुषे जरायै परिददात्वसौ॥ १५॥ अङ्गा

'सः' अहस्पतिः देवः 'त्वा' त्वां 'अह्ने' दिवसाय 'आयुषे' आयुर्वर्द्धनार्थं 'परिददातु'; 'अहः' सच स्वकालेन संवर्द्ध्य 'त्वा' त्वां 'रात्र्यै' संवर्द्धनाय 'परिददातु'; 'रात्रिः' 'त्वा' त्वां 'अहोरात्राभ्यां' 'परिददातु'; 'अहोरात्रौ' 'त्वा' त्वां 'अर्द्धमासेभ्यः' पक्षेभ्यः 'परिदत्ताम्'; 'अर्द्धमासाः' पक्षसङ्घाः 'त्वा' त्वां 'मासेभ्यः' 'परिददतु'; 'मासाः' 'त्वा' त्वां 'ऋतुभ्यः' 'परिददतु'; 'ऋतवः' 'त्वा' त्वां 'संवत्सराय' 'परिददतु'; 'संवत्सरः' 'त्वा' त्वां 'जरायै' आजराजीवनाय 'परिददातु'; 'असौ' त्वञ्च एतन्नाम्ना प्रसिद्धो भव॥ १५॥

হে বালক! এই দিবাপতি তোমার পরমায়ু বৃদ্ধির জন্য তোমাকে দিবাকালের করে সমর্পণ করুন; দিবা ঐ রূপে রাত্রির করে সমর্পণ করুন; অহোরাত্র উভয়ে একত্রিত হইয়া মাসার্দ্ধের অর্থাৎ পক্ষ কালের হস্তে সমর্পণ করুন; মাসার্দ্ধগণ মাসসংঘের হস্তে সমর্পণ করুন; মাস সকল ঋতুগণের হস্তে সমর্পণ করুন; ঋতুগণ সংবৎসর কালের হস্তে সমর্পণ করুন এইরূপে এক সংবৎসর দ্বিতীয় সংবৎসরের হস্তে দ্বিতীয় তৃতীয়ের হস্তে, তৃতীয় চতুর্থের হস্তে, এইরূপ ক্রমে জরা

১৫—আদিত্য দেবতা। নিগদঃ। নামকরণে বিনিয়োগঃ।

দঙ্গাৎ সংস্রবসি হৃদয়া দধিজায়সে ॥ প্রাণং তে প্রাণেন সন্দধামি জীব মে যাব দায়ুষম্ ॥ ১৬ ।
অঙ্গাদঙ্গাৎ সম্ভবসি হৃদয়া দধিজায়সে॥ বেদো বৈ পুত্র

হে পুত্র! ত্বং 'মে' মম 'অঙ্গাৎ অঙ্গাৎ' মদীয়-সমস্তাবয়বাৎ 'সংস্রবসি' সংস্রুতো ভূতঃ ; কিঞ্চ 'হৃদয়াৎ' মদীয়াৎ 'অধিজায়সে' উৎপন্নঃ ; অতঃ 'তে' তব 'প্রাণং' 'প্রাণেন' মদীয়েন আত্ম-প্রাণবিসর্জ্জনেনাপি -'সংদধামি' পোষয়ামি — পুত্র ! 'যাবদায়ুষং যাবৎ আয়ুষঃ অবধিঃ শ্রুত্যুক্তঃ তাবৎ, শতবর্ষং 'জীব' ॥ ১৬ ॥

হে 'পুত্র !' যঃ ত্বং 'অঙ্গাৎ অঙ্গাৎ' মদীয়াৎ প্রত্যবয়বাৎ 'সম্ভবসি' সমুৎপন্নোঽসি, 'হৃদয়াৎ' মদীয়াৎ 'অধিজায়সে' অতঃ ত্বং 'বৈ' নিশ্চয়ং 'বেদঃ' বেদপাঠী 'নাম' প্রসিদ্ধঃ 'অসি' ভবসি লোকে (মম বৈদিকত্ব-প্রসিদ্ধেরিতি ভাবঃ) ; 'সঃ' ত্বং 'শরদঃ শতং' শতসংখ্যাকং শরৎ কালং 'জীব' ॥ ১৭ ॥

কাল পর্য্যন্ত ইহারা তোমাকে পরিবর্দ্ধন করুন এবং তুমি এই নামে প্রসিদ্ধ হও ॥ ১৫

হে পুত্র! তুমি আমার প্রত্যেক অঙ্গ হইতে সংশ্রুত হইয়াছ অর্থাৎ আমার হস্ত হইতে তোমার হস্ত হইয়াছে, আমার পাদ হইতে পাদ, মুখ হইতে মুখ, নাসিকা হইতে নাসিকা ইত্যাদি ক্রমে আমার অঙ্গ সমস্ত হইতেই ত্বদীয় সমস্ত অঙ্গ হইয়াছে। তুমি আমার আত্মা স্বরূপ হৃদয়ের ধন। অতএব আমার স্বীয় প্রাণ বিসর্জ্জনেও ত্বদীয় প্রাণ পোষণীয়—পুত্র! যাবৎকাল মনুষ্যের আয়ু হইতে পারে (অর্থাৎ শত বর্ষ) তাবৎ জীবিত হও ॥ ১৬

১৬—অস্য, পরস্য, তৎপরস্য চ—প্রজাপতিঃ দেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। মূর্দ্ধাঘ্রাণে বিনিয়োগঃ।

নামাসি স জীব শরদঃ শতম্॥ ১৭॥ অশ্মা ভব পরশুর্ভব হিরণ্যমস্তৃতং ভব॥ আত্মাসি পুত্র মা মৃথাঃ স জীব শরদঃ শতম্॥ ১৮॥ পশূনাং ত্বা হিঙ্কা-রেণাভিজিঘ্রাম্যসৌ॥ ১৯॥

হে 'পুত্র!' 'অশ্মা ভব' প্রস্তরবৎ দৃঢ়ীভব, 'পরশুর্ভব' পরশুবৎ স্বয়মচ্ছেদ্যঃ শত্রূণাং ছেদকশ্চ ভব, 'হিরণ্যং' সুবর্ণমিব 'অস্তৃতং' যত্নেন রক্ষণীয়ং 'ভব'; ত্বম্ 'আত্মাসি' 'মা মৃথাঃ' মৃত্যুং ন গচ্ছ, অপিতু 'সঃ' ত্বং 'শরদঃ শতং' কালং 'জীব'॥ ১৮

হে পুত্র! 'অসৌ' অহং 'ত্বা' ত্বাং 'পশূনাম্' গবাদীনাম্ ইব 'হিংকারেণ' অব্যক্ত-শব্দ-পূর্বকং 'অভিজিঘ্রামি' ত্বদীয়ং মস্তকমিতি যাবৎ॥ ১৯॥

হে পুত্র! যে হেতুক মদীয় প্রত্যেক অঙ্গ হইতে ত্বদীয় প্রত্যেক অঙ্গ গঠিত হইয়াছে এবং তুমি আমার হৃদয় হইতে উৎপন্ন হইয়াছ অতএব তুমি প্রসিদ্ধ বেদাধ্যায়ী হইবা, অতএব প্রার্থনা করি—তুমি শত শরৎ* আয়ু লাভ কর॥ ১৭

হে পুত্র! প্রস্তরের ন্যায় দৃঢ়কায় হও, পরশুর ন্যায় স্বয়ং অচ্ছেদ্য ও শত্রুর ছেদক হও, স্বর্ণের ন্যায় যত্নে রক্ষণীয় (অর্থাৎ গুণবান্) হও, তুমি আমার আত্মা হইতেছ—অকালে মৃত হইও না প্রত্যুত শত শরৎ জীবিত থাক॥ ১৮

হে পুত্র! এই আমি গোপ্রভৃতি পশুগণের ন্যায় অস্ফুট শব্দ পুরঃসর ত্বদীয় মস্তক আঘ্রাণ করি॥ ১৯

ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে প্রথম প্রপাঠকস্য পঞ্চমঃ খণ্ডঃ॥ ৫॥

১৭—প্রজাপতিঃ দেবতা। যজুঃ। শিরআঘ্রাণে বিনিয়োগঃ।

* সেকালে শরৎকালই বৎসরের প্রথম ঋতু বলিয়া স্বীকৃত হইত।

॥ अथ षष्ठः खण्डः ॥

आय मगात् सविता क्षुरेण ॥ १ ॥ उष्णेन वाय उदकेनेधि ॥ २ ॥ आपउन्दन्तु जीवसे ॥३॥ विष्णोर्द्दंष्ट्रोसि ॥ ४ ॥ ओषधे त्रायस्वैनम् ॥ ५ ॥ स्वधिते मैनं

हे कुमार ! "सविता" सवितृस्वरूपः 'अयं' नापितः 'क्षुरेण' वपनास्त्रेण सह क्षुरंगृहीत्वेति यावत् 'आ अगात्' आभिमुख्येन सयत्नः आगतः ॥ १॥

हे 'वायो' देव ! अत्रैव समये 'उष्णेन' 'उदकेन' सह 'एधि' एहि ॥ २ ॥

'आपः' जलदेवता कुमारस्यास्य 'जीवसे' निरुपद्रव-जीवनाय इमम् 'उन्दन्तु' क्लेदयन्तु ॥ ३ ॥

हे क्षुर ! त्वं 'विष्णोः' देवस्य 'दंष्ट्रोसि' दन्तो भवसि ॥ ४ ॥

हे 'ओषधे !' लाजारूप ! भक्ष्यद्रव्य ! 'एनं' बालकं 'त्रायस्व' निर्भयं कुरु ॥ ५ ॥

হে কুমার ! সবিতৃ-স্বরূপ এই নাপিত ক্ষুর লইয়া আসিয়া উপস্থিত হইয়াছে ॥ ১

হে বায়ুরূপী নাপিত ! উষ্ণোদক গ্রহণ পুরঃসর আগমন কর ॥ ২

হে জলদেব ! এই কুমারের নিরুপদ্রব জীবিতার্থ এই মস্তক সিক্ত কর ॥ ৩

হে ক্ষুরদেবতা ! তুমি বিষ্ণুদেবতার দংষ্টা স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

१—६ एषां षसां प्रजापतिः देवता । निगदाः । चूड़ाकरणाङ्गकार्य्ये विनियोगः ।

हिंसीः॥६॥ येन पूषा बृहस्पतेर्वायोरिन्द्रस्य चावपत्॥ तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे ॥७॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुष मग-

हे 'स्वधिते!' 'एनं' कुमारं' 'मा हिंसीः' हिंसां मा कुरु अस्य रक्तपातो यथा न स्यादिति भावः ॥ ६ ॥

'येन' अस्त्रेण 'पूषा' देवः 'बृहस्पतेः' देवस्य किञ्च 'वायोः' देवस्य 'च' अपिच 'इन्द्रस्य' देवस्य 'अवपत्' वपनं केशस्य कृतवान्, 'तेन' एव 'ब्रह्मणा' ब्रह्मभूतेन अस्त्रेण 'ते' तव 'जीवातवे' अरोग-जीवनाय 'दीर्घायुष्ट्वाय' बहुतरायुषे, 'वर्चसे' तेजो विवृद्ध्यर्थञ्च वपामि केशानिति शेषः ॥ ७ ॥

त्रीणि बाल-युव-स्थविरत्वानि आयूंषि त्र्यायुषं। 'जमदग्नेः' 'यत्' 'त्र्यायुषं'—'काश्यपस्य' यत् 'त्र्यायुषं'—'अगस्त्यस्य' यत् 'त्र्यायुषं' 'देवानां' यत् 'त्र्यायुषं' 'तत्' 'त्र्यायुषं 'ते' 'अस्तु' भवतु ॥ ८ ॥

হে অগ্ন! (লাজা, খৈ) এই বালকের ভয় অপনোদন কর ॥ ৫

হে সবিতঃ! এই কুমারের মস্তকে যেন রক্তপাত না হয়! ॥ ৬

পূষা দেবতা যে অস্ত্রে বৃহস্পতির, যে অস্ত্রে বায়ুর, যে অস্ত্রে ইন্দ্রের কেশ বপন করিয়াছেন—ব্রহ্মস্বরূপ সেই অস্ত্রে তোমার কেশ বপন করিতেছি—এই কার্য্যফলে তুমি দীর্ঘায়ু, নীরোগ ও তেজস্বী হইবা ॥ ৭

৩—প্রজাপতিঃ দেবতা। উষ্ণিক্ ছন্দঃ। কেশ-বপনে বিনিয়োগঃ।

त्र्यस्य त्र्यायुषं यद्देवानां त्र्यायुषं तत्ते अस्तु त्र्यायुषम्॥८॥
अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं
तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा॥ ९ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्याधिपते ! 'अग्ने !' 'अहम्' 'इदं' 'व्रतं' ब्रह्मचर्य्यं 'चरिष्यामि' आचरिष्यामि, 'तत्' तस्मात् 'ते' तुभ्यं 'प्रब्रवीमि' आवेदयामि त्वत्प्रसादेन 'तत्' 'शकेयं' चरितुमिति यावत् किञ्च 'तेन' तत्फलेन 'ऋध्यासं' समृद्धियुक्तो भवेयम्—इत्यञ्च 'अनृतात्' अलीकावस्थातो निर्गत्य 'सत्यं' ब्रह्म तत्प्राप्तये धृत मेतद् व्रतम् 'उपैमि' उपगच्छामि प्राप्नोमि ॥ ९ ॥

জমদগ্নির যে অবস্থাত্রয়*—কশ্যপের যে অবস্থাত্রয়—অগস্ত্যের যে অবস্থাত্রয়—দেবগণের যে অবস্থাত্রয়, তাহা তুমি লাভ কর ॥ ৮

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে অগ্নে ! আমি এই ব্রহ্মচর্য্য ব্রত আচরণ করিব, সেই জন্য প্রার্থনা করি—তৎপ্রসাদে যেন উহা নির্ব্বাহ করিতে পারি ! এবং ঐ ব্রত ফলে যেন ব্রহ্মবর্চ্চস লাভ করিতে পারি !—এই সমস্ত অভিপ্রায়ে বিদ্যমান অবস্থা হইতে নির্গত হইয়া সত্যস্বরূপ প্রাপ্তির জন্য এই ব্রত অবলম্বন করিতেছি ॥ ৯

८—प्रजापतिः देवता । यजुः । आशीःकरणे विनियोगः ।

९—अग्नि र्देवता । निगदः । उपनयन-होमे विनियोगः ।

* বাল্য, যুবা, বৃদ্ধ ।

वायो व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ॥१०॥ सूर्य्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ॥ ११ ॥ चन्द्र व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयं तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा ॥१२॥ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'वायो' ! अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ १० ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'सूर्य्य !' अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ ११ ॥

हे 'व्रतपते !' उपनयनादि-व्रतस्य अधिपते ! 'चन्द्र !' अहमित्यादि पुर्ववत् ॥ १२ ॥

हे 'व्रतानाम्' उपनयनादीनां कार्य्याणां 'व्रतपते !' इन्द्र ! अहमित्यादि पुर्ववत् ॥ १३ ॥

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে বায়ো ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১০

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে সূর্য্য ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১১

উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে চন্দ্র ! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১২

१०—वायु र्देवता । निगदः । उपनयन-होमे विनियोगः ।

११—सूर्य्यो देवता । निगदः । उपनयन-होमे विनियोगः ।

१२—चन्द्रो देवता । निगदः । उपनयन होमे विनियोगः ।

तच्छकेयं तेनर्द्ध्यां समिदमह मनृतात् सत्य मुपैमि स्वाहा ॥ १३ ॥ आगन्त्रा समगन्महि प्रसुमर्त्तं युयोतन॥ अरिष्टाः सञ्चरेमहि स्वस्ति चरतादयम् ॥१४॥ अग्निष्टे हस्त मग्रहीदयमा हस्तमग्रहीन्मित्र स्त्वमसि

हे अग्न! 'आगन्त्रा' ब्रह्मचर्य्यं आगमनशीलेन अनेन बटुना सह वयम् आचार्य्यादयः त्वां 'समगन्महि' उपास्महे। त्वं हि एनं बालकं 'सुमर्त्तं' शोभनमनुष्यं 'युयोतन' ब्रह्मचर्य्ये नियुक्तं कुरु। 'अरिष्टाः' विघ्नाः अस्य वयमेव 'सञ्चरेमहि' उपभुञ्जामः 'अयं' बालकः "स्वस्ति" सुखं 'चरतात्' भुञ्जतात् ॥१४॥

हे बालक! 'ते' तव 'हस्तम्' इदम् मया गृहीतम् 'अग्निः' देवः 'अग्रहीत्' गृहीतवान्, शरणं दत्तवानित्यर्थः मद्ग्रहणेन तस्यैव ग्रहणं सिद्ध मिति चाशयः, यथा सविता देवः 'हस्तम्' 'अग्रहीत्'; तथैव अर्य्यमा देवश्च "हस्तम्" 'अग्रहीत्'। बालक! ब्रह्मचर्य्या वस्थः 'त्वं' 'कर्मणा' अहिंसादि-

সমস্ত ব্রতের শ্রেষ্ঠ-উপনয়ন প্রভৃতি ব্রতের অধিনায়ক হে ইন্দ্র! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ ॥ ১৩

হে অগ্নে! ব্রহ্মচর্য্য ব্রতে প্রবৃত্ত এই বালকের সহিত আমরা (আচার্য্য প্রভৃতি) তোমার উপাসনা করিতেছি, তুমি এই বালককে এই ব্রত নির্ব্বাহে উপযুক্ত কর; এই বালকের বিঘ্ন সকল আমরাই ভোগ করিতে স্বীকৃত আছি, এ বালক সুখে কালযাপন করুক ॥ ১৪ ॥

१३—इन्द्रो देवताः। निगदः उपनयन-होमे विनियोगः।

१४—अग्नि र्देवता। अनुष्टुप् छन्दः। आचर्य्य पठने विनियोगः।

कर्म्मणाग्नि राचार्य्यस्तव ॥ ।१५ ॥ ब्रह्मचर्य्य मागा मुपमानयस्व ॥ १६ ॥ को नामास्यसौ नामास्मि ॥१७ देवस्य ते सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ता-

व्यवहारेण 'मित्रः' सर्व्वेषां मित्रभूतः 'असि' 'अग्निः', देवः अयम् 'तव' 'आचार्य्यः' वेदोपदेशकः इति जानीहि, मामग्नि-तुल्यमव गच्छेति वा भावः ॥ १५ ॥

हे गुरो ! अहम् इदानीम् 'ब्रह्मचर्य्यम्' व्रतम् 'आगाम्' स्वीकृतवान्, अथ 'मा' माम् 'उपनयस्व' आत्म-समीपं प्रापय ॥१६ ॥

हे कुमार ! 'कः नाम' किन्नामधेयः त्वम् 'असि' भवसि ?

হে বালক ! এই আমি তোমার হস্ত গ্রহণ করিলাম (অর্থাৎ শরণ দান দিলাম) ; আমার এই হস্ত গ্রহণেই তোমার অগ্নি দেবতা-কর্ত্তৃক হস্ত-গ্রহণ সিদ্ধ হইল এবং ইহাতেই সবিতৃ-দেব-কর্ত্তৃকও হস্ত গ্রহণ সম্পন্ন হইল ও অর্য্যমা দেবতা-কর্ত্তৃকও হস্ত গৃহীত হইল। হে বালক ! এই ব্রহ্মচর্য্য অবস্থাতে সমস্ত জীবের প্রতি অহিংসা ভাব ধারণ করিবা, সকল জীবই তোমার মিত্র জানিবা এবং আমাকে (আচার্য্যকে) অগ্নি তুল্য সম্মানাস্পদ জ্ঞান করিবা। (অথবা এই অগ্নিকেই আচার্য্য বলিয়া জানিবা)।১৫

হে গুরো ! আমি সম্প্রতি ব্রহ্মচর্য্য ব্রত গ্রহণ করিলাম, অত:পর আপনি আমাকে উপনয়ন (আত্ম সমীপে নয়ন) করুন।১৬

হে কুমার ! তুমি কিন্নামধেয় ? অর্থাৎ তোমার নাম কি ?—হে গুরো ! আমার এই নাম।১৭

१५—अग्नि र्देवता। यजुः। हस्त-ग्रहणे विनियोगः।

१६ – अग्निर्देवता। यजुः। ब्रह्मचारि-प्रार्थने विनियोगः।

भ्याᳰ हस्तं गृह्णाम्यसौ ॥ १८ ॥ सूर्य्यस्यावृत मन्वावर्त्त्स्वासौ ॥१९॥ प्राणानां ग्रन्थि रसि मा विस्रसोन्तक इदं ते परिददाम्यमुम् ॥२०॥ अहुर इदं ते परिददाम्यमुम् ॥२१

हे गुरो ! अहं 'असौ नाम' एतन्नामकः 'अस्मि' भवामि ॥ १७॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'ते' तव 'हस्तं' 'सवितुर्देवस्य' 'प्रसवे' अनुज्ञाते सति 'अश्विनोः' देवयोः 'बाहुभ्यां' 'पूष्णः' पूष-देवस्य 'हस्ताभ्यां' 'अहं' 'गृह्णामि' ॥ १८ ॥

असौ' हे देवशर्मन् ! त्वं 'सूर्य्यस्य' 'आवृतम्' प्रदक्षिणम् 'आ' आभिमुख्येन 'वर्त्तस्व' कुरु ॥ १९ ॥

हे 'नाभे' ! त्वं 'प्राणानां' प्राणवाय्वादि-वाहि-नाड़ीनां 'ग्रन्थिः' मिलनस्थानं 'असि' ; हे 'अन्तक !' 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमीति भावः ॥ २० ॥

हे 'अहुरे !' वायो ! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि ॥ २१ ॥

হে দেব শর্ম্মন্ ! আমি সবিতা দেবতার অভিপ্রায়ানুসারে অশ্বি নামক দেব দ্বয়ের সাহায্যে, পূষা দেবতার হস্ত দ্বারা তোমার হস্ত গ্রহণ করিতেছি ।১৮

হে দেব শর্ম্মন্ ! ভালরূপে সূর্য্যকে প্রদক্ষিণ কর ।১৯

হে নাভে ! তুমি প্রাণ বায়ু প্রভৃতি বায়ু সমস্তের গ্রন্থি

१७—अग्नि र्देवता । यजुः । प्रश्न-प्रतिवचने विनियोगः ।
१८—अग्नि र्देवता । यजुः । पाणि-स्वीकरणे विनियोगः ।
१९—सूर्य्यो देवता । यजुः । सूर्य्य-प्रदक्षिणे विनियोगः ।
२०—यमो देवता । यजुः । नाभि-स्पर्शने विनियोगः ।
२१—वायुर्देवता । यजुः । नाभ्युत्सर्पणे विनियोगः ।

कृशन इदं ते परिददाम्यमुम्॥२२॥ प्रजापतये त्वा परि-ददाम्यसौ॥ २३॥ देवाय त्वा सवित्रे परिददाम्य-सौ॥ २४॥ ब्रह्मचार्य्यस्यसौ॥ २५॥ समिधमाधेह्य-

हे 'कृशन !' कृशानो ! 'इदं' बालक-शरीरं 'ते' तुभ्यं 'परि' सर्व्वतः 'ददामि' शरणापन्नं करोमि ॥ २२ ॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'त्वा' त्वां 'प्रजापतये' देवाय 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि ॥ २३ ॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'त्वा' त्वां 'सवित्रे' 'देवाय' 'परि ददामि' सर्व्वतः शरणापन्नं करोमि ॥ २४ ॥

'असौ' देवशर्मन् ! 'ब्रह्मचारी' 'असि' भवसि—इति मनसि स्वीकुरु इति प्रैषणम् ॥ २५ ॥

স্বরূপ, মিলন স্থান হইতেছ—হে অন্তকারিন্ ! এই বালক-শরীর তোমার করে সর্ব্বপ্রকারে সমর্পণ করিতেছি, রক্ষাকর ।২০

হে বায়ো ! এই বালককে সর্ব্বপ্রকারে তোমার শরণাপন্ন করিতেছি ।২১

হে কৃশানো ! এই বালককে সর্ব্ব প্রকারে তোমার শরণা-পন্ন করিতেছি ।২২

হে দেবশর্ম্মন্ ! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে প্রজাপতি দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি ।২৩

হে দেবশর্ম্মন্ ! তোমাকে সর্ব্ব প্রকারে সবিতা দেবতার শরণাপন্ন করিতেছি ।২৪

হে দেবশর্ম্মন্ ! তুমি ব্রহ্মচারী হইতেছ—ইহা তুমি অব-গত হও ।২৫

---

२२ – अग्नि र्दैवता। यजुः। हृदय-स्पर्शने विनियोगः।

२३ – प्रजापति र्दैवता। यजुः। दक्षिणांश-स्पर्शने विनियोगः।

२४ – सविता देवता। यजुः। वामांश-स्पर्शने विनियोगः।

२५ – अग्नि र्दैवता। यजुः। आचार्य्य-कथने विनियोगः।

पोशान कर्म कुरु मा दिवा स्वाप्सीः ॥ २६ ॥ इयं दुरु-क्तात्परिबाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती म आगात् ॥ प्राणापानाभ्यां बलमाहरन्ती स्वसा देवी सुभगा मे-खलेयम् ॥२७॥ ऋतस्य गोप्त्री तपसः परस्वी घ्नती रक्षः

हे आयुष्मन् ! 'समिधम्' समित् काष्ठम् 'आधेहि' आधानं कुरु अग्नाविति शेषः, प्रत्यह मिति विवेकः । 'अपः' 'अशान' आचमनोदकं प्रतिकर्म्म प्राशय । 'कर्म्म' गुरु-सेवां 'कुरु' नित्य मिति भावः । 'दिवा' अहनि 'मा स्वाप्सीः' शयनं मा कार्षीः ॥ २६ ॥

'इयं' 'मेखला' 'दुरुक्तात्' व्रात्य-नाम-दुरपवाद वचनात् 'परिबाधमाना' अपसारयन्ती 'वर्णं' ब्राह्मणाख्यं 'पवित्रं' द्विजत्वेन विशुद्धं 'पुनती' कृतवती सती 'मे' ममान्तिके 'आ अगात्' आगतवती ; 'इयं' मेखला 'प्राणापानाभ्यां' शरीरस्थ-वायुभ्यां 'बलम्' 'आहरन्ती' सम्पादयन्ती सती 'सुभगा' कल्याणी 'स्वसा देवी' भगिनी इव भवति ॥ २७ ॥

হে আয়ুষ্মন্ ! প্রতি দিন তুমি অগ্নিতে সমিৎ প্রক্ষেপ করিবা অর্থাৎ নিত্য হোম করিবা। সতত আচমন করিবা অর্থাৎ শুচি থাকিবা। গুরুর সেবায় রত থাকিবা। কদাপি দিবসে নিদ্রিত হইবা না।২৬

ব্রাত্য রূপ দুরপবাদের বাধক রূপী এই মেখলা বিপ্র-

२६—अग्नि र्देवता । यजुः । उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः ।

२७—अग्नि र्देवता । उष्णिक् छन्दः । मेखला परिधापने विनियोगः ।

सहमाना अरातीः॥ सा मासमन्त मभि पर्य्येहि भद्रे धर्त्तारस्ते मेखले मा रिषाम॥ २८॥ तत्सवितुर्वरे-

हे 'मेखले!' त्वं 'ऋतस्य' ब्रह्मचर्य्य-लक्षणस्य सत्यस्य धर्मणः 'गोप्त्री' रक्षयित्री असि। 'तपसः' वेदाध्ययनस्य 'परस्वी' सर्व्वस्वभूता असि। 'रक्षः' रक्षसः विघ्नकारिणः 'घ्नती' विनाशयित्री असि। 'अरातीः' अरातीन् शत्रून् सहमाना अभि-भवन्ती। 'सा' त्वं 'समन्त' समन्तात् 'मा' माम् 'अभि' लक्ष्य 'पर्य्येहि' आगच्छ। हे 'भद्रे! कल्याणि! 'ते' तव 'धर्त्तारः' धारणकारिणः वयं 'मा रिषाम' केनापि मा हिंसिष्म॥२८

'सवितुः' जगत्-प्रसवितुः 'देवस्य' सर्व्वत्र द्योतमानस्य 'तत्' 'भर्गः' तेजः 'धीमहि' ध्यायामः चिन्तयामः। कस्य देवस्य?

কুলোদ্ভব বালকদিগকে দ্বিজরূপে পবিত্র করিতে সকলের নিকটে আগমন করিয়া থাকেন। এই মেখলা প্রাণাপান নামক শরী-রস্থ বায়ু দ্বারা বল আহরণ করত কল্যাণা ভগিনীর ন্যায় উপকারিণী হইয়া থাকেন।২৭

হে মেখলে! তুমি ব্রহ্মচর্য্য রূপ সত্য ধর্ম্মের রক্ষয়িত্রী হইতেছ, বেদাধ্যয়ন রূপ তপস্যার প্রধান উপকরণ হইতেছ, বিঘ্নকারিগণের বিনাশ কারিণা হইতেছ। শত্রু বর্গের অভি-ভব কারিণী হইতেছ। তুমি সর্ব্ব প্রকারে আমার মঙ্গল লক্ষ্য করত আগমন কর। হে কল্যাণি! তোমার ধারণকারী আমি যেন কোন রূপ ক্লেশ না পাই।২৮

সেই জগৎ-প্রসবিতা, সর্ব্বত্র দ্যোতমান বস্তুর (গুরু

२८—मेखला देवता। उष्णिक् छन्दः। मेखला-परिधापने विनियोगः।

र्ग्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥२९ भूर्भुवस्वरोꣳ ॥ ३० ॥ सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु यथा त्वꣳ सुश्रवः सुश्रवा देवेष्वेव मह्ꣳ सुश्रवः सुश्रवा

इत्याह—'यः' देवः 'नः' अस्माकं 'धियः' बुद्धीः 'प्रचोदयात्' प्रकृष्टं यथा स्यात् तथा चोदयति प्रेरयति ॥२९॥

'भूः' भूलोकः। 'भुवः' अन्तरीक्षलोकः। 'स्वः' द्युलोकः। एषु त्रिषु लोकेष्वेव 'ओं' आत्मा व्यापकः॥३०॥

हे 'सुश्रवः' सुष्ठु श्रवो यशः यस्य तथाविध ! दण्ड ! 'मा' 'मां' सुश्रवसं 'कुरु'। हे 'सुश्रवः ! त्वं यथा 'देवेषु' दीप्यमानेषु पदार्थसमूहेषु 'सुश्रवाः' सुविख्यातः, हे 'सुश्रवः !' 'ब्राह्मणेषु' मध्ये 'अहम्' अपि 'एवं' 'सुश्रवाः' 'भूयासम्' ॥ ३१

কর্ত্তৃক উপদিষ্ট) তেজের চিন্তা করি। যে দ্যোতমান আমাদের বুদ্ধি বৃত্তিকে উৎকৃষ্ট পথে প্রেরণ করেন।২৯

এই ভূলোক। এই ভুব (অন্তরীক্ষ) লোক। এই স্বঃ (স্বর্গ অথবা দ্যু) লোক।—এই লোকত্রয়েতেই ওঁ (আত্মা) সর্ব্বব্যাপক রূপে ভাসমান রহিয়াছেন।৩০

হে প্রথিত-কীর্ত্তে দণ্ড! আমাকে প্রথিত-কীর্ত্তি কর। হে প্রথিত-কীর্ত্তে! দীপ্যমান পদার্থ সমস্তের মধ্যে তুমি যেরূপ সুবিখ্যাত, হে সুবিখ্যাত! আমিহ যেন ব্রাহ্মণগণের মধ্যে সেইরূপ সুবিখ্যাত হই।৩১

२९—अग्नि र्देवता। गायत्रीच्छन्दः। उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः।

३०—अग्नि र्देवता। यजुः। उपदेश-कर्म्मणि विनियोगः।

ब्राह्मणेषु भूयासम् ॥ ३१ ॥ अग्नये समिध माहार्षं बृहते जातवेदसे ॥ यथात्व मग्ने समिधा समिध्यस्येव मह्‌मायुषा मेधया वर्च्चसा प्रजया पशुभि र्ब्रह्मवर्चसेन धनेनान्नाद्येन समेधिषीय स्वाहा ॥ ३२ ॥ पुनर्मामै-त्विन्द्रियं पुनरायुः पुनर्भगः ॥ पुनर्द्रविणमैतु मा पुन

'बृहते' महते 'जातवेदसे' जातप्रज्ञाय 'अग्नये' 'समिधम्' 'आहार्षम्' आहृतवान् । हे 'अग्ने' ! 'त्वं' 'यथा' 'समिधा' अनया 'समिध्यसि' 'एवं' 'अहम्' 'आयुषा' 'मेधया' 'वर्च्चसा' तेजसा, 'प्रजया' पुत्रादिलक्षणेन, 'पशुभिः' गवादिभिः 'ब्रह्म वर्च्चसेन', 'धनेन', 'अन्नाद्येन' अन्न-प्रभृति-भोग्य-वस्तु-समस्तेन 'सम्' सम्यक् 'एधिषीय' वृद्धियुक्तः स्याम् ॥३२॥

रेतःस्कन्दनादि-दोषेण यत् 'इन्द्रियम्' अपचितम् 'तत्' 'पुनः' 'माम्' 'एतु' सम्यक् आगच्छतु । तथाच यत् 'आयुः' क्षीणम्, तत् 'पुनः' एतु । किञ्च तेनैव कर्म्मणा यः 'भगः' ऐश्वर्य्य

জাত-প্রজ্ঞ, অতি প্রবৃদ্ধ, অগ্নির উদ্দেশে সমিৎ আহরণ করা হইয়াছে। হে অগ্নে! তুমি যেরূপ এই সমিৎ প্রদানে সম্বৃদ্ধ হইয়াছ আমিও সেইরূপ আয়ু, মেধা, বর্চ্চ, তেজ, প্রজা, পশু, ব্রহ্মবর্চ্চস, ধন, অন্নপ্রভৃতি সর্ব্বপ্রকারে বৃদ্ধিযুক্ত হই।৩২

রেতঃ-স্কন্দনাদি দোষে যে ইন্দ্রিয় অপচিত হইয়াছে, তাহা আমার প্রত্যাবৃত্ত হউক। আমার যাবৎ আয়ু ক্ষীণ হইয়াছে, তৎ সমস্ত প্রত্যাবৃত্ত হউক। যাহা কিছু মানাদি নষ্ট হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। যে সমস্ত দ্রব্যাদি অপব্যয়িত হইয়াছে, তাহা প্রত্যাবৃত্ত হউক। অধিক কি,

३१—दण्डी देवता । पङ्क्तिच्छन्दः । दण्ड ग्रहणे विनियोगः ।

३२—अग्नि र्देवता । यजुः । समित्-प्रक्षेपे विनियोगः ।

ব্রাহ্মণ মৈতু মা ॥৩৩॥ পুনর্মনঃ পুনরাত্মা ম আগাত্ পুনশ্চক্ষুঃ পুনঃ শ্রোত্রং ম আগাত্ ॥ বৈশ্বানরো অদব্ধঃ স্তনূপা অন্ত স্তিষ্ঠতু মে মনোঽমৃতস্য কেতুঃ স্বাহা ॥ ৩৪ ॥

মানাদিলক্ষণং নষ্টং, স চ 'পুনঃ' ঐতু। অপি হি তথা দুরাচারে প্রবৃত্তে যত্ 'দ্রবিণম্' ব্যয়িতং, তচ্চ 'পুনঃ' 'মা' মাম্ 'ঐতু' আগচ্ছতু। কিমধিকেন যদি কথমপি 'ব্রাহ্মণম্' ব্রাহ্মণ্য মপি ক্ষয়িতং স্যাত্, তদপি 'মা' মাম্ 'পুনঃ' 'ঐতু' আগচ্ছতু ॥ ৩৩ ॥

'মে' মমঃ 'মনঃ' 'পুনঃ' আগাত্' অসত্পথাত্ প্রত্যাগতং স্বস্থ ভূতম্। 'চক্ষুঃ' অপি 'পুনঃ' আগাত্। 'মে' মম 'শ্রোত্রম্' অপি 'পুনঃ' আগাত্। শরীরস্থানা মিন্দ্রিয়াদীনাং 'অদব্ধঃ' অহিংসিতা, 'তনূপাঃ' শরীর-রক্ষকঃ, 'বৈশ্বানরঃ' আভ্যন্তরিকোঽগ্নিঃ 'অন্তঃ' যথাস্থানং তিষ্ঠতু। 'মে' মম 'মনঃ' 'অমৃতস্য' আত্মনঃ 'কেতুঃ' প্রজ্ঞারূপঃ স্যাত্ ॥ ৩৪ ॥

ঐ অপকার্য্যে যদি কোন প্রকারে আমার ব্রাহ্মণ্যও ক্ষয়িত হইয়াথাকে তাহাও আমার নিকটে পুনরাগমন করুক।৩৩

আমার মন অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হইয়া স্বস্থ ভাব অবলম্বন করুক, চক্ষুরিন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক, শ্রবণেন্দ্রিয়ও অসৎ পথ হইতে প্রত্যাবৃত্ত হউক। শরীরস্থ ইন্দ্রিয় সমস্তের সহায়কারী, শরীর-রক্ষক, বৈশ্বানর অগ্নিও যথাস্থানে স্থিত হউন। আমার মন, অমৃত পুরুষ সেই পরমাত্মার পতাকা স্বরূপ হউক অর্থাৎ প্রজ্ঞারূপে পরিণত হউক।৩৪

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে প্রথম প্রপাঠকস্য ষষ্ঠঃ খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

৩৩, ৩৪—অগ্নির্দেবতা। নিগদৌ। ইন্দ্রিয়াপচারে প্রায়শ্চিত্ত-কর্ম্মণি সমিত্ প্রক্ষেপে।

॥ अथ सप्तमः खण्डः ॥

ये अप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मरूको मनोहाः ॥ खलो विरूजस्तनूदूष्टिरिन्द्रियहा अति तांस्सृजामि ॥१॥ यदपां घोरं यदपां क्रूरं यदपामशान्त मतितत्सृजामि ॥२॥ यो रोचन स्तमिह गृह्णामि तेनाहं

'अप्सु अन्तः' इह जलमध्ये 'गोह्यः' १ 'उपगोह्यः' मरूकः, ३ 'मनोहाः' ४ 'खलः' ५ 'विरूजः' ६ 'तनूदूष्टिः' ७ 'इन्द्रियहाः, ८ इति 'ये' अष्टविधाः 'अग्नयः' शरीर-नष्ट-कारिण स्तेजसः 'प्रविष्टाः' स्थिताः, 'तान्' अग्नीन् 'अतिसृजामि' अतिशयेन वर्जयामि ॥ १ ॥

किञ्च 'अपाम्' उदक-जातीनां 'यत्' 'घोरं', 'अपां' 'यत्' 'क्रूरं', 'अपां' 'यत्' 'अशान्तम्'—एतत् त्रिविधम् अहितकरं गुणं 'तत्' तदपि 'अति सृजामि' अतिशयेन वर्जतायि ॥ २ ॥

'यः' अग्निः 'रोचनः' शरीर-दीप्तिकरः 'इह' जले 'तम्

এই জলের মধ্যে যে গোহ্য১ উপগোহ্য২, মরূক৩, মনোহা৪, খল৫, বিরূজ৬, তনূদৃষ্টি৭, ইন্দ্রিয়হা৮—নামক শরীর-হানি-কারক অষ্ট প্রকার অগ্নি থাকে ; তৎ সমস্তকে আমি বিদূরিত করিতেছি ।১———এবং জলের ঘোর নামক যে দোষ, ক্রূর নামক যে দোষ, অশান্ত নামক যে দোষ তাহাও বিদূরিত করিতেছি ।২

१, २—अनयोः अग्निर्देवता । त्रिपदी । सम ावर्त्तन जलाभिमन्त्रणे विनियोगः ।

মামভিষিঞ্চামি ॥ ৩ ॥ যশসে তেজসে ব্রহ্মবর্চসায় বলায়েন্দ্রিয়ায় বীর্য্যায়ান্নাদ্যায় রায়স্পোষায় ত্বিষ্যা অপচিত্যৈ ॥ ৪ ॥ যেন স্ত্রিয় মকৃণুতং যেনাপা মৃষতং সুরাং ॥ যেনা ক্ষানভ্যষিঞ্চতং যেনেমাং পৃথিবীং মহীং । যদ্বান্তদশ্বিনা যশস্তেনাঽমা মভিষিঞ্চতম্॥৫॥ উদ্যন্

এত্র 'গৃহ্লামি' অনন্তরঞ্চ 'অহম্' ব্রহ্মচারী 'তেন' এব জলেন 'মাম্' আত্মানং অভিষিঞ্চামি ॥ ৩ ॥

কিমর্থং মিত্যাচষ্টে— 'যশসে', 'তেজসে', ব্রহ্মবর্চসায়,' 'বলায়', 'ইন্দ্রিয়ায়', 'বীর্য্যায়' 'অন্নাদ্যায়' অন্নাদি-লাভায়, রায়স্পোষায়' ধনস্য পোষণায়, 'ত্বিষে' কান্ত্যৈ, 'অপচিত্যৈ' সম্মান-প্রাপ্তয়ে চ (পূর্ব্বেণ সম্বন্ধঃ) ॥ ৪ ॥

হে 'অশ্বিনৌ' অশ্বাবিব বেগগমনশালিনৌ ! 'যেন' কর্ম্মণা 'স্ত্রিয়ং' স্ত্রীজাতিং 'অকৃণুতম্' ভোগ্যত্বেন নিরূপিতবন্তৌ— 'যেন' কর্ম্মণা 'অপাম্' 'সুরাম্' 'ঋষতম্' গময়িতবন্তৌ, অপঃ সুরাত্বেন ভোগ্যান্ কৃতবন্তৌ—'যেন' কর্ম্মণা 'অক্ষান্' দেবনান্ ভোগ্যান্ কৃতবন্তৌ—কিমধিকেন, 'যেন' 'ইমাং' 'মহীং' মহতীং

যে অগ্নি, শরীরের দীপ্তিকারী—তাহাই এই জলে গ্রহণ করিতেছি এবং আমি (ব্রহ্মচারী) সেই নির্দোষ জলে আপনাকে সিঞ্চন করিতেছি।৩——ইহা দ্বারা আমার যশ, তেজ, ব্রহ্মবর্চ্চস, বল, ইন্দ্রিয়-সামর্থ্য, বীর্য্য, অন্নাদি, ধন-সঞ্চয়, কান্তি ও সম্মান লাভ হইবে।৪

অশ্বের ন্যায় বেগ-গমনশীল হে সূর্য্য ও চন্দ্র ! তোমরা

৩,-৪ – অনয়োঃ অগ্নির্দেবতা । যজুঃ । সমাবর্ত্তনাভিষেকে বিনিয়োগঃ ।

৫—অশ্বিনৌ দেবতে । ষড়ষ্টকা-মহাপঙ্ক্তিশ্ছন্দঃ । সমাবর্ত্তনাভিষেকে বিনিয়োগঃ ।

भ्राजभृष्टिभि रिन्द्रो मरुद्भिरस्यात् प्रातर्यावभिर-स्यात्॥ दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वा त्वा वि-शाम्या माविश॥ ६॥ उद्यन् भ्राजभृष्टिभि रिन्द्रो

सुविपुलां 'पृथिवीं' समस्तामेव 'अभि अभिक्षतम्' तर्पितवन्तौ। 'वां' युवयोः तादृशं 'यत्' कर्म 'तत्' 'यशः' इत्याचक्षते। 'तेन' 'यशसा' 'माम्' 'अभिषिञ्चतम्' मां यशस्विनं कुरुतम्-इति प्रार्थये॥ ५॥

'इन्द्रः' (इदि परमैश्वर्य्ये तेजोरूप-परमैश्वर्य्य-योगादिन्द्र आदित्य उच्यते) आदित्यः 'उद्यन्' उदीयमानः त्वं 'भ्राजभृ-ष्टिभिः' दीप्तदृष्टिभिः 'मरुद्भिः' देवैः सह 'अस्यात्' किञ्च 'प्रातर्यावभिः' प्रातराशभोक्तृभिः अन्यान्यैश्च देवैः सह 'अस्यात्'। त्वं 'दशसनिः' दशानां सनिः सम्भजनीयः 'असि' भवसि, 'मा' मामपि तथैव 'दशसनिं' दशजनानां भजनीयं कुरु; अहम् 'आविशामि' उपगच्छामि अर्थित्वेन त्वामिति शेषः, त्वञ्च 'मा' माम् 'आविश' फलदातृत्वेनेति भावः॥ ६॥

যে প্রকারে স্ত্রীজাতিকে পুরুষজাতির ভোগ্য বলিয়া স্থির করিয়া দিয়াছ, যে প্রকারে জলকেও সুরারূপে ভোগ্য করিয়াছ, পাশক (পাশা) গুলিকে যে প্রকারে ভোগ্য করিয়াছ, অধিক কি—এই সুবিপুল সমস্ত মহীমণ্ডলই যে প্রকারে পরিতৃপ্ত করিতেছ—তোমাদের সেই ক্রিয়াকে যশ বলা যায়, আমাকে সেইরূপ যশ প্রদান করিয়া যশস্বী কর।৫

হে আদিত্য! তুমি দীপ্ত-দৃষ্টি মরুদ্‌গণের সহিত এবং

৬—৮ তয়াণাং সূর্য্যো দেবতা। নিগদঃ। সূর্য্যোপস্থানে বিনিয়োগঃ।

मरुद्भि रस्यात् सा त्वपनेभि रस्तात् शतसनि रसि शतसनिं कुर्वा त्वाविश्वाख्या माविश ॥ ৭ ॥ उद्यन् भ्राजभ्रष्टिभि रिन्द्रो मरुद्भि रस्था त्सायंयावभि रस्यात् ॥ सहस्रसनि रसि सहस्रसनिं मा कुर्वा त्वा विश्वाख्या माविश ॥ ৮ ॥ चक्षुरसि चक्षु-ष्टमस्यव

इन्द्र इत्यादि पूर्ववत्। त्वं 'शतसनिः' शतानां सनिः सम्भजनीयः 'असि' भवसि, 'मा' मामपि तथैव "शतसनिं" शतजनानां भजनीयं कुरु। अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ ৭ ॥

पुनरिन्द्र इत्यादि पूर्ववत्। 'सहस्रसनिः' सहस्राणां बहूनाम् अनन्तानां वा सनिः सम्भजनीयः 'असि' 'मा' मामपि तथैव 'सहस्रसनिं' बहूनां भजनीयं कुरु। अहमित्यादि पूर्ववत् ॥ ৮ ॥

প্রাতরাশ-ভোজী অন্যান্য দেবগণেরও সহিত উদিত হইয়া দেদীপ্যমান রহিয়াছ। তুমি যেরূপ দশজনের পূজনীয়, আমাকেও সেইরূপ দশজনের পূজনীয় কর। আমি যাচক রূপে তোমার নিকটে উপস্থিত হইয়াছি, তুমি দাতৃরূপে আমার নিকটে উপস্থিত হও। ৬

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ শত শত জনের পূজনীয় আমাকেও সেইরূপ শত শত জনের পূজনীয় কর। আমি যাচক ইত্যাদি।৭

হে আদিত্য! ইত্যাদি পূর্ব্ববৎ। তুমি যেরূপ সহস্র জনের পূজনীয়, আমাকে ও সেইরূপ সহস্র সহস্র জনের পূজনীয় কর আমি যাচক ইত্যাদি। ৮

मे पाप्मानं जहि सोम स्त्वा राजा ऽवतु नमस्ते स्तु मा-माहिंᳬसी: ॥ ९ ॥ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मद् वाधमं विमध्यमᳬ श्रथाय ॥ अथादित्य व्रते वयन्तवानागसो

हे सूर्य्य! त्वं "चक्षु:" जगतां चक्षुभूत: 'असि' भवसि, किञ्च 'चक्षुष्ट' यत् चक्षुधर्म्म तदपि त्वमेवासि। 'मे' मम 'पाप्मानम्, 'अवजहि' नाशय। 'सोम:' चन्द्र: देव: 'राजा' ब्राह्मणानाम् ओषधीनाञ्च 'अवतु' आप्यायनं करोतु। 'ते' तुभ्यं 'नम:' 'अस्तु'। 'मा' मां 'मा हिंसी:' नष्टं मा कुरु ॥ ९ ॥

हे 'वरुण'! 'अस्मत्' अस्माकं 'उत्तमं' उत्तमाङ्गे कण्ठादौ स्थितं 'पाशम्' 'उत्‌श्रथाय' ऊर्द्ध्व एव शिथिलीकुरु; 'मध्य-मं" मध्यमाङ्गे कण्ठादौ च स्थितं पाशम् 'वि' श्रथाय विशेषेण शिथिली कुरु; 'अधमम्' अधमाङ्गे पादादौ च स्थितम्

হে সূর্য্য! তুমি জগতের চক্ষুস্বরূপ হইতেছ এবং চক্ষুর যে শক্তি তাহাও তুমিই। আমার পাপ নষ্ট কর। প্রদীপ্ত এই চন্দ্রমা তোমাকে স্বীয় শীত কিরণদানে পরিতৃপ্ত করুন। তোমাকে নমস্কার। কেহ যেন আমাকে নষ্ট করিতে না পারে!। ৯

হে বরুণ দেবতা! আমার উত্তমাঙ্গে কণ্ঠাদিতে অবস্থিত পাশ, শিথিল করিয়া উপর হইতেই খসাইয়া দাও; মধ্যমাঙ্গে কটি দেশাদিতে অবস্থিত পাশ শিথিল করত বিযুক্ত কর; অধমাঙ্গে পাদাদিতে অবস্থিত পাশও শিথিল করিয়া নীচভাগ

९ – सूर्य्यो देवता। अनुष्टुप् छन्द:। सूर्य्योपस्थाने विनियोग:।

অদিতয়ে স্যাম ॥ ১০ ॥ শ্রীরসি ময়ি রমস্ব ॥ ১১ ॥ নেত্র্যৌ স্থো নয়তং মাম্ ॥ ১২॥ গন্ধর্ব্বো-সুপাব উপলা-

'অব' অথায় নীচত এব শিথিলীকুরু ॥ কিন্তু হে 'আদিত্য' অদিতিঃ অখণ্ডস্যাংশ ! 'অথ' অনন্তরং পাশমুক্তাঃ সন্তঃ 'বয়ং' 'তব' 'ব্রতে' কর্ম্মণি 'অনাগসঃ' নিরপরাধিনঃ যথা 'স্যাম' তথা কুরু । কিমর্থমিত্যাহ—'অদিতয়ে' অখণ্ড-ফল-লাভায় ॥ ১০ ॥

হে মালে ! ত্বং 'শ্রীঃ' শোভা 'অসি' অতঃ ত্বাম্ প্রার্থয়ে—'ময়ি' মম শরীরে 'রমস্ব' বিহর অবস্থানং কুরু ।। ১১ ॥

হে উপানহৌ ! যুবাং ' নেত্র্যৌ' নেতৃরূপৌস্থো 'মাং' দেশাদ্ দেশান্তরং সুখেন 'নয়তম্' প্রাপয়তম্ ।। ১২ ॥

হে দণ্ড! ত্বং গন্ধর্ব্বঃ রক্ষণসমর্থঃ 'অসি' ভবসি, 'মাম্' হইতেই স্খলিত করিয়া দাও। হে অখণ্ডাংশ ! আমরা পাশমুক্ত হইয়া তোমার সন্তোষবিধান কার্য্যে অখণ্ড ফল লাভের নিমিত্ত যাহাতে নিরপরাধী থাকি এরূপ কর । ১০

হে মালা দেবতা ? তুমি শোভাস্বরূপা হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—মদীয় শরীরে অবস্থান কর । ১১

হে উপানৎ দেবতারা ! তোমরা নয়নকারিণী হইতেছ (অর্থাৎ তোমাদের সাহায্যে কণ্টকাদিতে আবৃত দুর্গম পথেও অনায়াসে যাওআ যায়) আমার গমনে সুখকারিণী হও । ১২

১০—বরুণো দেবতা । ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ । মোচনে বিনিয়োগঃ ।

১১—শ্রী দেবতা । যজুঃ । স্রগ্বন্ধনে বিনিয়োগঃ ।

১২—উপানদ্ দেবতা । যজুঃ । উপানৎ-পরিধানে বিনিয়োগঃ ।

मव ॥ १३ ॥ यक्षमिव चक्षुषः प्रियो वो भूयासम् ॥१४॥ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तपरिमितः पविः ॥ जिह्वे मा विह्वलो वाचं चारु माद्येह वादय ॥१५॥ वनस्पते

'उपाव' समीपमागत्य रक्ष। पुनः कथयति—'माम्' 'उपाव' समीपमागत्य रक्ष, सततं सर्व्वतः रक्षेति यावत् ॥ १३ ॥

हे परिषदः! अहं 'वः' युष्माकं 'चक्षुषः' 'यक्षम्' यक्षः 'इव' 'प्रियः' 'भूयासम्', यक्षः यथा सर्व्वेषां प्रियः, तथा अहमपि भूयासम्-इति प्रार्थये ॥ १४ ॥

हे 'जिह्वे'! त्वं 'नकुली' नकुलीवत् 'ओष्ठापिधाना' ओष्ठाभ्यामाच्छादिता नकुली यथा विले प्रच्छन्ना भवति क्षणेनात्मप्रकाशं करोति पुनः क्षणेन प्रच्छन्ना भवति तथास्वभावा, अहञ्च 'विह्वलः' कामादिरिपुसाहचर्य्यात् 'पविः' वज्रः 'दन्तपरिमितः' अपि भवति, अशुद्धादिरूपः उच्चारित-वागपि वज्रा-

হে দণ্ডদেবতা! তুমি বিপদে রক্ষা করিতে সমর্থ হইতেছ অতএব তোমাকে গন্ধর্ব্ব বলা যায়, তুমি আমার নিকটে সতত অবস্থিতি কর। ১৩

হে সভাসদ্ মহোদয়গণ! আমি আপনাদের চক্ষে যেন যক্ষের ন্যায় প্রিয় হই! ।১৪

হে জিহ্বে! সর্ব্বদাই অধর ও ওষ্ঠের অভ্যন্তরে অবস্থিত তুমি নকুলীর ন্যায় হইতেছ, আমরা কামাদি রিপুর বশে সর্ব্বদাই বিহ্বল, দন্ত সাহায্যে উচ্চারিত কোন কোন

१३—दण्डो देवता। यजुः। दण्ड ग्रहणे विनियोगः॥

१४—परिषदो देवताः। यजुः। वीक्षणे विनियोगः।

१५—जिह्वा देवता। अनुष्टुप् छन्दः। मुखापिधाने विनियोगः।

वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः ॥ गोभिः सन्नद्धो असि वीडयस्व ॥ आस्थाता ते जयतु जेत्वानि ॥ १६ ॥

स्वकौ भवतीति भावः । अतः प्रार्थये—'अद्य' 'इह' कर्मणि मां 'चारु' शोभनं 'वाचं' वचनं 'वादय' ॥ १५ ॥

हे 'वनस्पते !' वनस्पतिर्वृक्षः तदवयवेन काष्ठेन निर्मित हे रथ ! त्वं 'हि' निश्चयं 'वीड्वङ्गः' दृढ़ाङ्गः 'भूयाः' किञ्च 'अस्मात्' अस्माकं 'सखा' सखि-रूपः सन् 'प्रतरणः' त्राता 'भूयाः' अपिच 'सुवीरः' वीरश्रेष्ठानां वाहकः 'भूयाः' । 'गोभिः' गोचतुष्टयैः 'सनद्धः' संयुक्तः 'असि', स त्वं 'वीड़यस्व' इहैव किञ्चित् क्षणं तिष्ठ । 'ते' तव 'आस्थाता' आरोही 'जेत्वानि' जेतुमुपयुक्तानि परपक्षीयसेनादलानि 'जयतु' ॥ १६ ॥

বাক্যও বজ্রস্বরূপ প্রকাশ পায় ; অতএব প্রার্থনা করি—অদ্য এই কার্য্যে আমাকে নির্দ্দোষ বাক্যের বক্তা কর। ১৫

হে বন্য-কাষ্ঠ-নির্ম্মিত রথ ! তুমি নিশ্চয়ই দৃঢ়াঙ্গ, আমাদের সখারূপে বিপদে ত্রাতা হও ও বীর-শ্রেষ্ঠদিগের বহনকারী হও। গোসঙ্ঘে সংযুক্ত হইয়াছ ; কিঞ্চিৎক্ষণ এই স্থলেই স্থিতি কর ; তোমার আরোহী রথী মহোদয় পরপক্ষীয় সেনাদলকে জয় করুন। ১৬

॥ इति सामवेदिये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथम प्रपाठकस्य सप्तमः खण्ड समाप्तः ॥

१६—रथो देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । रथाभिमर्शनारोहणे विनियोगः ।

অথ অষ্টমঃ খণ্ডঃ।

ইমা মে বিশ্বতো বীর্য্যো ভব ইন্দ্রশ্চ রক্ষতং॥ পূষং স্ত্বং পর্যাবর্ত্তয়ানষ্টা আয়ন্তুনো গৃহান্॥১॥ ইমা মধুমতী র্মহ্যমনষ্টাঃ পয়সা সহ॥ গাব আজ্যস্য মাতর ইহেমাঃ সন্ত ভূয়সীঃ॥ ২॥

'বিশ্বতোবীর্য্যঃ' সর্ব্বতোবলশালী 'ভব'; 'মে' মম 'ইমাঃ' গাঃ সন্তি, 'তং' তাঃ 'চ' 'রক্ষ' হে 'পূষন্!' দেব! 'ত্বং' এনাঃ 'পর্য্যাবর্ত্তয়' প্রত্যাবর্ত্তস্ব যথা চ ইমাঃ 'অনষ্টাঃ সত্যঃ 'নঃ' অস্মাকং 'গৃহান্' 'আয়ন্তু' প্রত্যাগচ্ছন্তু তথা কুরু॥ ১॥

হে ইন্দ্র! 'ইমাঃ' 'মধুমতীঃ' গাঃ 'পয়সা' দুগ্ধেন 'সহ' 'অনষ্টাঃ' যথা স্যু স্তথা 'মহ্যং' প্রত্যর্পয় কিঞ্চ 'ইমাঃ' 'ভূয়সীঃ' ভূয়স্যঃ বহবঃ 'গাবঃ' 'ইহ' গৃহে 'আজ্যস্য' 'মাতরঃ' জনয়িত্র্যঃ 'সন্তু' ইতি প্রার্থয়ে॥ ২॥

ইন্দ্র তুমি বলশালী হও, আমার এই গোগুলি রক্ষা কর। হে পূষন্! তুমি ইহাদিগকে গোষ্ঠ হইতে প্রত্যাবৃত্ত করাইবা, যাহাতে ইহারা নির্ব্বিঘ্নে আমাদের ভবনে প্রত্যাগমন করিতে পারে!। ১।

হে ইন্দ্র! এই মধুমতী গো-সকল, যাহাতে অপরিমিত দুগ্ধবতী হয়—গোষ্ঠহইতে এইরূপ করিয়া আনয়ন কর এবং

১, ২—ইন্দ্রোদেবতা। অনুষ্টুপ্ছন্দঃ। গোচারণ-ত্যাগে বিনিয়োগঃ।

গবাং শ্লেষ্মাসি গাবো ময়ি শ্লিষ্যন্তু ॥ ৩ ॥ সংগ্রহণ সংগৃহাণ যে জাতাঃ পশবো মম ॥ পূষৈষাং শর্ম্ম যচ্ছতু যথা জীবন্তো অপ্যয়াৎ ॥ ৪ ॥ ভুবন মসি সাহস্র মিন্দ্রায় ত্বা সৃমো দদাৎ ॥ অক্ষতম-

হে বৎস ! ত্বং 'গবাং' 'শ্লেষ্মা' শ্লেষকঃ 'অসি' অতঃ ত্বাং প্রার্থয়ে— 'গাবঃ' ইমাঃ 'ময়ি' মদ্গৃহে শ্লিষ্যন্তু স্বচ্ছন্দাস্তিষ্ঠন্তু ॥ ৩ ॥

হে সংগ্রহণ ! 'মম' গৃহে 'যে' 'পশবঃ' গাবঃ, 'জাতাঃ', তান্ 'সংগৃহাণ' রক্ষাং কুরু, 'এষাং' গবাং, 'পূষা' আদিত্যঃ 'শর্ম্ম' কল্যাণং, তথা যচ্ছতু' দদাতু, যথা 'জীবন্তঃ' প্রাণান্ ধারয়ন্তঃ এতে, 'অপ্যয়াৎ' সময়' মিয়ুঃ [এতে আয়ুষ্মন্তো ভূয়াসুরিতি ভাবঃ] ॥ ৪ ॥

এই বহুতর গোবৃন্দ এই পরিবারে অপরিমিত ঘৃতের জনয়িত্রী হউক । ২ ।

হে বৎসেরা ! তোমরা গো-সকলের স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গনের বস্তু হইতেছ, অতএব প্রার্থনা করি—এই গোগুলি যেন ত্বৎ প্রসাদে মদীয় গৃহকে স্বচ্ছন্দ আলিঙ্গন করে অর্থাৎ এই গৃহেই যেন চিরকাল সুখে বাস করে । ৩ ।

হে সঙ্গ্রহণ ! (পূষাদেব) আমার গৃহে যে সকল পশুরা হইয়াছে, তাহাদিগকে রক্ষা কর, এবং এই পশুদিগের (গোদিগের) পূষাদেব (আদিত্য) এরূপ কল্যাণ করুন, যাহাতে ইহারা প্রাণ ধারণ করতই সময়াতিবাহন করুক, অর্থাৎ

৩—শ্লেষ্মা দেবতা । যজুঃ । গোবৎসনিরীক্ষণে বিনিয়োগঃ ।

৪—অনুষ্টুপ্ছন্দঃ । পূষাদেবতা । বিজয়ন-হোমে বিনিয়োগঃ ।

रिष्टमिन्नादं ॥ ५ ॥ गोपोषणमसि गोपोषस्येशिषे-गोपोषाय त्वा ॥ सहस्रपोषणमसि सहस्र पोषस्ये-

हे स्वधिते ! अस्त्र ! त्वं 'भुवनं' भुवनोपकारकम्, 'असि' भवसि, अतएव पशूनां साहस्रं बाहुल्यनिमित्तं, 'असि', किञ्च 'स्वमोदेवः', 'त्वा' त्वां, 'इन्द्राय' 'अदात्' दत्त-वान्, कथम्भूतं त्वां ?—'अक्षतं' अभग्नं, नूतनं वा, 'अरिष्टं' विघ्ननाशनं 'इलादं' अन्नदातारं ॥ ५ ॥

हे स्वधिते ! 'गोपोषणं' गवां पुष्टिकरं, 'असि', किञ्च गोपो-षस्य गवां पुष्टेः 'इशिषे' वृद्धि-कर्त्ता 'असि' अतएव 'त्वा' त्वां गोपोषाय' गवां पुष्ट्यर्थं, गृहीतवान् इति सम्बन्धः—अपिच यतस्त्वं 'सहस्र पोषणं' बहूनां पशूनां पुष्टि निमित्तं 'असि' 'सहस्र पोषस्य' बहूनां पुष्टेः 'इशिषे' वृद्धिकर्त्ता, 'असि' अतस्त्वं

ইহারা যাহাতে আয়ুষ্মান হউক এইরূপ কল্যাণ প্রদান কর ॥ ৪

হে অস্ত্র ! তুমি ভুবন মাত্রের উপকারক হইতেছ, অত-এব পশুদিগের বাহুল্য বিধানে হেতুভূত তুমিই হইতেছ, এবং অক্ষত, বিঘ্ননাশন এবং অন্নদাতা হইতেছ, দেখ—এই নিমিত্তই তোমাকে স্বম নামক দেবতা ইন্দ্রের প্রতি সমর্পণ করিয়াছেন ॥ ৫

হে অস্ত্র ! তুমি গো-সকলের পুষ্টিকারী হইতেছ, আর তুমি গো-সকলের পুষ্টির উত্তরোত্তর বৃদ্ধিকারী হইতেছ, অতএব গো-সকলের পুষ্ট্যর্থ তোমাকে গ্রহণ করিয়াছি ;

५—स्वधिति र्देवता । गायत्रीच्छन्दः वनस्पत्यां कर्णायां च्छेद्र-करणे विनियोगः ।

श्रिषे सहस्र पोषाय त्वा ॥६॥ लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृतं ॥ यावतीनां यावतीनां व ऐषमो लक्षण मकारिषं ॥ भूयसीनां भूयसीनां व उत्तरा मुत्तराꣳ समां क्रियासं ॥ ७ ॥ इय न्तन्ती गवां माता

'त्वा' त्वां 'सहस्र पोषाय' बहूनां पशूनां पुष्टि-वृद्धार्थं, गृहीत-वान् इत्यनुसन्धानीयम् ॥ ६ ॥

हे गावः ! 'यावतीनां यावतीनां' यावत् सङ्ख्यकानां, 'वः' युष्माकं, 'लोहितेन' औदुम्बरेण, 'स्वधितिना' असिना, 'मिथुनं कर्णयोः' द्वयोः कर्णयोः, 'कृतं' वेदविहितं, 'लक्षणं' छिद्रं 'ऐषमः' अस्मिन वर्षे, 'अकारिषं' कृतवानस्मि, 'भूयसीनां भूयसीनां' तेभ्योपि विपुलानां, 'वः' युष्माकं, 'उत्तरामुत्तरां' उत्तर-स्मिन्२ 'समां' वर्षे, 'क्रियासम्' करिष्यामि ॥ ७ ॥

इयं 'तन्ती' वत्सबन्धनरज्जुः, 'गवां' 'माता' पालयित्री,

এবং তুমি অনেক পশুদিগের পুষ্টির নিমিত্ত হইতেছ ও অনেক পশুদিগের পুষ্টি-বর্দ্ধনকারী হইতেছ, অতএব আমিহ অনেক পশুদিগের পুষ্টি বৃদ্ধি করিবার নিমিত্ত তোমাকে গ্রহণ করিয়াছি ।। ৬

হে গো-সকল ! এ বৎসরে তোমাদিগের যত গুলির কর্ণদ্বয়েতে লোহিত অসিদ্বারা বেদ-বিহিত ছিদ্র করিয়াছি, উত্তরোত্তর বর্ষেতে তাহাহইতে অধিক গুলির ঐ রূপে ছিদ্র করিব ।। ৭

---

६ – दैवतादयः पूर्व्ववत् ।

७—गौर्द्देवता । त्रिपादनुष्टुप्छन्दः । कृत-लक्षणस्य गोरनुमन्त्रणे विनियोगः ।

सवत्सानां निवेशनी ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरा समां ॥ ८ ॥

अस्याः परिवद्धया हारादि प्रापकत्वेन गवां पालन कर्त्तृत्वम् । 'सवत्सानां' वत्ससहितानां गवां 'निवेशनी' प्रापयित्री, दोहन समये मातृजङ्घायां वत्सस्य बन्धनात्, 'सा' तन्ती, 'नः' अस्माकं 'उत्तरा मुत्तरां' उत्तरोत्तरम्, 'समां' वर्षं, 'पयस्वती' क्षीरवती सती, अर्थात् इष्टफलदायिनी सती, 'दुहा' कामानां प्रपूरयित्री स्यादित्यर्थः ॥ ८ ॥

এই রজ্জু গো-সকলের মাতাস্বরূপ হইতেছে এবং বৎ-সের সহিত গোদিগের একত্রকারিণী হইতেছে, সেই রজ্জু উত্তরোত্তর বর্ষে ক্ষীরবতী হইয়া অর্থাৎ ক্ষীরবতী গো-সংযুক্ত হইয়া আমাদিগের কামনা সমুদয়ের পূরণকর্ত্রী হউক ॥ ৮

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे प्रथमप्रपाठकस्य अष्टमः खण्डः । समाप्तश्चायम्प्रपाठकः ॥

—:০:—

८—तन्ती देवता । अनुष्टुपछन्दः । सह्ववत्सस्यानुमन्त्रणे विनियोगः ।

॥ अथ द्वितीयः प्रपाठकः ॥

तत्र

प्रथम-खण्डः

ओं ॥* यः प्राच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥ यो दक्षिणस्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः ॥ १ ॥ यः प्रतीच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः ॥ य उदीच्यां

'प्राच्यां दिशि, पूर्व्वस्यां दिशायां 'यः सर्पराजः' यः सर्पश्रेष्ठः वर्त्तसे, 'एष' मदत्तो 'बलिः' सखलु 'ते' तव ग्रहणीयो भवतु ; 'दक्षिणस्यां दिशि' 'यः सर्पराजः' इत्यादेरपि पूर्व्ववदर्थो वेदितव्यः ॥ १ । २ ॥

পূর্ব্বদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান, হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, দক্ষিণদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্প রাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, পশ্চিমদিগ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল, উত্তর

* "अथातः श्रवणा कर्म" इति गोभिलः ३, ७।

१—४—एषां चतुर्णां सर्पो देवता। निगदः। सर्पबलि-कर्म्मणि विनियोगः।
"उदकं निनीय बलिं निर्वपति यः प्राच्यां दिशि" इत्यादि गो० ३, ७।

দিশি সর্পরাজ এষ তে বলিঃ ॥ ২ ॥ নমঃ পৃথিব্যৈ দং
ষ্ট্রায় বিশ্বভৃন্মা তে অন্তে রিষাম ॥ সংহৃতং মা বিবধী
র্বিহৃতং মা ভিসম্বধীঃ ॥ ৩ ॥ সোমো রাজা স সমস্ত
বো রাজা সোমো স্মাকং রাজা সোমস্য বয়ং স্মঃ ॥

হে 'বিশ্বভৃৎ'! অগ্নে,! তুভ্যং 'নমঃ' কিম্ভূতায়—'পৃথিব্যৈ' পৃথিব্যাঃ 'দংষ্ট্রায়' প্রধান ভূতায়, 'তে অন্তে' তব সমীপে, 'মা রিষাম' মা বিনশ্যেম ॥ কিঞ্চ 'সংহৃতং' সঙ্গতং, অস্মাভিসহ বিবিধং 'মা বধীঃ' মা স্ফোটয়িষ্যসি, 'বিহৃতং' বিযুক্তমপি 'মা অভিসম্বধীঃ' মা অভিনৈষী রিত্যর্থঃ ॥ ২ ॥

'সোমোরাজা' ব্রাহ্মণানাং সোমোদেবঃ রাজা, 'সোমস্তম্বো-রাজা' দর্ভস্তম্বানাং সোমো দেবঃ রাজা; 'সোমো অস্মাকং রাজা' স্রষ্ট, 'সোমস্য' এতন্নামকস্য 'বয়ং' উপাসকাঃ, 'স্মঃ' ভবামঃ; ॥

দিক্ ব্যাপিয়া বর্ত্তমান হে সর্পরাজ! তোমাকে এই বলি প্রদত্ত হইল ॥ ১ ২

হে বিশ্ব সংসারের ভরণকারী অগ্নিদেব! তোমাকে নমস্কার করি, তুমি পৃথিবীর রক্ষণে প্রধানভূত হইতেছ, তোমার নিকটে থাকিয়া যেন বিনাশপ্রাপ্ত না হই, এবং আমাদিগের সহিত যাহারা একত্র হইয়া আছে তাহাদিগকে বিযুক্ত করিওনা এবং যাহারা বিযুক্ত হইয়া আছে তাহাদিগকে পুনঃ সংযুক্ত করিতে আনিওনা ॥ ৩

ব্রাহ্মণদিগের সোমদেব রাজা হইতেছেন, দর্ভস্তম্বেরও সোমদেব রাজা হইতেছেন, সোমদেবই আমা-

অহি জম্ভন মসি সৌমস্তং ব৺ সৌমস্তস্ব মহি জম্ভন মসি ॥ ৪ ॥ যা৺ সংধা৺ সমধত্ত যূয৺ সপ্তঋষিভিঃ সহ ॥ তা৺ সর্পা মাত্যক্রামিষ্ট নমো বো অস্তু মা নো হি৺সিষ্ট ॥৫॥ মা ন স্তোকে তনয়ে মা ন আয়ৌ মা নো

হে সোমস্তম্ব ! সোমদৈবতাকোদ্ভম্ভ স্তম্ব ! 'অহি জম্ভনং' অহীনাং স্তম্ভনং 'অসি' ভবসি, দ্বিৰ্ব্বচন মাদরার্থং ॥৪॥

হে সর্পাঃ ! 'যাং সন্ধাং' সন্ধিব্যবস্থাং, 'সপ্তভিঃ ঋষিভিঃ সহ যূয়ং সমধত্ত' সম্যক্ ধৃতবন্তঃ, 'তাং' ব্যবস্থাং 'মাত্যক্রামিষ্ট' মা অতিক্রমত, 'নমোবোঽস্তু' 'বঃ' যুস্মাকং 'নমঃ' অস্তু, 'নঃ' অস্মান্, 'মা হিংসিষ্ট' যূয়ং ন হিংসত ॥ ৫ ॥

হে ভগবন্ 'রুদ্র' ! 'নঃ' অস্মাকং, 'তোকে' পৌত্রাদি বিষয়ে, তনয়ে পুত্রে, 'আয়ৌ' আয়ুষি, 'গোষু, অশ্বেষু' 'মা রীরিষঃ'

দিগের রাজা হইতেছেন, এই সোমদেবেরই আমরা উপাসক হইতেছি, হে সোমাধিদৈবত দর্ভস্তম্ব ! তুমি সর্প সকলের স্তম্ভনস্বরূপ হইতেছ, তুমিই সর্প সকলের স্তম্ভন স্বরূপ হইতেছ ॥ ৪

হে সর্প সকল ! তোমরা সাতজন ঋষির সহিত সন্ধি পূর্ব্বক যে ব্যবস্থা ভালরূপে গ্রহণ করিয়াছিলে, সে ব্যবস্থা অতিক্রমণ করিও না, তোমাদিগকে আমরা নমস্কার করি, তোমরা আমাদিগকে হিংসা করিও না ॥ ৫

৫—অগ্নির্দেবতা । অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ । ভূমিজপে বিনিয়োগঃ ।

"ভূমৌন্যঞ্চৌ পাণীপ্রনিষ্ঠাপ্য নমঃ পৃথিব্যাইত্যেতং মন্ত্রং জপতি" গো॰ ৪, ১ ।

मानो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। वीरान्मा नो रुद्र भामिनो वधी र्हविष्मन्तः सदमि त्वा हवामहे ॥८॥

शतायुधाय शतवीर्याय शतोतये भिमाति षाहे ॥ शतं

हिंसां मा कृथाः, किञ्च 'नः' अस्माकं 'वीरान्' विक्रान्तान् मनुष्यान्, 'भामिनः' तेजस्विनः, 'मा बधीः' हिंसां मा कृथाः 'हविष्मन्तः' यजन्तो वयं 'त्वा' त्वां, 'हवामहे' आह्वयामः, सदमीति पादपूरणे, पुनः पुनः 'मा नो' वचनं प्रार्थनादौ आवश्यकत्वादुक्तम् ॥ ८ ॥

हे 'इन्द्र' ! 'नः' अस्माकं 'शरदः' अनुपाय-हेतुत्वात् शल्-भूतायाः 'शतं' शतसंख्यां ,'अजीजनत्' अजीजात् अभ्यवीभवत् , सुखेन अतिवाहयतीति स्पष्टार्थः, किञ्च 'यः' इन्द्रः 'नः' 'दुरिताति' दुरुत्तराणि व्यसनानि, 'विश्वा' विश्वानि स-

হে ঐশ্বর্য্যশালিন্ রুদ্র! আমাদের পুত্রপৌত্র প্রভৃতির এবং গো অশ্ব প্রভৃতির পরমায়ু বিষয়ে হিংসা করিও না, এবং আমাদিগের বীর ও তেজস্বী মনুষ্য সকলকে নষ্ট করিও না, যজনশীল আমরা তোমাকে আহ্বান করি ॥ ৮ ॥

হে ইন্দ্র! আমাদিগের শত শত শরৎ ঋতু, সুখে

---

६ – सोमसर्पौ देवते । निगदः । भूमिजपे विनियोगः ।

" दर्भस्तम्बं समूलं प्रतिष्ठाप्य सोमोराजेतिएतं मन्त्रं जपति" गो० ३, ७ ।

७ —सर्पो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । भूमिजपे विनियोगः ।

" यां सर्व्वा समधत्त तिच" गो० ३,७ ।

८ —रुद्रो देवता । जगतीच्छन्दः । होमकर्म्मणि विनियोगः ।

"जहुयात् ** मानस्तोक इति द्वितीयाम्" गो० ३, ८ ।

यो नः शरदो अजीता दिन्द्रो नेष दतिदुरितानि विश्वा ॥९॥ ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति ॥ तेषां यो अज्यानि मजीजि मावहा स्तस्मै

र्व्वाणि, 'अतिनिषत्' अतिशयेन विनाशं नीतवान्, तस्मै इत्थम्भूताय इन्द्राय,—'शतायुधाय', बहु-प्रकारक-वज्राय, 'शतवीर्य्याय' बहुवलाय, 'शतोतये' बहु-प्रकारक-पालनाय, 'अभिमाति' अभिमानात्मकमहत्त्वम् आदत्ते, 'षाहे' स्वाहा, हविस्तदीयः स्यात् ॥ ८ ॥

हे विश्वेदेवाः !, 'ये' 'चत्वारः पथयः' प्रन्यानः, 'देवयानाः' स्वर्गमार्गाः 'अन्तरा' मध्ये, 'द्यावापृथिव्योः' स्वर्ग-मर्त्त्ययोः, 'वियन्ति' विविधं गच्छन्ति, 'तेषां' चतुर्णाम्मध्ये 'यः' देवः, 'अज्यानिं' अमृतत्व-प्राप्ति-हेतुं, 'अजीजिं' क्षेमेण अभीष्टदेशं,

অতিবিহিত করিয়া থাক এবং যে ইন্দ্র আমাদিগের দুরিত সকল একবারে বিনাশ করেন্, এবং যিনি বিবিধ আয়ুধ-বিশিষ্ট, বহুবলশালী, বিবিধ প্রকার পালনকর্ত্তা হইয়া অভিমান করিতেছেন্, তাঁহাকে এই মদীয় হবি প্রদত্ত হইল ॥ ৯ ॥

হে বিশ্বেদেবা-দেব সকল ! দ্যুলোকও মর্ত্ত্যলোকের মধ্যে বিবিধ প্রকার যে চারিটী দেবমার্গ আছে, উহার মধ্যে অমৃত লাভের হেতুভূতও কল্যাণপ্রদ বিধায় অভীপ্সিত,

---

९—इन्द्रो देवता । पंक्तिश्छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

"आज्यहुतीरभि जुहोति शतायुधायेत्येतत् प्रभृतिभिः" गो० ३, ८ ।

नो देवाः परिदत्तेह सर्वे ॥ १० ॥ ग्रीष्मो हेमन्त उत-
नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु ॥ तेषा मृतूनाम्
शत-शारदानां निवात एषा मभये स्याम ॥११॥ सर्व-

'आवहाः' नायकः, 'तस्मै' देवाय, 'इह नः' इहलोके स्थितान् अस्मान् 'परिदत्त' समर्पयत; ॥ १० ॥

'ग्रीष्मः' ग्रीष्मऋतुः, 'हेमन्तः' हेमन्तऋतुः, 'उत' अपिच, 'वसन्तः' वसन्तऋतुः, 'शरत्' शरत्‌ऋतुः, 'वर्षा' वर्षाऋतुः, 'नः' अस्माकम्, एते निर्द्दिष्टाः षट् ऋतवः! यूयं मया प्रार्थ्यन्ते, यत इदं अस्माकं कर्म्म, तत्, युष्मत्-प्रसादेन 'सुवितं' सुष्ठु 'अस्तु' भवतु, किञ्च यत्र कर्म्मणि ते ऋतवः 'शत-शारदान' [illegible] वर्त्तनेन बहु-शरद्-विशिष्टानाम्, 'तेषां' 'एषां' ऋतूनां 'अभये' निर्भये, 'निवाते' आश्रये, 'स्याम' निर्भया भवेम ॥ ११ ॥

স্থানে, যে দেব লইয়া যাইতেছেন, সেই দেবেতে ইহ-লোক স্থিত আমাদিগকে সমর্পণ করুন, এই হবি আপ-নাতে সমর্পিত হইল ॥ ১০ ॥

গ্রীষ্ম ঋতু, হেমন্ত ঋতু, এবং বসন্ত ঋতু ও শরৎ ঋতু, বর্ষা ঋতু, আমাদিগের সম্বন্ধে বর্ত্তমান এই সকল ঋতুগণ! তো-মরা আমাদিগকর্ত্তৃক প্রর্থিত হইতেছ—আমাদিগের অনুষ্ঠিত এই কর্ম্ম তোমাদিগের প্রসাদে উত্তম রূপে সম্পন্ন হউক ;

१०—विश्वेदेवा देवताः । त्रिष्टुप्छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

११— ऋतवो देवताः । त्रिष्टुप्छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

[illegible] परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः। [illegible] वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योग्जीता अहता-स्याम ॥ १२ ॥ भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवास्त्वया वसेन

हे स्तोतारः ! येभ्यः मनुष्य-पितृ-देव-सम्बन्धि-तत्तत्-वत्सर-विशेष-कालेभ्यः इदं हविः 'बृहत् इत्' बृहदेव, यूयं 'कृणुत' कुरुत, तस्मै 'वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय' तत्तत्-काल-विशेषाय 'नमः' 'तेषां' वत्सराणां 'यज्ञियानां' यज्ञहेतुभूतानां, 'सुमतौ' शोभनायां बुद्धौ, वर्त्तमानाः 'वयं' 'ज्योक्' चिरं, 'जीताः' दुरितानां जेतारः सन्तः, 'अहताः' अपीड़िताः, 'स्याम' भवेमेति प्रार्थयते ॥ १२ ॥

हे 'देवाः !' ब्रीहिमयाः, 'त्वा' त्वां, वयं 'सशीमहि'

আমরা একশত শরৎ ঋতু অর্থাৎ শতসংবৎসর যেন তোমাদিগের আশ্রয়ে নির্ভয়ে থাকি, [অর্থাৎ রোগ-শোকাদি-শূন্য হইয়া যেন শতায়ু হই] ॥ ১১ ॥

হে স্তোতৃগণ ! তোমরা মনুষ্য, পিতৃ, দেব সম্বন্ধি যথাক্রমে বৎসর, পরিবৎসর, সংবৎসর নামক যে সকল কাল বিশেষে এই হবি প্রশস্ত করিয়া থাক, সেই সকল বৎসরাদি কাল বিশেষকে নমস্কার করি আমরা যজ্ঞ সকলের জনকস্বরূপ সেই সকল বৎসরাদির অধীন হওতঃ সুমতিশালী হইয়া, চিরকাল যেন দুরিত জয়ী হইয়া রোগাদিদ্বারা অসংস্পৃষ্ট হইয়া থাকি ॥ ১২ ॥

१२—संवत्सरी देवता । त्रिष्टप्छन्दः । आज्यहोमे विनियोगः ।

सशीमहि त्वा ॥ स नो मयोभूः पितेवा विशस्व शं तो काय तन्वै स्योन स्वाहा । १३ ॥ अमोसि प्राण तद्दतं

भुञ्जीमहि, 'त्वया' 'अन्नेन' पाथेयभूतेन, नवं नवं वर्षशतं प्रापिताः वयं सश्रीका भवेमेति भावः, किञ्च यूयं 'नः' अस्मान्, 'श्रेयः' एतन्नवान्न-प्राशन-प्रभव मारोग्यं 'समनैष्ट' सम्यक् प्रापयत, किम्भूतान् नः? 'भद्रान्' युष्मत्-प्रसादेन नवान्न-प्राशन-योग्यान्, अपिच हे ब्रीहे! अस्माभिः यस्त्वं प्राशनः 'सः' ब्रीहिमयो देवः, 'नः' अस्मान्, 'आविशस्व' प्रविश, कथम्भूतस्त्वम्? 'पितेव मयोभूः' पिता इव सुख-जनकः, 'तोकाय' 'शं' सुखरूपो भव 'तन्वै' शरीराय, 'स्योनः' सुखकरो भव ॥ १३ ॥

हे 'प्राण!' त्वं, 'अमः' गतिशीलः, 'असि' भवसि, 'तत्' एतत्, 'ऋतं' सत्यं 'ब्रमीमि' व्यक्तं वच्मि, 'हि' यस्मात्, 'अमाः' गति-शीलाः सन्तः 'सर्व्वं' अशेषं भूतजातम् 'अनु प्रविष्टः'

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! তোমাকে আমরা যেন ভক্ষণ করি, তুমি পাথেয় স্বরূপ, তোমাকর্ত্তৃক নূতন নূতন বর্ষ সকল প্রাপ্ত হইয়া আমরা সকলে যেন শ্রীবিশিষ্ট হই, এবং তোমরা আমাদিগকে এই নবান্ন প্রাশনের আরোগ্য রূপ ফল ভালরূপে প্রদান কর; আমরা তোমাদিগের প্রসাদেই নবান্ন প্রাশন করিতে যোগ্য হইতেছি, অপিচ——

হে ব্রীহিরূপিন্ দেব! যেহেতুক তুমি আমাদিগের ভক্ষ্য হইতেছ অতএব আমাদিগের অন্তরে প্রবেশ কর, তুমি

१३—ब्रीहयो देवताः। त्रिष्टुप्छन्दः। ब्रीहि-हवि-प्राशने विनियोगः।

**ब्रवीम्यमा ह्यसि सर्वमनु प्रविष्टः। स मे जराꣳ रोग-
मपमृज्य शरीरा दपाम एधि मा मृथान इन्द्र ॥१४॥
अग्निः प्राश्नातु प्रथमः स हि वेदयथा हविः। शिवा**

'असि' भवसि, 'सः' प्राणमयो देवः 'मे' मम 'शरीरात्' वपुषः 'जरां' शरीर-परिणाम-रूपां, 'रोगं' दुःखजनकं वपुषि आगन्तुकं ज्वरादि, 'अपमृज्य' अपनीय, 'अपामः' निर्दुष्ट-गतिकः सन्, 'एधि' भव, हे 'इन्द्र!' सर्व्वैश्वर्य्यशालिन्! प्राण! 'नः' अस्मान्, 'मा मृथाः' मरणं देहाद्वियोगरूपं, मा कृथा इत्यर्थः ॥ १४ ॥

'अग्निः!' जाठरोऽग्निः, 'प्रथमः' अग्रे, 'हविः' 'प्राश्नातु' प्राशनं करोतु 'हि' यतः—'स' देवः, 'यथा' येन रूपेण, तद्धविः

পিতার ন্যায় সুখ-জনক হইতেছ, তুমি আমাদিগের পৌত্রাদির নিমিত্ত কল্যাণরূপী হইয়া উদিত হও, আমাদিগের শরীরের নিমিত্তও সুখ-কারক হও অর্থাৎ কোন রোগাদির জনক হইয়া কষ্ট দিও না ॥ ১৩ ॥

হে প্রাণ! তুমি গতিশীল হইতেছ, ইহা আমি সত্যই বলিতেছি, যেহেতু তুমি সমুদয় ভূতবর্গেতে গতিশীল হইয়াই অনুপ্রবেশ করিয়াছ, সেই প্রসিদ্ধ প্রাণরূপী দেব আমার শরীর হইতে জরা ও রোগ সকলকে অপনয়ন করত শরীরে নির্দ্দোষ-গমন-শীল হইয়া অবস্থিতি করুন, হে প্রাণ! তুমি আমাদিগের দেহ-বিয়োগরূপ, মরণ-দুঃখ প্রদান করিও না ॥ ১৪ ॥

१४—प्राणो देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। अङ्गाभिमर्शने विनियोगः॥
"प्रत्यभिमृशेरन् मुखं शिरोङ्गानीत्यनुलोम ममीसीति" गो॰ ३, ८।

অস্মভ্য মোষধীঃ কৃণোতু বিশ্বচর্ষণিঃ স্বাহা ॥ ১৫॥
এতমুত্যং মধুনা সংযুতং যবং সরস্বত্যা অধিবনাবচ-

'বেদ' জানাতি, কিন্তু 'অস্মভ্য'' 'শিবাঃ' কল্যাণকরীঃ' 'ও-ষধীঃ' ধান্য বিশেষান্, সঃ 'বিশ্বচর্ষণিঃ' বিশ্বস্য জগতঃ 'চর্ষণিঃ' স্রষ্টা অগ্নিঃ 'কৃণোতু' দদাতু ॥ ১৫ ॥

হে ইন্দ্র! 'এতং' ('উ' পাদপূরণে) 'ত্যং' তং, 'মধুনা সংযুতং যবং' 'সরস্বত্যা' বাচা, 'বনা' সম্ভজনীয়ং, 'অধ্যবচক্রধি' অতিশয়েন অধিকারং কুরু, গৃহাণেতি যাবত,—ইদানীং যবান্ন গ্রহণে ইন্দ্রস্য ঔচিত্যং দর্শয়তি,—'ইন্দ্রঃ' 'শতক্রতুঃ' শত-সংখ্যাক-যজ্ঞানুষ্ঠায়ী সন্নেব 'সীরপতিঃ' যবাদ্যুৎপাদকস্য 'সীরস্য মেঘস্য' 'পতিঃ' অধিপতিঃ-সংরক্ষণ-কর্ত্তা, 'আসীৎ' অভূৎ এবং যবাদ্যুৎপত্তি-সহকারিণোপি 'সুদানবঃ' শোভন

জাঠর (জঠরে উৎপন্ন) অগ্নি প্রথমে এই হবি ভক্ষণ করুন, যেহেতু তিনি যেরূপ এই হবি অবগত আছেন আমি তদ্রূপ জানি না, কিন্তু সেই বিশ্ব সংসারের স্রষ্টা অগ্নি আমাদিগকে কল্যাণ-জনক ধান্যাদি প্রদান করুন ॥ ১৫ ॥

হে ইন্দ্র! বাক্য দ্বারা সম্যক্‌রূপে ভজনীয়, মধু-সম্মি-শ্রিত, এই যব, ভালরূপে অধিকার কর, শতবার যজ্ঞানুষ্ঠান করিয়া শতক্রতু নাম ধারী ইন্দ্র দেবতা যবাদি অন্ন সকলের উৎপাদক মেঘের অধিপতি হইয়াছেন, এবং যবাদি অন্নের

১৫—জাঠরোঽগ্নি দেবতা। অনুষ্টুপ্‌ছন্দঃ। শ্যামাকচরু-প্রাশনে বিনিয়োগঃ।
"অগ্নিঃ প্রাশ্নাতু প্রথম মিতি শ্যামাকানাম্" গো০ ৩, ৮।

র্দ্ধি ॥ ইন্দ্র আসীৎসীরপতিঃ শতক্রতুঃ কীনাশা আসন্মরুতঃ সুদানবঃ স্বাহা ॥ ১৬ ॥

দাতারঃ, 'মরুতঃ' বায়ু-বিশেষাঃ, 'কীনাশাঃ' বর্ষণ-কর্ত্তারঃ, আসন্ অভূবন্ ॥ ১৬ ॥

উৎপত্তিতে সহকারী, কল্যাণ-প্রদ, মরুৎ নামক বায়ু বিশে-ষেরাও বর্ষণকারী হইয়াছেন ॥ ১৬ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয়প্রপাঠকস্য প্রথমঃ খণ্ডঃ ॥

——:০:——

অথ দ্বিতীয়ঃ খণ্ডঃ ।

***প্রথমা হব্যুবাস সা ধেনুর ভবদ্যমে ॥ সা নঃ পয়-স্বতী দুহা উত্তরামুত্তরাꣳসমাম্ ॥ ১ ॥ প্রতিক্ষত্রে**

হে অগ্রহায়ণি দেবতে ! 'সা' 'হব্যুবাস' হবিষি পয়োলক্ষণে কারণতয়া বসতি যা তথারূপা, 'ধেনুঃ' 'যমে' ধর্মরাজস্য তো-ষার্থং 'প্রথমা' অগ্র্যা 'অভবত্' ভবতি । 'সা' তাং 'পয়স্বতী' পয়স্বতীং বহুতর-দুগ্ধবতীং ধেনুং 'উত্তরাম্ উত্তরাম্' উত্তরোত্তরং 'সমাং' বর্ষং 'দুহাং' অভ্যধিক-দুগ্ধদায়িণীং কুরু ইতি শেষঃ ॥ ১ ॥

হে আগ্রহায়ণী দেবতা! ধর্ম্মরাজের পরিতোষার্থ যে ধেনু সর্ব্ব প্রথমে দুগ্ধরূপ হবির কারণরূপে আবির্ভূত হইতে-

১৬—ইন্দ্রো দেবতা । জগতীচ্ছন্দঃ । যবচরুপ্রাশনে বিনিয়োগঃ ।

"এতমুত্যং মধুনা সংযুত মিতি যবানাম্" গো০ ৩, ৮ ।

* "অগ্রহায়ণ্যাং বলি হরণম্" গো০ ৩, ৯ ।

১—আগ্রহায়ণী দেবতা । অনুষ্টপ্‌ছন্দঃ । চরুহোমে বিনিয়োগঃ ।

প্রতিতিষ্ঠামি রাষ্ট্রে প্রত্যশ্বেষু প্রতিতিষ্ঠামি গোষু ॥ প্রতি-প্রাণে প্রতিতিষ্ঠামি পুষ্টৌ প্রত্যঙ্গেষু ॥ প্রতি-তিষ্ঠাম্যাত্মনি ॥ ২ ॥ প্রতিদ্যাবাপৃথিব্যোঃ প্রতি-

হে অগ্নে ! 'প্রতিক্ষত্রে' ক্ষত্রং ক্ষত্রং প্রতি প্রত্যেক-বেশ্মনি 'প্রতিতিষ্ঠামি' প্রতিতিষ্ঠেয়ম্ প্রথিততয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয় মিত্যর্থঃ। 'রাষ্ট্রে' রাজ্যমধ্যে চ তথৈব গুণবত্তয়া 'প্রত্যশ্বেষু' অশ্বমশ্বং প্রতি প্রতিতিষ্ঠামি' সুচালকতয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ । 'গোষু' গো-প্রভৃতি-পশুষু চ তথৈব পালকতয়া । 'প্রতিপ্রাণে' প্রাণং প্রাণং প্রতি প্রাণিমাত্রে 'প্রতিতিষ্ঠামি' সুহৃত্তয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্। 'পুষ্টৌ' পুষ্টিবিষয়ে বলাদৌ চ তথৈব বলবত্তয়া। 'প্রত্যঙ্গেষু' হস্ত-পদাদিষু 'প্রতিতিষ্ঠামি' দার্ঢ্য-কর্ম্মোপযুক্তত্বাদিনা প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্। 'আত্মনি' চৈতন্যে চ তথৈব জ্ঞানবত্তয়া প্রতিষ্ঠিতো ভবেয়ম্ ॥ ২ ॥

ছেন, বহুতর দুগ্ধবতী সেই ধেনুকে উত্তরোত্তর বর্ষে অত্যধিক দুগ্ধদাত্রী কর ॥ ১ ॥

হে অগ্নে! আমি যেন বিখ্যাত হওত প্রতি ক্ষত্রিয় গৃহে প্রতিষ্ঠিত হই, রাজ্য মধ্যেও গুণবত্তা প্রচার হওত যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এবং প্রতি অশ্বেতে সুচালকতা গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, সেইরূপ গোপ্রভৃতি পশুবিষয়েও যেন পালন কারিতা গুণে প্রতিষ্ঠিত হই, এমন কি প্রাণিমাত্রেতেই সৌহৃদ্য গুণে যেন প্রতিষ্ঠিত হই, এইরূপ পুষ্টি-বিষয়ে, বলাদি বিষয়ে,

২—অগ্নির্দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। জপে বিনিয়োগঃ।

"প্রতিক্ষত্র ইত্যেষা ব্যাহৃতি র্জপতি" গো০ ৩, ৫।

तिष्ठामि यज्ञे ॥ ३ ॥ स्योना पृथिविनो भवानृ-क्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म सप्रथोदेवा-न्मा भया दिति ॥ ४ ॥*॥ यत्पशव: प्रध्यायत मनसा

हे अग्ने ! 'प्रतिद्यावापृथिव्योः' सर्व्वत्रैव 'प्रतितिष्ठामि' प्रतिष्ठितो भवेयम् ! अद्य इह 'यज्ञे' च प्रतिष्ठितो भवेयम् ॥३॥

हे 'पृथिवि !' 'अनृक्षरा' पापशून्या 'निवेशनी' प्राणिनां धारणकारिणी त्वं 'स्योना' कल्याणरूपा 'भव'। 'सप्रथः' विस्तीर्णरूपा त्वं 'नः' अस्मभ्यं सर्व्वत्रैव 'शर्म्म' कल्याणं 'यच्छ' देहि। 'देवात्' देव-कृतात् 'भयात्' 'मा' मां पाहीति शेषः ॥ ४ ॥

হস্তপাদ প্রভৃতি সমস্ত অঙ্গবিষয়ে, দৃঢ়তাজনক কার্য্য কারিতা গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই এবং জীবাত্মা বিষয়ে বিদ্যারূপ গুণেও যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ২ ॥

হে অগ্নে! প্রতি দ্যাবা পৃথিবীর সর্ব্বত্রই যেন প্রতিষ্ঠিত হই, অদ্য এই যজ্ঞে যেন প্রতিষ্ঠিত হই ॥ ৩ ॥

হে পৃথিবি! তুমি পাপশুন্যা ও প্রাণিদিগের ধারণ কারিণী হইতেছ, এবং অতিশয় বিস্তৃত হইতেছ, তুমি আমাদিগের সম্বন্ধে কল্যাণস্বরূপ হইতেছ, অতএব সর্ব্বত্র আমাদিগকে কল্যাণ প্রদান কর, এবং দৈব ভয় হইতে আমাকে রক্ষা কর ॥৪ ॥

३—अग्नि र्देवता । यजुः । जपे विनियोगः ।

४—पृथिवी देवता । अनुष्टुप्छन्दः । जपे विनियोगः !

स्योना पृथिवि नो भवेत्येतामृचं जपति गो० ३, ९ ।

* अथ अष्टका प्रकरणम् । अष्टका रात्रि देवतेत्यादि गो०, ३, १० ।

हृदयेन च॥ वाचा सहस्रपाशया मयि बध्नामि वो मनः ॥५॥* अनु त्वा माता मन्यतामनु पिता न भ्राता

हे 'पशवः'! यूयं 'यत्' येन 'मनसा हृदयेन च' 'प्रध्यायत' चिन्तां कुरुथ, तदेव 'वः' युष्माकं 'मनः' मानसम् अद्य 'सहस्रपाशया' बहुतर-रज्जु-रूपया 'वाचा' विनयवाक्येन 'बध्नामि' स्ववशं नयामि ॥ ५ ॥

हे पशो! देव पैत्र्य च कर्मणि विनियुक्तं 'त्वा' त्वां, 'माता' त्वदीय-जननी 'अनु मन्यताम्' देव-पितृ-कार्य्य-साधनाय शरीर-विसर्जने अनुमतिं ददातु। 'पिता' त्वदीय-जनकः 'अनुमन्यताम्'। 'भ्राता' वैमात्रेयादिः त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सगर्भ्यः' सोदरः त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सखा' त्वदीयः 'अनुमन्यताम्'। 'सयूथ्यः' त्वदीय-यूथ-चारी अपरापरश्च 'अनुमन्यताम्' ॥ ६ ॥

হে পশুসকল! তোমরা সকলে হৃদয়ের সহিত যে মনের দ্বারা ধ্যান করিয়া থাক, তোমাদিগের সেই মানস, অদ্য বিনয় বাক্য স্বরূপ বহুতর রজ্জুদ্বারা বন্ধন করিতেছি অর্থাৎ স্ববশে আনিতেছি ॥ ৫ ॥

হে পশো! দৈব, পৈত্র্য কার্য্যে বিনিযুক্ত তোমাকে তোমার জননী দেব পিতৃ কার্য্য সাধনের নিমিত্ত শরীর বিসর্জন করিতে অনুমতি প্রদান করুক, তোমার জনকও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার বৈমাত্রেয়াদি ভ্রাতারাও অনুমতি

५—पशवो देवताः। अनुष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः।

जुहयात् यत् पशवः प्रध्याय तेति गो० ३, ८।

नु सगर्भ्यो नु सखा सयूथ्यः ॥६॥ आत्तं देवेभ्यो हविः ॥७ यत्पशुर्मायुमकृतोरो वा पद्भिराहत । अग्नि र्मा तस्मा देनसो विश्वान्मुञ्चत्वंहसः ॥ ८ ॥ अग्ना वग्निश्च

हे पशो ! त्वं 'देवेभ्यः' देवार्थं 'हविः' भक्ष्यम् इति 'आत्तम्' गृहीतम् ॥ ७ ॥

हे अग्ने ! अयं 'पशुः' 'यत्' यावत् परिमितम् 'आयुः' 'अकृत' प्राप्तवान् भोग्यत्वेनेति शेषः, तत् त्वं जानासीति वाक्यान्वयः । किञ्च 'ऋतः' ऋतं यज्ञं 'रोपद्भिः' स्थापयितृभिः अस्माभिः 'आहत' अयं पशु राहन्यते इति त्वं वेत्सि । 'सः' 'त्वम्' 'अग्निः' 'ह' निश्चयम् 'तस्मात्' आयुषो न्यूनीकरणरूपात् 'एनसः' पापात् 'मा' मां (न केवलं मामेव) अपितु 'विश्वान्' सर्व्वानेव याज्ञिकान् 'मुञ्च' मोचय ॥ ८ ॥

প্রদান করুক, তোমার সোদর ভ্রাতাও অনুমতি প্রদান করুক, তোমার সখা অনুমতি প্রদান করুক, অপরাপর তোমার দল-প্রবিষ্টেরাও অনুমতি প্রদান করুক ॥ ৬ ॥

হে পশো ! তুমি দেবতাদিগের নিমিত্ত হবি (ভক্ষ্য) রূপে গৃহীত হইয়াছ ॥ ৭ ॥

হে অগ্নে ! এই পশু যাবৎ পরিমিত আয়ু প্রাপ্ত হইয়াছিল, তাহা তুমি জ্ঞাত আছ, এবং সত্য যজ্ঞানুষ্ঠায়ি আমা-

---

६ – पशु र्देवता । यजुः । अनुमन्त्रणे विनियोगः ।
इत्वा चानु मन्त्रयेतानुत्वा माता मन्यतामिति गो० ३, ९ ।
७ – पशु र्देवता । यजुः । उदक-सेचने विनियोगः ।
आत्तं देवेभ्यो हविरित्यथैनामुदगुत् सृप्य गो० ३, ९ ।
८ – अग्नि र्देवता । अनुष्टुप्छन्दः । होमे विनियोगः ।
पितृ-दैवत्ये संज्ञप्तायां जुहुयात् यत् पशु र्मायुमकृतेति गो० ३, ९ ।

रति प्रविष्ट ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः ॥ स नः स्योनः सुयजा यजा च यथा देवानां जनिमानि वेद ॥ ८ ॥ औलूखलाः संप्रवदन्ति ग्रावाणो हविष्कृ-

'ऋषीणां पुत्रः' ऋषिभिर्मन्थनेनोत्पाद्यमानत्वात् ऋषीणां तनय इव 'एषः' यः 'अग्निः', 'अधिराजः' अध्यधिकदीप्तः सन् 'अग्नौ' आहवनीयाग्नौ 'प्रविष्टः' प्रवेशं कुर्वन् 'चरति' हविर्भक्षयति। 'सः' अग्निः 'नः' अस्माकं 'स्योनः' कल्याणकरः भवतु। अहञ्च 'सुयजा' याज्ञिकः 'देवानाम्' तेषां 'जनिमानि' उत्पत्त्यादीनि 'यथा' 'वेद' जानामि, तथैव 'यजा' यजे ॥ ८ ॥

'परिवत्सरीणाम्' प्रति वत्सर-सम्पाद्यमानानां अष्टकाणाम् सिद्ध्यर्थं 'हविष्कृण्वन्तः' हविष उपयोगिन स्तण्डुलान्

দিগকর্ত্তৃক এই পশু হত হইতেছে—ইহাও তুমি জানিতেছ, অতএব আয়ুর ন্যূনতা করণ জন্য প্রত্যবায় হইতে অবশ্যই তুমি আমাকে—কেবল আমাকে নয়, এইরূপ সত্য যজ্ঞানুষ্ঠানে ব্রতী তাবৎকেই মোচন করব ॥ ৮ ॥

ঋষিদিগকর্ত্তৃক অরণিদ্বয় মন্থনে উৎপন্ন বিধায় ঋষিদিগের পুত্ররূপী যে অগ্নি অত্যধিক প্রদীপ্ত হওত আহবনীয় অগ্নিতে প্রবেশ করিয়া হবি ভক্ষণ করেন, সেই অগ্নি আমাদিগের কল্যাণ-প্রদ হউন, আমি যাজ্ঞিক, সেই সকল দেবদিগের যেরূপ উৎপত্ত্যাদি অবগত আছি, তদনুরূপেই যাগ করিতেছি ॥ ৯ ॥

८—अग्नि र्देवता। विराट् त्रिष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः।
चतुर्गृहीत माज्यम् गृहीत्वाष्टर्च प्रथमया जुहुयादग्रावग्नि रिति गो० ४, १।

स्वन्तः परिवत्सरीणाम्॥ एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा ज्योग् जीवेम बलिहृतो वयं ते ॥ १० ॥ इडायास्पदं घृतवत्सरीसृपं जातवेदः प्रति हव्या गृभाय॥ ये

निष्पादयन्तः 'औलूखलाः' उलूखल-रूपेण परिणताः इमे 'ग्रावाणः' पाषाणाः 'सम्प्रवदन्ति' अस्फुट-शब्दं कुर्व्वन्ति। हे 'एकाष्टके!' एक-संख्यान्विते अद्य वर्षीये अष्टके! 'ते' त्वत् सिद्धार्थं 'बलिहृतः' बल्याहरणकारिणः 'वयं' 'सुप्रजसः' सुन्दर-प्रजया समन्विताः किञ्च 'सुवीराः' समर्थाश्च सन्तः 'ज्योक्' दीर्घकालं 'जीवेम' प्राणधारणं कुर्म्म इति प्रार्थये ॥ १० ॥

हे 'जातवेदः'! अग्ने! 'इड़ायास्पदम्' अन्नस्य स्थानं 'घृतवत्' घृतेन सिक्तम् अतएव 'सरीसृपं' सुचिक्कणं 'प्रतिहव्या'

প্রতি বৎসরে সম্পাদ্যমান অষ্টকা সকলের সাধন করিতে হবির উপযোগী তণ্ডুলের নিষ্পাদন কারি, উলূখল রূপে পরিণত, এই সকল পাষাণেরাও সম্যক্‌রূপে অস্ফুট শব্দ করিতেছ, হে একাষ্টকে! (এই বৎসরের অষ্টকা) তোমার সাধনে প্রবৃত্ত আমরা বলির আহরণ করিতে তৎপর হইয়া সুন্দর পুত্রাদি দ্বারা সমন্বিত এবং সমর্থ থাকিয়া দীর্ঘকাল যেন জীবিত থাকি—ইহা প্রার্থনা করি—॥ ১০ ॥

হে জাতবেদঃ অগ্নে! তুমি অন্নের আস্পদ, ঘৃতসিক্ত, অতএব চিক্কন, এইরূপ হবনীয় দ্রব্য মাত্রই গ্রহণ করিয়া আমাকে এই বর দাও—বিবিধাকারে বর্ত্তমান যে সকল গ্রাম্য গো

१०,११—अनयोः अष्टका देवता। त्रिष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः।

तृतीय पात्र मवदाय द्वितीयातृतीयाभ्यां जुहोति गो० ४, १।

গ্রাম্যাঃ পশবো বিশ্বরূপা স্তেষাং সপ্তানাং ময়ি রন্তি রস্তু॥১১॥ এষৈবসা যা পূর্ব্বা ব্যৌচ্ছত্ সেয মপ্স্বন্তশ্চরতি প্রবিষ্টা॥ বসূ জ্জিগায প্রথমা জনিত্রী বিশ্বে হ্যস্যাং মহিমানো অন্তঃ॥১২॥ এষৈব সা যা প্রথমা

হবনীয়-দ্রব্যমাত্রং ‘গৃভায়' গৃহাণ। গৃহীত্বা চ মহ্যমমুং বরং দেহি—যত্, ‘যে গ্রাম্যাঃ' ‘বিশ্বরূপাঃ' বিবিধাত্মকাঃ ‘পশবঃ' গোমহিষ্যাদয়ঃ তেষাং ‘সপ্তানাং' বহূনাং ‘ময়ি' মদ্‌গৃহে ‘রন্তি' রমণং-প্রসন্ন ভাবঃ ‘অস্তু' ॥ ১১ ॥

‘যা' অষ্টকা ‘পূর্ব্বা' প্রথমকালীনৈব ‘বি ঔচ্ছত্' বিশেষেণ প্রকাশমানবতী ‘সা' এব ‘এষা'। কিঞ্চ যা ‘অপ্সু' নদী-তড়াদি স্থিতেষু ‘অন্তঃ প্রবিষ্টা' সতী ‘চরতি' ভ্রমতি ‘সা এব ‘ইয়ম্'। বসূঃ পার্থিবান্ সমস্তদ্রব্যান্ ‘জিগায' জিতবতী। ইয়ঞ্চ প্রথমা ‘প্রধানা' ‘জনিত্রী' জানয়িত্রী কামানা মিতি শেষঃ। ‘অস্যাম্ অন্তঃ অষ্টকায়াং মধ্যে ‘বিশ্বে' সর্ব্বে ‘হি' এব ‘মহিমানঃ' সন্তি ॥ ১২ ॥

মহিষ প্রভৃতি পশু সকল রহিয়াছে তৎসমুদয়েরই আমার গৃহে প্রসন্নতা থাকুক্ ॥ ১১ ॥

পূর্ব্বকালেতে যে অষ্টকা বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল, সেই এই অষ্টকা, এবং যে অষ্টকা জলেতে প্রবিষ্ট হইয়া ভ্রমণ করিতেছিল, সেই অষ্টকা এই পার্থিব সমস্ত দ্রব্য জয় করিয়াছে, এই প্রধানা, ও কামনা সকলের জননকারিণী হইতেছে, এই অষ্টকারই মধ্যে সমস্ত মহিমা আছে ॥ ১২ ॥

১২—অষ্টকা দেবতা ত্রিষ্টুপ্ছন্দঃ। অবদানে বিনিয়োগঃ।
চতুর্থী-পঞ্চমীভ্যাং ষষ্ঠী-সপ্তমী-ভ্যাঞ্চ শেষ মবদায় গো০ ৪, ১.।

व्यौच्छत् सा धेनु रभवद्विश्वरूपा ॥ संवत्सरस्य या पत्नी सा नोऽस्तु सुमङ्गली ॥१३॥ यां देवाः प्रति पश्यन्ति रात्रीं धेनु मिवायतीं ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरां॑ समाम् ॥ १४ ॥ संवत्सरस्य प्रतिमां

'एषा एव सा' अष्टका, 'या' 'प्रथमा' पूर्व्वकालीना एव 'वि ऐच्छत्' विशेषं प्रकाशमाप्तवती । 'सा' इयं 'विश्वरूपा' बहुजनसेव्यत्वात् बहुरूपा, 'धेनुः' यथाभिलषितप्रदत्वात् काम-धेनुरिव । 'या' इयं 'संवत्सरस्य' 'पत्नी' भोग्यत्वात् उच्यते वेदे, 'सा' 'नः' अस्माकं 'सुमङ्गली' कल्याणी 'अस्तु' ॥ १३ ॥

'देवाः' द्योतमानाः 'यां' 'धेनुम् इव आयतीम्' यथा गोष्ठात् धेनु रागच्छतीव तथैव वर्षान्ते पुनरागच्छतीव अष्टका इति तां 'रात्रीं' उत्तराष्टकां प्रति 'पश्यन्ति' आगमन-पथं निरीक्षन्ति, 'सा' अष्टका रात्री 'दुहा' 'कर्म्म-फलानि दुह्यन्ते यस्या स्तथा भूता 'उत्तराम् उत्तराम्' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'पयस्वती' अभ्यधिक-दुग्धवतीभव तु ॥ १४ ॥

এই অষ্টকাই—সেই, যে পূর্ব্বকালেতে বিশেষরূপে প্রকাশ পাইয়াছিল, যে অষ্টকা বহু লোকের সেব্য বিধায়, বহুবিধ অভিলষিত প্রদান করায় কামধেনু স্বরূপ, এবং যে—সংবৎসর কাল পর্য্যন্ত ভোগ্য হওায় সংবৎসরের পত্নীস্বরূপ, সেই অষ্টকা আমাদিগের সমন্ধে সুমঙ্গল দায়িনী হউক ॥ ১৩ ॥

গোষ্ঠ হইতে ধেনুর আগমনের ন্যায় বর্ষান্তে পুনরাগমশীল যে—সেই উত্তর-অষ্টকা, তাহার আগমন পথ দেব-

१३, १४, १५—एषां सर्व्वं पूर्व्ववद् । वृहतीच्छन्दः इत्येव भेदः ।

त्वा रात्रि! यजामहे॥ प्रजामजर्य्यां नः कुरु रायस्पोषेण सꣳसृज॥ १५॥ अन्वियन्नो अनुमति र्यज्ञं देवेषु मन्यताम्। अग्निश्च हव्यवाहनः स नोऽदाद्दाशुषे मयः॥ १६॥

हे 'रात्रि'! अष्टकाया रजनि! 'संवत्सरस्य' 'प्रतिमां' परिमापयित्रीं 'यां' 'त्वा' त्वां 'यजामहे' वयं, सा त्वं 'नः' अस्माकं 'प्रजां' 'अजर्य्यां' जरा-शून्यां 'कुरु'; किञ्च अस्मान् 'रायस्पोषेण' धनस्य सम्बन्धि-पोषणेन 'सं सृज' अतिसर्जय॥ १५॥

'इयं' 'अनुमतिः' देवी 'देवेषु' इन्द्रादिषु 'यज्ञम्' इदं 'अनुमन्यताम् बोधयताम्'। 'हव्यवानः' हव्यानां वहनकारी 'च' 'सः' अयम् 'अग्निः' 'दाशुषे' हविर्दत्तवते यजमानाय 'नः' मह्यं 'मयः' सुखम् 'अदात्' ददातु॥ १६॥

তারা নিরীক্ষণ করিতেছেন, সেই অষ্টকা রাত্রি (উত্তরাষ্টকা) অত্যধিক দুগ্ধবতী গোর ন্যায়-উত্তরোত্তর বর্ষে ইষ্ট-ফল-প্রসবিনী হউক॥ ১৪॥ হে অষ্টকা-রাত্রি! তুমি সংবৎসরের পরিমাণকর্ত্রী, তোমাকে আমরা পূজা করিতেছি, তুমি আমাদিগের অপত্যাদিকে জরা শূন্য কর, এবং আমাদিগকে ধনের রক্ষণ সহকারে পালন কর॥ ১৫॥

এই অনুমতি দেবী ইন্দ্রাদি দেবগণেতে যজ্ঞ বোধন কারন্, এবং হব্য-সমুদয়ের বহনকারী এই অগ্নি দেবতা, দত্ত-হবিষ্ক* আমাদিগকে সুখ প্রদান করুন॥ ১৬॥

॥ इति सामवेदीये मन्त्र-ब्राह्मणे द्वितीयप्रपाठकस्य द्वितीय खण्डः समाप्तः॥

१६—अग्निर्देवता। अनुष्टुप्छन्दः। होमे विनियोगः। सौविष्ट कृत मष्टम्या जुहुयात्, गो० ४.१

*দত্ত-হবিষ্ক—দত্ত হইয়াছে হবি যাহা কর্তৃক।

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वं ॥ ६ ॥
अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषा इषत् ॥ ७ ॥
नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः शूषाय ॥

'पितरः' 'अत्र' पिण्डे 'मादयध्वम्' तृप्यत, 'यथा भागम्' यो यस्य भागः तम् 'आवृषायध्वम्' अभिलषत ॥ ६ ॥

अनेन पिण्डदानेन 'अमी' 'पितरः' 'मदन्तः' तृप्तवन्तः सन्तः 'यथा भागम्' यो यस्य भागः तं 'आवृषा इषत्' अभिलषितवन्तः गृहीतवन्तः ॥ ७ ॥

हे 'पितरः' 'वः' युष्मभ्यं 'नमः' नमामि, कस्मै? इत्युच्यते— 'जीवाय' दीर्घजीवनाय । 'शूषाय' बलाय । 'घोराय' परितृप्तये

ক্রমে আচরিত, পথেরদ্বারা এই স্থানে আগমন কর; আসিয়া এই সংসারে আমাদিগকে দ্রব্য দাও, এবং কল্যাণ, দাও ; অপিচ, অন্নধন এরূপ প্রদান কর যদ্বারা পুত্র পৌত্রাদি সকল অনায়াসে জীবন নির্ব্বাহ করিতে পারে ॥ ৫ ॥

পিতাসকল এই পিণ্ডে তৃপ্ত হউন যাহার যে ভাগ তাহা লাভ করুন ॥ ৬ ॥

এই পিণ্ডদান করায় এই সকল পিতারা পরিতৃপ্ত হইয়া আপনার আপনার ভাগ গ্রহণ করিলেন ॥৭॥

হে পিতাসকল! আপনাদিগকে নমস্কার করিতেছি, দীর্ঘজীবী হইবার নিমিত্ত, বলী হইবার নিমিত্ত, পরিতৃপ্ত

६, ७— अनयोः पितरौ देवताः । यजुः । जपे विनियोगः ।

'जपत्यत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वमित्यपर्य्यावृत्य पुरोच्छ्वासादभिपर्य्यावर्त्त-मानो जपे दमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषा इषतेति" गो० ४,३ ।

नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसाय ॥८॥ नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यवे॥ नमो वः पितरः पितरो नमो वः॥ ९ ॥ गृहान्नः पितरो दत्त ॥ १० ॥ सदोवः पितरो देष्म॥ ११ ॥

'रसाय' आनन्दाय ॥ ८ ॥ स्वधायै' अन्नाय 'मन्यवे' क्रोधाय— क्रोधमूल-सम्पत्तये। अन्यत् सुगमम् ॥ ९ ॥

हे 'पितरः !' 'गृहान्नः' गृहस्य अन्नानि 'दत्त' प्रयच्छत। अथवा 'नः' अस्मभ्यं 'गृहान् 'दत्त' प्रयच्छत ॥ १० ॥

हे "पितरः' 'वः' युस्मभ्यं 'सदः' स्थानं 'देष्म' वय मिति शेषः ॥ ११ ॥

হইবার নিমিত্ত, আনন্দ লাভের নিমিত্ত, অন্নলাভের নিমিত্ত, ইহ লোকে উপকারি-ক্রোধের মূলীভূত-সম্পত্তির নিমিত্ত, বার বার নমস্কার করিতেছি ॥ ৮ ॥—॥ ৯॥

হে পিতাসকল! গৃহের অন্ন [ভক্ষ্য] সকল প্রদান কর, অথবা আমাদিগকে গৃহ প্রভৃতি স্থাবর পদার্থ সকল প্রদান কর ॥১০ ॥

হে পিতাসকল! তোমাদিগকে আমরা এই স্থান উপবেশন করিতে দিলাম ॥ ১১ ॥

८, ९— मनयोः, पितरो देवता:। उष्णिक् छन्दः। जपे विनियोगः।

'पूर्व्वस्यां कर्ष्वां दक्षिणेनोत्तानौ पाणी कृत्वा—नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरो शूषायेति मध्यमायां, सव्योत्तानौ-नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो रसायेत्युत्तमायां, दक्षिणोत्तानौ—नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो मन्यव इति, अथाञ्जलिकृतो जपति – नमो वः पितरः पितरो नमो व इति गो० ४, ३।

१०— पितरो देवता। यजुः। गृहिण्य वेक्षणे विनियोगः।

'गृहानवेक्षते गृहान्नः पितरो दत्तेति' गों ४, ९।

११ — पितरो देवताः। यजुः।पिण्डावेक्षणे विनियोगः।

'पिण्डानवेक्षते सदो वः पितरो देष्मेति' गों ४, ११।।

एतद्वः पितरो वास॥१२॥ ऊर्जं वहन्तीः रमृतं घृतंपयः कीलालंपरिस्रुतं स्वधास्थतर्पयत मे पितॄन्॥१३॥आधत्त पितरोगर्भंकुमारंपुष्करस्रजं। यथेहपुरुषस्यात्॥ १४ ॥

हे 'पितरः !' 'वः' युष्माकम् 'एतत्' 'वासः' परिधेयं वसनम् ॥ १२ ॥

हे आपः ! यूयं 'स्वधा' पितॄणां परमाशिषः 'स्थ' भवथ, अतः 'ऊर्जम्' अन्नम् 'अमृतम्' जरामृत्यु-शून्य-कारिणम् मधु, 'घृतं', 'पयः' क्षीरं 'कीलालम्' जलञ्च 'परिस्रुतं' इदं सर्व्वं 'वहन्तीः' वहन्त्यः 'एतॄन्' इमान् 'तर्पयत' परितृप्तान् कुरुत ॥ १३ ॥

हे 'पितरः!' 'पुष्करस्रजम्'। अम्बरमाला-धारिणम् सूर्य्यं चन्द्रमिव वा 'कुमारं' पुत्ररूपं 'गर्भं' 'आधत्त' प्रदत्त । पुनश्चो-

হে পিতাসকল ! তোমাদিগকে আমরা এই বস্ত্র পরিধান করিতে দিলাম ॥ ১২ ॥

হে জল ! তোমরা পিতৃদিগের পরম সুখ-দায়ক হইতেছ এই হেতু অন্ন, ও জরা-মৃত্যু-প্রভৃতির বিনাশক মধু, ঘৃত, দুগ্ধ, এবং পরিস্রুত জল এই সকল বহন করত এই সকল পিতাকে পরিতৃপ্ত কর ॥ ১৩ ॥

१२—पितरो देवताः। यजुः। सूत्रदाने विनियोगः।
सूत्रतन्तुं गृहीत्वा ** पिण्डे निदध्यात् ** पितुर्नाम गृहीत्वा सावेतत्ते वासो—येचात्रत्वानुयांश्च त्वमनु तस्मै ते स्वधेति, गो० ४,३ ॥

१३—पितरो देवताः। पिपीलिक मध्योष्णिक् छन्दः। पिण्डपरिषेके विनियोगः ॥
'पिण्डान् परिषिञ्चे दूर्जं वहन्तीरिति' गो० ४, ३ ।

१४—पितरो देवताः। गायत्री छन्दः पिण्ड प्राशने विनियोगः।
'मध्यमं पिण्डं पत्नी पुत्रकामा प्राश्नीयादाधत्त पितरो गर्भमिति गो० ४,३ ।

अभून्नो दूतो हविषो जातवेदा अवाड्ढव्यानि सुरभीणि कृत्वा ॥ प्रादात् पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन् प्रजानन्नग्ने पुनरेहि योनिं ॥ १५ ॥ बहु वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैतान्वेत्थ निहितान् पराचः ॥ मेदसः कुल्या अभितान्

च्यते—'इह' मद्गर्भे 'पुरुषः' पुरुष इति विख्यातः तनयो 'यथा-स्यात्' तथा प्रसन्नो भवेति शेषः ॥ १४ ॥

'जातवेदाः' अग्निः 'नः' अस्माकं सम्बन्धिनः 'हविषः' 'दूतः' वाहकः 'अभूत्'। अतएव 'हव्यानि' अस्मद्दत्तानि 'सुरभीणि कृत्वा' 'अवाट्' वहनं कृतवान्। 'स्वधया' अस्मदुक्तया वाचा सह तानि च 'पितृभ्यः' 'प्रादात्' दत्तवान्। 'ते' च पितरः 'अक्षन्' तानि भक्षितवन्तः। इदानीं प्रार्थये—हे 'अग्ने !' पितृभक्षणं 'जानन्' सन् 'योनिं' स्वस्थानम् अत्र 'पुनः एहि' पुनः प्रत्यागच्छ ॥ १५ ॥

হে পিতাসকল ! আকাশরূপি মালাধারি সূর্য্যের ন্যায় বা ঐরূপ চন্দ্রের ন্যায় পুত্ররূপি গর্ভ প্রদান কর, পুনশ্চ এই আমার গর্ভ পুরুষ বলিয়া খ্যাত্যাপন্ন পুত্র, যেরূপে হয় এবম্বিধ আশীর্ব্বাদ কর ॥ ১৪ ॥

জাতবেদ নামক অগ্নি, অস্মদাদি-প্রদত্ত-হবির দূত (বাহক) হইয়াছিল, অতএব অস্মদাদি প্রদত্ত-হব্য সমুদয়কে সুগন্ধি করত বহন করিয়া ছিল ; স্বধা রূপি অস্মদাদ্যুক্ত বাক্য-সহকারে সেই সমুদয় হব্য পিতৃগণকে দিয়াছিল ; পিতৃলোকেরা

१५—अग्निर्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । उल्मुका भ्युक्षणे विनियोगः ।
"अभून्नो दूतो हविषो जातवेदा इत्युल्मुक मन्त्रिरभ्युक्षा" गो॰ ४, ३ ।

स्रवन्तु सत्या एषा माशिषः संतु कामात् स्वाहा ॥ १६ ॥
जातवेदो वपया गच्छ देवाꣳ स्त्वꣳहि होता प्रथमो

हे 'जातवेदः' अग्ने ! यत्र' यस्मिन् प्रदेशे 'एतान्' 'पा' पितॄन् 'पराचः' गमन-पराङ्मुखान् उपविष्टानिति यावत् 'निहितान्' स्थितान् 'इच्छ' जानीहि, तत्रैव प्रदेशे तेभ्यः 'पितृभ्यः' 'वपां' मेदः [चरवि] 'वह' प्रापय । 'मेदसः' अस्य 'कुल्याः' कृत्रिमासरितः 'तान्' 'अभिस्रवन्तु । 'एषाम्' तेषानां 'कामात्' इच्छातः हेतोः 'आशिषः' आशीर्व्वादाः 'सत्याः' अनृताः सफलाः 'सन्तु' ॥ १६ ॥

हे 'जातवेदः' अग्ने ! 'हि' यतः 'त्वं' 'प्रथमः' मुख्यः 'होता'

সেই সমুদয় ভক্ষণ করিয়াছিলেন ; সম্প্রতি প্রর্থিতেছি— হে অগ্নে! পিতৃলোকের ভক্ষণ জ্ঞাত হইয়া স্বস্থানে (এইস্থলে) পুনঃ প্রত্যাগমন কর ॥ ১৫ ॥

হে জাতবেদ অগ্নে ! যে প্রদেশে গমন-পরাঙ্ মুখ, অবস্থিত, এই সকল পিতৃলোককে জানিবা, সেই স্থানেতে পিতৃদিগকে মেদ বহন করিয়া দাও,—এই মেদের কুল্যা (কৃত্রিম-সরিৎ) প্রস্তুত করত অভিষেক কর; এই সকল পিতৃদিগের স্বেচ্ছা পূর্ব্বক প্রদত্ত আশীর্ব্বাদ-সকল সত্য (সফল) হউক ॥ ১৬ ॥

---

१६ अग्नि र्देवता । त्रिष्टुप् छन्दः । वपाहोमे विनियोगः ।

* 'अथान्वष्टक्य स्थालीपाकेन' इति गो॰ ४, ४ ।

'पितृ दैवत्ये षु पशुषु वह वपां जात वेदः पितृभ्य इति वपां जुहुयात् गो॰ ४, ४ ।

* अथोतो हलाभियोगः गो॰ ४, ४ ।

" स्थालीपाकस्तस्य जुहुयादेकाष्टका तपसा तप्यमानेति" गो॰ ४, ४ ॥

बभूव॥ सत्या वपा प्रगृहीता मे अस्तु समृध्यतां मे यदिदं करोमि॥१७॥ यत् कुसीदमप्रदत्तं मये हये न यमस्य निधिना चराणि॥ इदं तदग्ने अनृणो भवामि जीवन्नेव प्रतिदत्ते ददानि॥१८॥ एकाष्टका-तपसा

देवानामाह्वाता 'बभूव', अतः 'वपया' अस्मद्दत्तया गृहीतया 'देवान्' इन्द्रादीन् गच्छ। इयञ्च 'मे' मम 'प्रगृहीता' प्रदानाय वपा' 'सत्या' दोषशून्या 'अस्तु' त्वत्प्रसादादिति भावः। 'यत् इदं' कर्म करोमि तत् 'समृध्यताम्' समृद्धि-युक्तं कुरु॥१७॥ हे 'अग्ने!' 'इह' जन्मनि 'यत्' 'कुसीदम्' 'अप्रदत्त' न दत्तम्, 'येन' हेतुना 'यमस्य' धर्मराजस्य 'निधिना' केश-ग्रहणेन च-राणि' अहमिति यावत्, 'तत्' 'इदं' कुसीदम् 'ददानि' प्रति-दत्ते च अस्मिन् अहं 'जीवन् एव' जीवित शरीर एव 'अनृणः' ऋणशून्यो भवामि॥१८॥

হে জাতবেদ অগ্নে! যেহেতু তুমি দেবতাদিগের মুখ্য আহ্বান-কর্ত্তা হইয়াছিলে, অতএব তুমি অস্মদ্দত্ত বপার সহিৎ ইন্দ্রাদি-দেবতা দিগের নিকটে যাও, তোমার প্রসাদে আমার দানের নিমিত্ত আয়োজিত বপা (মেদ) দোষ-শূন্য হউক, আমি এই যজ্ঞ করিতেছি অতএব আমাকে সমৃদ্ধিশালী কর॥ ১৭॥

হে অগ্নে! এই জন্মে যাহা কিছু ঋণ করিয়া কুসীদ (শুদ) প্রদান করি নাই;—যেহেতু আমি ধর্ম্মরাজ-কর্ত্তৃক যেন কেশা-

१७—अग्नि देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। वपा होमे विनियोगः।

'देव देवत्र्येषु जातवेदो वपया गच्छ देवानिति" गो॰ ४, ४।

१८—अग्निर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। होमे विनियोगः।

ऋणे प्रज्ञायमाने गोलकानां मध्यम पर्णेन जुहुयात् यत् कुसीदमिति गो॰ ४,४।

তপ্যমানা জজান গর্ভং মহিমান মিন্দ্রং ॥ তেন দেবা অসহন্ত শত্রূন্হন্তা সুরাণা মভবচ্ছচীভিঃ ॥ ১৯।

'একাষ্টকাতপসা' এক সংখ্যকাষ্টকায়াঃ তপসা শাস্ত্রীক্ত বিধিবত্ কর্ম্মণা 'তপ্যমানা' তপঃ কর্ম্মবতী কাচিত্ অদিতিঃ অখণ্ডনীয়া নিত্যাশক্তিঃ 'মহিমানং' মহত্বযুক্তম্ 'ইন্দ্রং' ঐশ্বর্য্য-শালিনং ইন্দ্রনামকং বা 'গর্ভং' 'জজান' জনিতবতী। 'তেন' ইন্দ্রেণ অধিপতিভূতেন সহ মিলিত্বা 'দেবাঃ' বায়্বাদয়ঃ 'শত্রূন্' বৃত্রাদীন্ 'অসহন্ত' পরাভূতান্ কৃতবন্তঃ। ততঃ প্রভৃতি স ইন্দ্রঃ 'শচীভিঃ' বৃত্রবধাদিভিঃ স্বকর্ম্মভিঃ 'অসু-রাণাং' 'হন্তা' ইতি প্রসিদ্ধঃ ॥ ১৯ ॥

কর্ষিত হইয়া আচরণ করি অতএব সেই কুসীদ দিব, এবং দিতেছি, জীবিত থাকিতে থাকিতেই এ শরীরে ঋণ-শূন্য হইব ॥ ১৮ ॥

বিধিমত একটি অষ্টকারূপ তপোদ্বারা তপ্যমান কোন এক অখণ্ডনীয় অদিতি নাম্নী নিত্যাশক্তি, মহিমাশালি ইন্দ্র-নামে গর্ভ প্রাদুর্ভূত করিলেন, বায়ু প্রভৃতি দেবতারা সেই অধিনায়ক ইন্দ্রের সহিৎ মিলিত হইয়া বৃত্রাদি শত্রু-দিগকে পরাভব করিয়াছিলেন্ তদবধি সেই ইন্দ্র বৃত্রবধাদি স্বীয় ক্রিয়া রূপিণী শচীর সহিৎ বিরাজমান হইয়া অসুর-দিগের হন্তা বলিয়া প্রসিদ্ধ হইলেন্ ॥ ১৯ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয় প্রপাঠকস্য তৃতীয়-খণ্ডঃ সমাপ্তঃ ॥

---

১৯ — ইন্দ্রাণী দেবতা। ত্রিষ্টুপ্ ছন্দঃ। স্থালী পাক হোমে বিনিয়োগঃ।

॥ अथ चतुर्थः खण्डः ॥

इदं भूमे र्भजामह इदं भद्रं सुमङ्गलं ॥ परा सपत्ना न्बाधस्वान्येषां विन्दते वस्वन्येषां विन्दते धनं ॥१॥

इमं स्तोम मर्हते जातवेदसे रथमिव संमहेमा

हे अग्ने ! 'भूमेः' 'इदं' खण्डं स्थण्डिलात्मकं 'भजामहे, 'इदं' 'भद्रं' कल्याणकरं 'सुमङ्गलं' मङ्गलकरं पुनरुक्त्या अतिकल्याणकरं अस्माकं भवत्विति शेषः। किञ्च 'सपत्नान्' अस्मच्छत्रून् 'पराबाधस्व' सुष्ठु पीड़यस्व। किञ्चान्यदपि 'अन्येषां' परेषां शत्रूणां 'वसु' धनम् 'विन्दते' लभते इत्थं याजक इति श्रुतमित्यभिप्रायः॥ 'अन्येषां विन्दते धनम्'—इत्यंशस्तु 'अन्येषां विन्दते वसु' इति स्थानीयं राणी पाठामिति युक्त मत्र ॥ १ ॥

'इमं' 'स्तोमं' स्तवं, 'सम्महेमा' पूजोपकरणयुक्तं कुर्य्याम, —किमर्थं ? 'जात वेदसे' एतन्नामकाग्नये, 'अर्हते' स्तुत्याय, 'मनीषया' प्रज्ञया, सारथि र्यथा 'रथमिव' रथं सम्महेमा तद्वत्

হে অগ্নে ! আমরা ভূমির এই স্থণ্ডিল ভাগ উপাসনা-করিতেছি তুমি আমাদের কল্যাণকর, মঙ্গলকর অতিশয় কল্যাণকর হইতেছে. অতএব আমাদের সপত্ন-শত্রুদিগকে ভাল-রূপে পীড়া দাও এবং অন্যান্য শত্রুদিগের ধন হরণ কর॥ ১ ॥

নিজ প্রজ্ঞাবলে সারথি যেমন রথকে চালনোপযুক্ত করে তদ্রূপ আমরা এই স্তুতিকে জাতবেদ নামক অগ্নির নিমিত্ত পূজোপকরণে উপযুক্ত করি, যেহেতু, এই অগ্নির

१—अग्निर्देवता। अनुष्टुप् छन्दः। भूमि जपे विनियोगः।

*'काम्येष्वत ऊर्द्धम्' गीं ४, ५।

भूमौ न्यञ्चौ पाणी प्रतिष्ठाप्येदं भूमेर्भजामह इति वस्वन्तं राणी धनमिति गीं ४,५।

मनीषया ॥ भद्रा हि नः प्रमति रस्य सꣳसद्यग्ने सख्ये मारिषामा वयं तव ॥२॥ भरा मेध्यं कृणवामा हवीꣳषि ते चितयन्तः पर्व्वणा पर्व्वणा वयं ॥ जीवातवे प्रतराꣳ साधया धियोऽग्ने सख्ये मारिषामा वय न्तव ॥३॥

इति शेषः। 'हि' यतः, 'नः' अस्माकं, 'अस्य' अग्नेः प्रसादात्, 'भद्रा' कल्याणी 'प्रमतिः' प्रकृष्टा मतिः, 'संसदि' सभायां जायते; हे 'अग्ने!' 'तव' 'सख्ये' सख्यतया अवस्थिताः वयं सर्व्वे, केनाप्यनेन दुरात्मना 'मा' 'रिषामा' मा हिंसिस्महि ॥२॥

हे 'अग्ने!' त्वदर्थं, 'इध्म' यज्ञदारु, 'भराम' आहराम:, 'हवींषि' चरु-प्रभृतीनि, 'पर्व्वणा पर्व्वणा' पर्व्वणि पर्व्वणि, 'चितयन्तः' उत्पादयन्तः, 'कृणवामा' सम्पादयामः, निर्व्वपामइति यावत्, किमर्थं ?—'प्रतरां' सुदीर्घकालं, 'जीवातवे' जीवनाय, किञ्च 'धियः' कर्म्माणि 'साधया' सफलानि कुरु, शिष्टं पूर्व्ववत् ॥ ३ ॥

প্রসন্নতাতেই আমাদের, সভাতে কল্যাণদায়িনী প্রকৃষ্ট-বুদ্ধি হইয়াথাকে, হে অগ্নে! তোমার সখ্যভাবে অবস্থিত আমরা সকলে, যেন কোন দুরাত্মাদি কর্ত্তৃক নষ্ট না হই ॥ ২॥

হে অগ্নে! দীর্ঘায়ুর নিমিত্ত আমরা যজ্ঞ-কাষ্ঠের আহরণ ও পর্ব্বে পর্ব্বে চরু প্রভৃতি হব্য সকলের সম্পাদন করিয়া, তোমাকে দান করি, তুমি আমাদিগের কার্য্য-সকল সফল কর, আমরা তোমার সহিৎ সখ্যভাবে অবস্থিত, আমাদিগকে যেন কোন দুষ্টাত্মা হিংসা না করে ॥ ৩ ॥

২,৩,৪ — एषां त्रयाणां अग्निमारुते दैवते। जगती छन्दः। परिसमूहने विनियोगः।
इमं स्तोममिति त्र्यृचेन परिसमूहेत् गों४, ५ ।

শকেম ত্বা সমিধ্ও সাধয়া ধিয় স্তে দেবা হবি রন্ত্যাহুত ॥ ত্ব মাদিত্যা ও আবহ তান্ হ্যুশ্মস্যগ্নে সখ্যে মারিষামা বয ন্তব ॥ ৪ ॥ তপশ্চ তেজশ্চ শ্রদ্ধাচ হ্রীশ্চ সত্যঞ্চা ক্রোধশ্চ ত্যাগশ্চ ধৃতিশ্চ ধর্মশ্চ সত্ত্বঁচ

হে 'অগ্নে' ত্বং অস্মাকং 'ধিয়ঃ' কর্ম্মাণি, বুদ্ধীর্ব্বা 'সাধয়া' সাধয়, ত্বদারাধনযোগ্যানি নিষ্পাদয়। যথা বয়ং 'ত্বা' ত্বাং, 'সমিধং' পরিচরিতুং 'শকেম' শক্নুযাম, 'তে' ত্বয়ি, 'আহুতং' দেবাঃ 'অদন্তি' ভক্ষয়ন্তি, অতস্ত্বং 'তান্' 'আদিত্যান্' অদিতেঃ পুত্রান্, 'আবহ' আবাহয 'হি' যতঃ বয়ং 'তান্' আদিত্যান্ 'উশ্মসি' কাময়ামহে। শিষ্টং পূর্ব্ববত্ ॥ ৪ ॥

'তপশ্চ' ইত্যাদি যানি 'তানি' অহং 'প্রপদ্যে' শরণং গতোऽস্মি। 'তানি' তপঃ-প্রভৃতীনি ব্রহ্মপর্য্যন্তানি 'মাং' 'অবন্তু'

হে অগ্নে! তুমি আমাদের কর্ম্মসকল ও বুদ্ধিসকল তোমার আরাধনের যোগ্য কর, যাহাতে আমরা তোমার পরিচর্য্যা করিতে যোগ্য হই, তোমাতে যাহা আহুতি দেওয়া যায়, তাহা দেবতারা ভক্ষণ করেন্, অতএব তুমি সেই অদিতিপুত্র দেবগণকে আহ্বান কর, আমরা তাঁহাদিগকে কামনা করিতেছি, আমরা তোমার সহিত সখ্য ভাব অবলম্বন করিয়া থাকি, কোন দুরাত্মা যেন আমাদিগকে হিংসা না করে ॥ ৪ ॥

তপ, তেজ, শ্রদ্ধা, লজ্জা, সত্য, অক্রোধ, ত্যাগ, ধারণা, ধর্ম্ম সত্ব, বাক্য, মন, আত্মা, ব্রহ্ম, এই সকলের আমি শরণাপন্ন হইতেছি, এবং এই তপঃ প্রভৃতি ব্রহ্ম পর্য্যন্ত আমাকে

বাক্‌চ মনশ্চাত্মাচ ব্রহ্মচ তানি প্রপদ্যে তানি মা-মবন্তু ভূর্ভুবঃ স্বর্ ওঁ মহান্ত মাত্মানং প্রপদ্যে ॥ ৫ ॥ বিরূপাক্ষোঽসি দন্তাঞ্জি স্তস্য তে শয্যা পর্ণে গৃহা অন্তরিক্ষে বিমিতং হিরণ্ময়ং তদ্দেবানাং হৃদয়ান্য-

রক্ষন্তু। ততশ্চ 'ভূঃ' পৃথিবী, 'ভুবঃ' অন্তরীক্ষং, 'স্বঃ' দ্যৌ এতৎ ত্রিলোক-ব্যাপকম্ 'ওঁ' ইত্যেতৎ প্রতীকেন বোধ্যং 'মহান্তং' অতিমহৎ-পরিমাণম্ অনন্তম্ 'আত্মানম্' আত্মস্বরূপম্ 'প্র-পদ্যে' প্রপন্নোঽস্মি ॥ ৫ ॥

হে অগ্নে! ত্বং 'বিরূপাক্ষঃ' অনিয়মিত চক্ষু বিশিষ্টঃ সহ-স্রাক্ষঃ অনন্তাক্ষ ইতি যাবৎ 'অসি' ভবসি, 'দন্তাঞ্জিঃ' ব্যক্ত দন্তশ্চ অসি সর্ব-ভক্ষকত্বাৎ। 'তস্য' এবম্ভূতস্য 'তে' তব 'পর্ণে রক্ষা করুন, আমি ভূ (পৃথিবি) ভুব [অন্তরীক্ষ] স্ব [দ্যু] এই ত্রিলোকব্যাপক, ওঁ—এই প্রণব বাচ্য, অতি মহান্ আত্মার, শরণাপন্ন হইতেছি ॥ ৫ ॥

হে অগ্নে! তুমি বিরূপাক্ষ (অনন্তনয়ন) এবং ব্যক্ত দন্ত হইতেছ, তোমার শয্যা শুষ্ক তৃণ পত্রাদিতে হইয়া থাকে, বিদ্যুৎ রূপে প্রকাশিত হওয়ায় অন্তরীক্ষে হিরণ্ময় গৃহ, বিশেষ-রূপে যেন নির্ম্মিত হইয়া আছে· সেই হেতু তোমার গৃহস্থিত লৌহময় ঘটের মধ্যে ইন্দ্রাদি দেবগণের মন যেন স্থাপিত হইয়া আছে, তুমি অমুদ্রিত নয়ন রাক্ষসের অপেক্ষায় প্রমাদ-শূন্য ও সমধিক বলশালী হইতেছ; তুমি বলের অবসাদ-

৫— রুদ্ররূপীঽগ্নির্দেবতা। নিগদঃ। জপে বিনিয়োগঃ।

কাম্যেষু চ প্রবদস্তপশ্চ তেজশ্চেতি জপিত্বা গোঁ ৪,৫।

अयस्मये कुम्भे अन्तः संनिहितानि बलभृच्च बलसाच्च रक्षतो अप्रमणी अनिमिषतः सत्यं यत्ते द्वादश पुत्रास्ते त्वा संवत्सरे संवत्सरे कामप्रेण यज्ञेन याजयित्वा पुनर्ब्रह्मचर्य्यमुपयन्ति त्वं देवेषु ब्राह्मणोऽस्यहं मनुष्येषु, ब्राह्मणो वै ब्राह्मणमुपधावत्युप त्वा धावामि

मुष्कहण-पत्रादौ 'शय्या' सुखशयन-स्थानम् अस्ति। 'अन्तरिक्षे' च 'हिरण्ययं' हिरण्मयं 'विमितं' विशेषेण निर्मितं 'गृहा' गृहम् अस्ति विद्युद्रूपेण विद्योतमानत्वात्। 'तत्' तत्र च गृहे, 'अयस्मये' लोहमये 'कुम्भे' घटे 'अन्तः' मध्ये, 'सन्निहितानि' स्थापितानि इव देवानां इन्द्रादीनां 'हृदयानि' मनांसि सन्ति सर्व्वेषां हविर्वाहकत्वात्। 'अनिमिषतः' अक्षिणी अनिमीलितः 'रक्षतः' अपेक्षय 'अप्रमणी' प्रमाद-शून्यः स अधिकः 'बलभृत्' बल-शाली 'च' अपिच 'बलसात्' बलस्य सीदयिता

কারী হইতেছ তোমার দ্বাদশটী আত্ম-ভাবাপন্ন পুত্র সকল যাহা প্রসিদ্ধ আছে, তাহা সত্য ; সেই সকল পুত্রেরা প্রতি বৎসরে যথাভিলষিত ফলপ্রদ যজ্ঞের দ্বারা তোমাকে যজন করাইয়া পুনঃপুনঃ ব্রহ্ম-সামীপ্য প্রাপ্ত করায় ; তুমি সমস্ত দেবতাদিগের (সমস্ত প্রদীপ্ত বস্তুদিগের) মধ্যে ব্রাহ্মণ [মুখ্য] হইতেছ, আমি মনুষ্যদিগের মধ্যে ব্রাহ্মণ হইতেছি; ব্রাহ্মণই ব্রাহ্মণের অর্থাৎ স্বজাতীয়ই সজাতীয়ের বিশেষ উপকার করিতে পারে অতএব তোমার জপানুষ্ঠায়ি আমার প্রতি প্রতিকূল জপ করিও না; তোমার উদ্দেশে হবন কারি আমার প্রতি প্রতিকূল হবন করিও না ; যাগাদ্যনুষ্ঠান কারি আমরা

জপন্তং মা মাপ্রতিজাপী র্জুহ্বন্তং মা মাপ্রতিহৌষীঃ কুর্ব্বন্তং মা মাপ্রতিকার্ষী স্ত্বাং প্রপদ্যে, ত্বয়া প্রসূত ইদং কর্ম্ম করিষ্যামি তন্মে রাধ্যতাং তন্মে সমৃধ্যতাং তন্ম উপপদ্যতাং সমুদ্রো বিশ্বব্যচা ব্রহ্মা নুজানাতু তুর্য্যো মা বিশ্ববেদা ব্রহ্মণঃ পুত্রোনুজানাতু

ত্বমসীতি শেষঃ। 'তে' তব দ্বাদশ সংখ্যকাঃ 'পুত্রাঃ' আত্মভাবাঃ ইতি 'যত্ প্রসিদ্ধ' তত্ সত্যম্। 'তে' পুত্রাঃ 'সংবত্সরে সংবত্সরে' প্রতিহায়নে 'কামপ্রেণ' যথাভিলষিতফলেন 'যজ্ঞেন' 'ত্বাম্' 'যাজয়িত্বা' 'পুনঃ' পুনশ্চ 'ব্রহ্মচর্য্যম্' ব্রহ্ম-সামীপ্যম্ 'উপযন্তি' প্রাপ্নুবন্তি। 'ত্বং' 'দেবেষু' সমস্ত-প্রদীপ্ত-বস্তুষু 'ব্রাহ্মণঃ' মুখ্যঃ 'অসি', অহং 'মনুষ্যেষু' ব্রাহ্মণঃ ব্রাহ্মণ কুলোত্পন্ন ইতি যাবত্; 'ব্রাহ্মণো বৈ ব্রাহ্মণম্' সজাতীয় এব সজাতীয়ম্ উপধাবতি উপকরোতি, অতঃ 'জপন্তং' 'মা' মাং 'মা প্রতিজাপীঃ' প্রতিকূলজপং মা কুরু—'কুর্ব্বন্তং' যাগাদ্যনুষ্ঠান কারিণং 'মা'

প্রতি প্রতিকূল যাগ করিও না, আমি তোমাকে শরণ লইতেছি; তোমাকর্ত্তৃক অনুজ্ঞাত হইয়াই আমি এই কার্য্য করিতেছি; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সিদ্ধ হইবে, এবং তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য সমৃদ্ধি যুক্ত হইবে; তোমার প্রসন্নতাতেই আমার এই কার্য্য উপপন্ন হইবে; আপনি সমুদ্রের ন্যায় অসীম, সর্ব্বত্রগামী, ব্রহ্মা, [অতি বৃহৎ পরিমাণক] হইতেছেন্; আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি তুর্য্য (দব, বাড়ব, জাঠর, বৈদ্যুৎ ভেদে চতুর্থ) সর্ব্ববিৎ, ব্রাহ্মণের পুত্র [ঈশ্বরের পুত্র]

**श्वात्रोमा प्रचेता मैत्रा वरुणो नुजानातु तस्मै विरू-
पाक्षाय दन्तांजये समुद्राय विश्वव्यचसे तुथाय विश्व-**

मां 'मा प्रतिकार्षीः' प्रतिकूलं कर्म्म मा कुरु। 'त्वां' 'प्रपद्ये' प्रपन्नोस्मि। 'त्वया' 'प्रसूतः' अनुज्ञातः अहम् 'इदं' 'कर्म्म' करिष्यामि 'तत्' तस्मात्-त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म्म 'राध्यतां' सिद्धं भवतु किञ्च 'तत्' तस्मात्—त्वत् प्रसादात् 'मे' ममेदं कर्म्म 'समृद्ध्यतां' समृद्धि युक्तं भवतु—'तत्' तस्मात् त्वत्-प्रसादात् 'मे' ममेदं 'कर्म्म' 'उपपद्यताम्' उपपन्नं भवतु। 'समुद्रः' समुद्रइव असीमः, 'विश्वव्यचाः' विश्वं समस्त-पदार्थं विविधम् अञ्चति गच्छति यः—सः विश्वव्यचाः सर्व्वगः, 'ब्रह्मा' अति बृहत् परिमाणकः भवान् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'तुथ्यः' दव, वाड़व, जाठर, वैद्युतेति भेदात् चतुर्थत्व मापन्नः, 'विश्ववेदाः' सर्व्ववित् सर्व्वज्ञत्वात्, 'ब्रह्मणः पुत्रः' ईश्वरस्य तनय प्रसिद्धः आदिसृष्टि इति रूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'श्वात्रः' श्वापदभयात् त्राता, 'प्रचेता' प्रवृद्धज्ञानः, 'मैत्रावरुणः' मित्रस्यसू—र्य्यस्य वरुणस्य—चन्द्रस्य च अंशः, तेजोरूपत्वात् 'मा' माम् 'अनुजानातु' अनुज्ञां करोतु। 'विरूपाक्षाय' विरूपाक्ष नामतः प्रसिद्धाय १, 'दन्ताञ्जये' दन्ताञ्जिनामतः प्रसिद्धाय २, 'समुद्राय' समुद्रनामतः प्रसिद्धाय ३,

রূপে প্রসিদ্ধ, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; আপনি শ্বাপদ ভীতি হইতে ত্রাণকর্ত্তা, প্রবৃদ্ধজ্ঞান শীল, সূর্য্য চন্দ্রের অংশ স্বরূপ, হইতেছেন্, আপনি আমাকে অনুজ্ঞা করুন; বিরূপাক্ষ, ১ দন্তাঞ্জি, ২ সমুদ্র, ৩ বিশ্বব্যচা, ৪ তুর্য্য ৫ বিশ্ব-

वेदसे श्वात्राय प्रचेतसे सहस्राक्षाय ब्रह्मणः पुत्राय नमः ॥ ६ ॥ सहस्र बाहुः गौपत्यः सपशून् नभि रक्षतु॥ मयि पुष्टिं पुष्टिपति र्दधातु मयि प्रजां

'विश्वव्यचसे' विश्वव्यचानामतः प्रसिद्धाय, 'तुर्थ्याय' तुर्थ्यनामतः प्रसिद्धाय ५, 'विश्ववेदसे' विश्ववेदोनामतः प्रसिद्धाय ६, 'श्वात्राय' श्वात्रनामतः प्रसिद्धाय ७, 'प्रचेतसे' प्रचेतो नामतः प्रसिद्धाय ८, 'सहस्राक्षाय' सहस्राक्ष नामतः प्रसिद्धाय ९, 'ब्रह्मणः पुत्राय' ब्रह्मपुत्र नामतः प्रसिद्धाय १०, 'तस्मै' अग्नये 'नमः'। अत्रे-दमप्यवधेयं—विरूपाक्षादीनि दश नामानि, 'ब्रह्मा' इति पूर्ववर्णितञ्च नाम, अग्निनाम्ना संकलनया द्वादश संख्यां पूरयति, इत्थञ्च अग्ने र्द्वादश पुत्रा इति प्रसिद्धिः; अतएव भागवते द्वादश पुत्राः द्वादश नामानीत्युक्तम् ॥ ६ ॥

'गौपत्यः' गोपतिः पशुपतिः रुद्रः 'सः' 'सहस्रबाहुः' अनन्तबाहुः सन् 'पशून्' गवादीन् 'अभिरक्षतु' रक्षां करोतु।

বেদা ৬ শ্বাত্র, ৭ প্রচেতা ৮ সহস্রাক্ষ ৯ ব্রহ্ম-পুত্র ১০ এই সকল নামে প্রসিদ্ধ অগ্নিকে নমস্কার করি [এই দশটী এবং পূর্ব্ব বর্ণিত ব্রহ্মা ও সামান্য অগ্নি এই দুইটী নাম,—এই সমুদয়ে দ্বাদশটী সঙ্খ্যা পরিপূর্ণ হয়, সুতরাং অগ্নির দ্বাদশ পুত্র বলিয়া প্রসিদ্ধি সিদ্ধ হইল] ॥ ৬ ॥

সেই প্রসিদ্ধ, পশুপতি রুদ্র, সহস্রবাহু বা অনন্তবাহু

६ – रुद्ररूपोग्निर्देवता ॥ निगदः । जपे * विनियोगः ।

*एष एव जपो विरूपाक्ष जप इत्युच्यते ।

'प्राणायामायम्यार्थमना विरूपाक्ष मारभ्यो क्तसेन् गो० ४,५ ।

प्रजापतिः स्वाहा ॥ ৭ ॥ कौतोमतं ॥ संवननंसुभागं करणं मम॥ नाकुली नाम ते माता प्याहं पुरुषानयः॥ यन्नौकामस्य विच्छिन्नं तन्नौ सं धे ह्योषधे! ॥ ৮ ॥

'पुष्टिपतिः' पुष्टिदोदेवः 'मयि' मत्पशौ 'पुष्टिं' दधातु। 'प्रजापति दवः 'मयि' मत्पशौ 'प्रजां' वत्सादिकं दधात्विति काकाक्षि-गोलकन्यायेनान्वयः ॥ ৭ ॥

'कौतोमतं' कुतः मन्यते प्रकाश्यते इति न जाने इत्यर्थे कुतो-मतमेव कौतोमतं—वचनं, 'संवननं' सम्यक् भजनात्मकं, त्वं 'मम' 'सुभगं करणं' सौभाग्य कारि, भवसि 'ते' तव 'माता' 'नाकुली' नकुलवत् विलवासस्वभावा, जिह्वेति भावः। 'अपि' 'अहं' 'पुरुषानयः' पुरुषेण हृदिस्थेन नीयते उच्चारणादि-सर्व्व-कर्मसु। इदानीम् ओषधिं प्रार्थये—'नौ' आवयोः दम्पत्योः 'यत्' यावत् 'कामस्य' प्रणयस्य 'विच्छिन्नं' विभिन्नं वर्त्तते, हे 'ओषधे!' 'नौ' आवयोः 'तत्' तावत् 'सन्धेहि' सन्धिभावा-पन्नं कुरु ॥ ৮ ॥

হইয়া গবাদি পশুসকলকে রক্ষা করুন, আপনি পুষ্টিদাতা হইতেছেন, আমাতে পুষ্টি প্রদান করুন ; আপনি প্রজাপতি হইতেছেন, আমাকে এবং আমার বৎসাদিকে পুষ্ট করুন ॥ ৭ ॥

তুমি সম্যক্‌রূপে উপাসনীয়, কুতোমত (অজ্ঞাত প্রকা-

৭—प्रजापति र्देवता। उष्णिक् छन्दः। पशुस्वस्त्ययने विनियोगः। पशुस्वस्त्ययन कामो व्रीहि यव होमं प्रयुञ्जीत सहस्र वाहु गौपत्य इति गो० ४,५।

৮—वागोषधी देवते। त्रिपादनुष्टुप् छन्दः। युग्ममहा वृक्ष फलदाने विनियोगः "कौतोमतेन महा वृक्ष फलानि परि जप्य प्रयच्छेत्" गो० ४,५।

**सर्व्वौमा विभासन ! विभासय॥११॥ कोश इव पूर्णो वसु-
ना त्वं प्रीतो ददसे धनं॥ अदृष्टो दृष्टमाभर सर्व्वान्
कामान् प्रयच्छ मे॥ १२ ॥ आकाशस्यैष आकाशो यदे-**

आश्रितमस्ति । हे 'विभासन !' प्रकाशक ! 'तेन' 'सर्व्वेण' म-
हिम्ना 'मा' मां 'विभासय' प्रकाशय ॥ ११ ॥

'त्वं' 'कोशइव' कोशो धनागारं यथा धन पूर्णं भवति तथा
'वसुना' धनेन 'पूर्णः' असि, किञ्च 'प्रीतः' प्रसन्नः सन् धनं
'ददसे'। 'अदृष्टः' वहिरिन्द्रियादिभिरलक्ष्यस्त्वं 'दृष्टं' यत्फलं
तत् 'आभर' आहर आनय, 'मे' मह्यं 'सर्व्वान्' 'कामान्' अभि-
लषितान् 'प्रयच्छ' प्रदेहि ॥ १२ ॥

'एषः' आत्मा 'आकाशस्य' अवकाशस्य अपि 'आकाशः'
अवकाश अन्तर्हितः, किं स्वरूप इत्याह—'यत्' 'एतत्' आका-

আশ্রিত আছে, হে প্রকাশক ! সেই সকল মহিমার দ্বারা
আমাকে প্রকাশিত কর ॥ ১১ ॥

ধানাগার যেরূপ ধনপূর্ণ হয়, তুমি সেইরূপ ধন পূর্ণ
হইতেছ ; এবং প্রসন্ন হইয়া ধন প্রদান করিয়া থাক ; তুমি
বহিরিন্দ্রিয়াদি দ্বারা অলক্ষ্য হইতেছ, দৃষ্ট যে ফল তাহা
আহরণ কর ; আমাকে অভীপ্সিত-সকল প্রদান কর ॥ ১২ ॥
এই আত্মা অবকাশ স্বভাবাত্মক, আকাশেরও আকাশ—অর্থাৎ

११ । आत्मा चन्द्रमा वा देवता । अनुष्टुप् छन्दः । तिल तण्डुल होमे विनियोगः ।
" तृतीयया चन्द्रमसि तिलतण्डुलान्" गो ४, ५ ।

१२—आत्मा आदित्योवा देवता अनुष्टुप् छन्दः । उपस्थाने विनियोगः ।
" चतुर्थ्यादित्य मुपस्थायार्थान् प्रपद्येत" गो० ४, ५ ।

তদ্ভাতি মণ্ডলং ॥ এবং ত্বা বেদ যো বেদেশানেশান্ প্রযচ্ছ মে ॥১৩॥ ভূর্ভুবঃ স্ব রোঙ্ সূর্য্য ইব দৃশে ভূয়াস মগ্নিরিব তেজসা বায়ুরিব প্রাণেন সোম ইব গন্ধেন

শাদ বহিশ্চ 'মণ্ডলং' পরিধিঃ 'ভাতি' দীপ্যতে, তৎ ব্রহ্ম আত্মেতি চ। হে 'বেদেশান' বেদাধিপ! আত্মন্! 'ত্বা' ত্বাম্ এবং এবম্প্রকারেণ 'যো' যঃ—অহং 'বেদ' জানামি, তস্মৈ 'মে' মহ্যং 'ঈশান্' ঐশ্বর্য্যান্ প্রযচ্ছ ॥ ১৩ ॥

হে 'ভূর্ভুবঃ স্বরোম্!' 'ভূঃ' পৃথিবী, 'ভূবঃ' অন্তরীক্ষং, 'স্বঃ' দ্যৌঃ—এতল্লোকত্রয়-ব্যাপক! 'ওঁ' আত্মন্! [অথবা পৃথিবীস্থানোঽগ্নিঃ, অন্তরীক্ষস্থো বায়ুঃ, স্বস্থঃ সূর্য্যঃ, ও মিত্যাত্মনঃ প্রতীকং এতচ্চতুষ্টয় মেবাত্র সম্বোধ্যম্] ভবতঃ প্রসাদাৎ 'দৃশে' সমদর্শনায় 'সূর্য্যইব' 'ভূয়াসম্', 'তেজসা' 'অগ্নিঃ ইব' যথা অগ্নিস্তেজস্বী তথা ভূয়াসম্, 'প্রাণেন' প্রভাবেন 'বায়ুরিব' অবকাশ-দায়ক; তাহা কিরূপ?—যাহার আকাশ হইতেও বাহিরে পরিধি ভান হইতেছে; উহা ব্রহ্ম, বা আত্মা হইতেছে; হে বেদাধিপ! আত্মন্! তোমাকে এই রূপেই আমি জানিতেছি, আমাকে ঐশ্বর্য্য প্রদান কর ॥ ১৩ ॥

হে ভূর্ভুবঃস্বঃ [ত্রিলোক] ব্যাপক, প্রণব [ওঁ]বোধ্য আত্মন্! আপনার প্রসাদে সকল বস্তুর সমদর্শনে যেন সূর্য্যের ন্যায়, তেজেতে যেন অগ্নির ন্যায় প্রভাবেতে যেন বায়ুর ন্যায়, গন্ধ গ্রহণে যেন চন্দ্রের ন্যায় বুদ্ধিতে যেন বৃহস্পতির ন্যায়

১৩—আত্মা আদিত্যোবা দেবতা। অনুষ্টুপ্ ছন্দঃ। উপস্থানে বিনিয়োগঃ।
"পশ্চাদাদিত্য মুপস্থায় গৃহান্ প্রপদ্যেত" গো০ ৪, ৫।

यतः पार्श्वयो रुत्तानधि ॥ उरस्तो वङ्कदान् घोरान् विघनान् विवृहामिव स्वाहा ॥ ३ ॥ वङ्क्षणाभ्यां मे लोहिता दान्यो निहान्यजिह्मानधि ॥ ऊरुभ्यो

‘मे’ मम ‘बाहुभ्यां’ ‘उत्’ ऊर्द्ध्वं स्थितान्, ‘तु’ अपिच ‘पार्श्वयोः’ उभयोः ‘यतीयतः’ ‘अधि’ अधिक्रम्य वर्त्तन्ते, ‘उरस्तः’ वक्षः प्रदेशाच्च ‘तान्’ ‘वङ्कदान्’ ‘घोरान्’ ‘विघनान्’ ‘वः’ युष्मान् वैश्रवणान् ‘विवृहामि’ ॥ ३ ॥

‘मे’ मम अङ्गेषु ‘अधि’ अधिकारिणः वैश्रवणान् कीदृशान् ?—‘लोहितादान्’ लोहितानि रक्तानि ये अदन्ति तादृशान् ‘योनिहान्’ योनिं उत्पत्तिस्थानं ये घ्नन्ति तादृशान् अश्लिष्यमाणस्य अश्लिष्यमाणाया वा-प्राण वियोगभयशून्येन ये श्लिष्यन्ते आलि-

দিগকে আমার গ্রীবা হইতে স্কন্ধদ্বয় হইতে নাশিকাদ্বয় হইতে এবং আমার বদনমণ্ডল হইতে ভালরূপে দূরীভূত করিতেছি ॥ ২ ॥

বাহুদ্বয়ের উর্দ্ধভাগে অবস্থিত, পার্শ্বদ্বয়ে যতটুকু অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, এই রূপ বক্ষ স্থলে বর্ত্তমান, ভয়ানক, বিনাশন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ, তোমাদিগকে আমরা বাহুদ্বয়ের উর্দ্ধ প্রদেশ হইতে পার্শ্বদ্বয়ে ততটুকু স্থান হইতে এবং বক্ষ স্থল হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৩ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, শোণিত ভক্ষক, যোনি-(উৎপত্তি স্থান) ঘাতক, আমাকর্ত্তৃক কোন পুরুষ বা স্ত্রী গাঢ় আলিঙ্গিত হইলে তাহাদের প্রাণ বি-

निक्लिषो घोरान् विघनान् विबृहामिव स्वाहा ॥ ४ ॥
जंघाभ्यां मे यतोयतः पार्ष्णायौं कृन्ततानधि ॥ पादयो
विकिरान् घोरान् विघनान् विबृहामिव स्वाहा ॥ ५ ॥
परिबाधं यजामहे शुजंघं शबलोदरं॥ यो नोयं

ङ्गन्ते तादृशान् 'घोरान्' 'विघनान्' 'वः' युस्मान् वैश्रवणान् 'अक्षाभ्यां' अक्षियुगलात् 'ऊरुभ्यः' ऊरुद्वयस्य सर्वतश्च 'विवृ-हामि' ॥ ४ ॥

'मे' मम अङ्गेषु 'अधि' अधिकारिणः वैश्रवणान्; कीदृशान् ?— 'जङ्घाभ्यां' 'उत्' उपरिष्टात् 'स्थितान्' 'पार्ष्णेः' गुल्फाधोभागयोः यतो यतः सर्वतः स्थितान् पादयोः च 'यतः' यत्र यत्र स्थितान्, 'तान्' तादृशान् 'विकिरान्' विक्षेपकान् 'घोरान्' विघनान् 'वः' युस्मान् 'विवृहामि' ॥ ५ ॥

'यः' 'अयं' यक्षः 'नः' अस्मभ्यं 'दानाय' 'भगाय' ऐश्वर्य्याय 'च' परिबाधते अभीष्ट-फल-दातॄन् देवानिति यावत्, तम्

য়োগ হইবে এবম্বিধ ভীতি শূন্য, অতএবই ভয়ানক-সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ বলিয়া প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে অক্ষিযুগল হইতে ঊরুদ্বয় হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৪ ॥—

আমার অঙ্গে অধিকার করিয়া বর্ত্তমান, অর্থাৎ জঙ্ঘা-দ্বয়ের উপরি ভাগে অবস্থিত, পাদদ্বয়ের যে টুকু স্থান ব্যাপিয়া অবস্থিত, বিক্ষিপ্ত কারক, অতএবই ভয়ানক, ও সর্ব্বথা বিনাশন, যক্ষ নামে প্রসিদ্ধ তোমাদিগকে সেই সেই স্থান হইতে দূরীভূত করিতেছি ॥ ৫ ॥

पुनर्मायन्तु देवता यामदपचक्रमुः ॥ महस्वन्तो महान्तो भवाम्यस्मिन् पात्रे हरिते सोम पृष्ठे ॥ १० ॥ रूप रूपं मे दिश प्रातरह्नस्य तेजसः ॥ अन्नमुग्रस्य प्राशिषमस्तु वयिमयि त्वयीदमस्तु त्वयि मयीदं ॥ ११। यदिदं पश्यामि चक्षुषा त्वया दत्तं प्रभासया ॥ तेन मा

'देवताः' अभीष्टदेवाः 'अस्मिन्' प्रत्यक्षे 'सोमपृष्ठे' 'हरिते' पात्रे 'यामत्' गृहीतुम् 'अपचक्रमुः' गतवन्तः, ते च 'मा' मां 'पुनः आयन्तु' पुनरागच्छन्तु, अहञ्च 'महस्वन्तः' महस्वान् तेजस्वी 'महान्तः' महान् 'भवामि' भवेयमिति प्रार्थये ॥ १० ॥

हे 'रूप !' दृश्यमान-समस्त-रूपात्मक ! आदित्य ! 'प्रातरह्नस्य' प्रभातस्य तेजसः रूपं मह्यं 'दिश' विसर्जय, देहीत्यर्थः। 'उग्रस्य' प्रदीप्तस्य तव अन्नम् आशिषम् अस्तु मदर्थमिति यावत्। 'मयि' मदन्तिके यत् अस्ति, तत् 'इदं' हव्यं 'त्वयि' 'अस्तु' 'त्वयि' च यदस्ति 'इदं' सामर्थ्यं तत् 'मयि' अस्तु। ११ ॥

'त्वया' 'दत्तं' दत्तया प्रकटितया 'प्रभासया' 'यत्' किञ्चन

যে অভীষ্টদেবেরা এই সোম পৃষ্ট পাত্রে আসিয়াছেন্ তাঁহারা আমার প্রতি আগমন করুন্; আমি যেন মহান্ ও তেজস্বী হই —এই প্রার্থেতেছি ॥ ১০ ॥

হে দৃশ্যমান সমস্তের রূপ (চক্ষু) স্বরূপ আদিত্য ! প্রাতঃকালের রূপ আমাকে প্রদান কর, তোমার প্রদীপ্ত স্বরূপ আমার নিমিত্ত আশীর্ব্বাদ হউক, আমার নিকটে যাহা কিছু আছে ; সেই সকল তোমাতে সমর্পিত হউক, এবং তোমাতে যাহা কিছু সামর্থ্যাদি আছে তাহা আমাতে হউক ॥ ১১ ॥

भुङ्क्ष्व तेन भुक्षिषीय तेन मा विश॥१२॥ अहर्नो अत्य-पीपरद्रात्रिर्नो अतिपारयत्॥ रात्रिर्नो अत्यपीपरद्-हर्नो अतिपारयत्॥१३॥ आदित्य नाव मारोक्षं

इदं’ हव्यं ‘चक्षुषा’ पश्यामि, ‘तेन’ हविर्द्रव्येण प्राप्तेन ‘मा’ मां ‘भुङ्क्ष्व’ गृहाण, किञ्च ‘तेन’ सामर्थ्येन सह त्वं ‘मा’ माम् ‘आविश प्रविश ; आवयोः ऐकात्म्यं भवत्विति प्रार्थनाभिप्रायः ॥ १२ ॥

अहः’ दिवारूपः त्वत्-कृतः कालः ‘नः’ अस्मान् ‘अति’ अतिशयेन ‘अपीपरत्’ पुनः पुनः प्रतिदिनं परतु पालनं करोतु, ‘रात्रिः’ अपरञ्च त्वत्-कृतः कालः ‘नः’ अस्मान् अति अतिशयेन ‘पारयत्’ पारयतु दुस्तरं जीवनं यापयतु। अथवा ‘रात्रिः’ एवं ‘नः’ अस्मान् ‘अत्यपीपरत्’ प्रतिदिनं अतिशयेन पालनं करोत्त, ‘अहः’ च ‘नः’ अस्मान् ‘पारयत्’ पारयतु दुस्तरं जीवनं यापयतु, उभयथा त्वमेवास्य पाता संहर्त्तेतिचाभिप्रायः॥ १३ ॥

তোমার আলোকে যাহা কিছু এই মদ্দত্ত হব্য চক্ষুর্দ্বারা দেখিতেছি, সেই প্রাপ্ত হবি-দ্রব্য দ্বারা আমাকে ভোগ কর ; এবং আমি ও তোমার সামর্থ্য প্রাপ্ত হইয়া উপভোগ করি ; তুমি সেই সামর্থ্যের সহিৎ আমাতে আবেশ কর , অর্থাৎ তোমাতে আমাতে একাত্মভাব হউক-এই প্রার্থনা ॥ ১২ ॥

ত্বৎকৃত দিবারূপ কাল প্রতিদিন আমাকে ভালরূপে রক্ষা করুক ; এবং ত্বৎকৃত রাত্রিরূপ কাল, ভালরূপে

पूर्णां मपरि पादिनीं॥ अच्छिद्रां पारयिष्णवींं शता-रित्राँ स्वस्तये ॥ ओन्नम आदित्याय नम आदित्याय नम आदित्याय ॥ १४॥ उद्यंतंत्वादित्यानूदियासं ॥१५॥

हे 'आदित्य !' 'नावम्' नौ-यानम् 'आरोचम्' आरोहितवान् कीदृशं नावमित्याह—'पूर्णां' पूर्णावयवां 'अपरिपादिनीम्' आपच्छून्यां, 'अच्छिद्रां' छिद्ररहितां, 'पारयिष्णवीं' भवार्णव पारकरण समर्थां 'शतारित्रां' बहुजनस्य विपत्त्राण कारिणीं, एतादृशीं कृपातरिम् आरोहितवानित्यर्थः ॥ १४ ॥

हे 'आदित्य !' 'उद्यन्तं' 'त्वा' त्वां 'अनु' पश्चात् एव प्रतूषएव 'उदियासम्' दण्डायमानो भूयासम् ॥१५॥

আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক ; অথবা—রাত্রি আমাকে প্রতিদিন ভালরূপে রক্ষা করুক, দিবা ভালরূপে আমাকে জীবন যাত্রা নির্ব্বাহ করাক [উভয়রূপেই তুমি জীবনের রক্ষা-কর্ত্তা এবং সংহার কর্ত্তা-এই সমুদয়মন্ত্রের অভিপ্রায়] ॥ ১৩ ॥

হে আদিত্য ! সকল অবয়ব পরীপূর্ণ, আপৎশূন্য, অচ্ছিদ্র, ভবার্ণব পারকরণে সমর্থ, বহুলোকের বিপদে ত্রাণ-কর্ত্তা, এবম্বিধ তোমার কৃপারূপি তরীতে আরোহণ করিয়াছি ॥ ১৪ ॥

হে আদিত্য ! তোমার উদয়কাল শেষ হইতে না হইতেই অর্থাৎ তাহার পূর্ব্বেই অতি প্রত্যূষে উঠিয়াছিলাম ॥ ১৫ ॥

१४——आदित्यो देवता । अनुष्टुप् छन्दः । स्वस्त्ययने विनियोगः ।

" स्वस्त्ययन मादित्य नावमिति" गो० ४, ६ ।

१५—आदित्यो देवता । यजुः । पूर्व्वाह्ण-प्रार्थने विनियोगः ।

" उद्यन्तं त्वादित्यानूदिया समिति पूर्व्वाह्णे" गो० ४, ६ ।

প্রতিতিষ্ঠন্তং ত্বাদিত্যাযানু প্রতি তিষ্ঠাসং ॥১৬॥ ভলায স্বাহা ॥১৭॥ ভল্লায স্বাহা ॥১৮ ॥

হে ‘আদিত্য !’ ‘প্রতিতিষ্ঠন্তং’ অস্তং গচ্ছন্তং ‘ত্বা’ ত্বাম্ ‘অনু’ পশ্চাৎ ‘প্রতিতিষ্ঠাসম্’ প্রতিষ্ঠিতেন উপবিষ্টো ভূযাসম্ ॥ ত্বদীযোদযাস্তং কালং দণ্ডাযমানসমর্থো ভূযাসমিতি ভাবঃ ॥১৬।

‘ভলায’ দাবে পালন কর্ত্রে ইতি যাবৎ। ‘ভল্লায’ সংহার-কর্ত্রে। আদিত্যায তুভ্যং, ‘স্বাহা’ হবিরিদং প্রযচ্ছামি ॥১৭,১৮

হে আদিত্য ! আমি তোমার পশ্চাৎ পশ্চাৎ প্রতিষ্ঠিত হইয়া উপবিষ্ট হইয়াছি [অর্থাৎ তোমার উদয়াবধি অস্তকাল পর্য্যন্ত দণ্ডায়মানে সমর্থ হইয়াছি] ॥ ১৬ ॥

পালন ও সংহার কর্ত্তা আদিত্য তোমাকে আমি এই হবি দিতেছি ॥ ১৭ ॥ ১৮ ॥

॥ ইতি সামবেদীয়ে মন্ত্র-ব্রাহ্মণে দ্বিতীয়-প্রপাঠকস্য পঞ্চমঃ খণ্ডঃ সমাপ্তঃ।

১৬—আদিত্যো দেবতা। যজুঃ। অপরাহ্ণ প্রার্থনে বিনিযোগঃ।
“ প্রতিতিষ্ঠন্তং ত্বাদিত্যানুপ্রতিতিষ্ঠাসমিত্যপরাহ্ণে” গো০ ৪, ৬।

১৭—১৮—আদিত্যো দেবতা। যজুঃ। হোমে বিনিযোগঃ।
“ অভিমুখো জুহুযাৎ ভলায স্বাহা ভল্লায স্বাহেতি” গো০ ৪, ৬।

॥ অথ ষষ্ঠ-খণ্ডঃ ॥

* বাস্তোষ্পতে প্রতিজানীহ্যস্মাংস্বাবেশো অনমীবো ভবানঃ ॥ যত্তে মহে প্রতিতন্নো জুষস্ব শন্নো ভব দ্বিপদে শং চতুষ্পদে ।১। হয়ে রাকে সিনীবালি

হে 'বাস্তোষ্পতে' ইন্দ্র ! ত্বং 'অস্মান্' 'প্রতিজানীহি' ফলার্থিন ইত্যবগচ্ছ; 'কিঞ্চ নঃ' অস্মাকং সম্বন্ধে রোগশূন্যশ্চ 'ভব' তথাচ যথা ত্বং তথাস্মানপি কুরু—ইতি প্রার্থনা। 'যত্' যস্মাত্ 'তে' তুভ্যং 'মহে' পূজয়ে 'তত্' তস্মাত্, 'নঃ' অস্মান্ 'প্রতি জুষস্ব' প্রতিসেবয় ; অভীষ্ট-দানাদিনেতি ভাবঃ। ত্বং হি 'দ্বিপদে' ময়ি, 'নঃ' অস্মাকং 'শং' কল্যাণকরঃ 'ভব', 'চতুষ্পদে' দম্পতীভাবাপন্নে 'চ' ময়ি 'শং' কল্যাণকরঃ ভব ॥ ১ ॥

'হয়ে' ইত্যাদিপদং প্রত্যেকং সম্বুদ্ধ্যন্তম্; সিনিবালী নামতো

হে গৃহ-পতে ইন্দ্র ! তুমি আমাদিগকে ফলাকাঙ্ক্ষি বলিয়া জানিবে, এবং আমাদিগের সম্বন্ধে সুন্দররূপে প্রবেশ-ক্ষম, রোগশূন্য হও, অর্থাৎ যেরূপে তুমি হইতেছ, সেই রূপ আমাদিগকে কর,— এই প্রার্থিতেছি; যেহেতু আমরা তোমাকে পূজা করিতেছি অতএব আমাদিগকে অভীপ্সিত ফল প্রদান কর, যেহেতু আমাদিগের দ্বিপদাবস্থায় এবং চতুষ্পদাবস্থায় অর্থাৎ—দম্পতীভাব প্রাপ্ত হইলে, তুমিই কল্যাণ-প্রদাতা হইতেছ ॥ ১ ॥

---

* অথ গৃহপ্রবেশঃ ।

১—ইন্দ্রো দেবতা । অনুষ্টুপ্ছন্দঃ । নব গৃহ প্রবেশে পায়সচরুহোমে বিনিয়োগঃ ।

" অথ গৃহীতং জুহুয়াত্ বাস্তোষ্পত ইতি' গোং ৪,৭ ।

सिनीवालि पृथुष्टुके ॥ सुभद्रे पथ्ये रेवति पथानो
यश आवह स्वाहा ॥ २ ॥ ये यन्ति प्राञ्चः पन्थानो य
उचोत्तरत आययुः ॥ ये चेमे सर्वे पन्थानस्तेभिर्नो यश
आवह स्वाहा ॥ ३ ॥ यथा यन्ति प्रपदो यथा मासा-
देवताद्वयं विद्यते । यूयं 'पथा' सन्मार्गेण 'नः' अस्मान् 'यशः'
'आवह' प्रापय ॥ २ ॥

'यथा' 'प्रपदः' प्रपदाः पादाग्रभागाः उत्तरोत्तरं 'यन्ति' गच्छन्ति, 'मासाः' 'यथा' 'अहर्ज्जर' अहोभिः जरात्वम् अवसानभावं 'यन्ति' गच्छन्ति; 'श्रीधातारः' श्रियो विधातारः देवाः 'एवं' एवमेवोत्तरोत्तरं 'सर्व्वतः' सम्पूर्णतः 'मा' मां 'समवयन्तु' समवेता भवन्तु, श्रियं ददतु इति भावः ॥ ३ ॥

'ये' 'पन्थानः' मार्गाः 'प्राञ्चः' 'यन्ति', 'ये' 'उत्तरोत्तरतः'

হে হয়ি প্রভৃতি দেবতারা ! তোমরা সকলে সৎমার্গের দ্বারা আমাদিগকে যশো লাভ করিয়া দাও ; ॥ ২ ॥

যেরূপে পাদের অগ্রভাগ সকল, উত্তরোত্তর যাইতেছে, যেরূপে মাস সকল দিবার ক্ষয়ে ক্ষীণতা প্রাপ্ত হইতেছে ; সেইরূপে শ্রী বিধাতা দেবতারা উত্তরোত্তর আমাতে সম্পূর্ণ রূপে সমবেত হউন, অর্থাৎ—শ্রী প্রদান করুন ॥ ৩ ॥

যে প্রাচীন পথ-সকল চলিতেছে, যে প্রাচীন পথ-সকল

२–५–एषां चतुर्णां हय्यादयो देवताः । अनुष्टुप् छन्दः । आरण्याग्रहायणी कर्म्मणि स्वस्त्ययन होमे विनियोगः ।

'हये राके इत्येकैकयाञ्जलिना जुहुयात् प्राङ्डुपक्रम्य वसुवन एधीत्युर्द्ध' गो० ४,८ ।

অহন্তীরং । এবং মা শ্রীধাতারঃ সমবয়ন্তু সর্বতঃ স্বাহা । ৪ । যথা সমুদ্রং স্রবন্তীঃ সমবয়ন্তি দিশো দিশঃ ॥ এবং মা সখায়ো ব্রহ্মচারিণঃ সমবয়ন্তু দিশো দিশ স্বাহা ॥ ৫ ॥ বসুবন এধি বসু-

'আয়ন্তু' আজগ্মুঃ, কিমধিকেন ? 'যে চ ইমে' 'সর্ব্বে পন্থানঃ' 'তেভিঃ' তৈঃ পথিভিঃ করণৈঃ হে আদিত্য ! 'নঃ' অস্মাকং 'যশঃ' 'আবহ' প্রাপয় অস্মানিতি যাবত্ ॥ ৪ ॥

'যথা' 'স্রবন্তীঃ' স্রবন্ত্যঃ নগশিখরাদিতঃ ক্ষরন্ত্যঃ নদ্যঃ 'দিশঃ দিশঃ' সর্ব্বস্মাদ্দিশঃ 'সমুদ্রং' 'সমবয়ন্তি' সম্যক্ অবগচ্ছন্তি, 'এবং' এবমেব 'মা' মাং 'ব্রহ্মচারিণঃ, ব্রহ্মধ্যান পরাদ্বিজাঃ 'সখায়ঃ' বান্ধবাঃ 'দিশঃ দিশঃ' সর্ব্বস্মাত্ দিশঃ সমবয়ন্তু ॥ ৫ ॥

হে 'বসুবনি' বসুধনং বনতি ভজতে ইতি বসুবনিঃ ধনা-

উত্তরোত্তর (প্রবহমান হইয়া) আসিতেছে, অধিক কি ? যে এই সকল-পথ, তৎসমুদয় পথ দ্বারা হে আদিত্য ! আমাদিগকে যশঃ প্রাপ্তি করাও ॥ ৪ ॥

যেমন পর্ব্বত-শিখর হইতে পরিস্রুত নদীরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, সমুদ্রেতে সমবেত হইতেছে, তদ্রূপ বান্ধব, বেদ-চিন্তাশীল দ্বিজেরা, সকল দিক হইতে আগমন করত, আমাতে সমবেত হউন্ ॥৫ ॥

হে ধনাধিপ ! আমার গৃহে আগমন কর, হে ধনাধিপ!

वन एधि वसुवन एधि ॥ ६ ॥ वश्यंगमौ देवयानौ युवं स्थो यथा युवयोः सर्व्वाणि भूतानि वश्यमायन्त्येवं ममासौ वश्यमेतु स्वाहा ॥ ७ ॥ शंखश्च मन आयुश्च देवयानौ युवं स्थो यथा युवयोः सर्वाणि भूतानि वश्यमायन्त्येवं ममाऽसौ वश्यमेतु स्वाहा ॥८॥ आकूतीं

धिपः, तस्य सम्बोधनं 'वसुवनि!' हे धनाधिप! 'एधि' एहि, इह गृहे इति यावत्। वारत्रयोक्तिरतिशयार्था ॥ ६ ॥

हे 'वश्यङ्गमौ' ईश्वरनियमस्य वशीभूतौ चन्द्रादित्यौ! 'युवां' 'देवयानौ' देवानां द्योतमानानां मार्गौ 'स्थः' भवथः। 'सर्व्वाणि भूतानि' 'यथा' 'युवयोः' 'वश्यं' 'आयन्ति' आगच्छन्ति, 'एवं' 'असौ' ईश्वरः 'मम' 'वश्यम्' 'एतु' आगच्छतु ॥ ७ ॥

'शङ्खः मनः' शङ्खोयथा स्वच्छः शुभ्रः तद्वत् मनः 'च' अपिच 'आयुश्च' इमौ 'युवां' 'देवयानौ' 'स्थ' भवथः। अन्यत् पूर्व्ववत् ॥ ८ ॥

আমার গৃহে আগমন কর, আমি পুনশ্চ বলিতেছি—আমার গৃহে অগমন কর ॥ ৬ ॥

হে ঈশ্বরের বশতাপন্ন চন্দ্রাদিত্য দেবদ্বয়! তোমরা দেবদ্বয় অন্যান্য দেবতাদিগের পথ স্বরূপ হইতেছ। সকল চরাচর বর্গ যেমন তোমাদের বশে থাকে সেইরূপ এই ঈশ্বরও আমার বশে আসুন্ ॥ ৭ ॥

শঙ্খ যেমন স্বচ্ছ, শুভ্র, তদ্রূপ মন ও আয়ু এই দুইটী

६ – इन्द्रोदेवता। यजुः। जपेविनियोगः।
"प्राङ्कुपक्रम्य वसुवन एधीत्यूर्ध्व मुदीचमाणो' गो० ४,८।
७,८ चन्द्रादित्यौ देवते। यजुः। पृथक् पृथक् ब्रीहि यव होमे विनियोगः।
"वश्यङ्गमौ शङ्खश्चेति पृथगाहुती ब्रीहियवहोमौ प्रयुञ्जीत' गो० ४,८।

দেবীং মনসা প্রপদ্যে যজ্ঞস্য মাতরং সুহবা মে অস্তু ॥ যস্যাস্ত এক মক্ষরং পরং সহস্রা অযুতঞ্চ শাখা স্তস্যৈ বাচে নিহবে জুহোম্যা মা বরো গচ্ছতু শ্রীর্যশশ্চ স্বাহা ॥ ৯ ॥ ইদমহমিমং বিশ্ব কর্মাণং শ্রীবৎস-

'যজ্ঞস্য' 'মাতরং' প্রমাণকর্ত্রীম্ 'আকূতীং দেবীং' বাগ্রূপাং দেবতাং 'মনসা' অন্তঃকরণেন সাকং 'প্রপদ্যে' প্রপন্নোঽস্মি, কিমর্থমিত্যাহ—'মে' মম 'সুহবা' সুহবং সুন্দরাহ্বানং 'অস্তু' 'যস্যাঃ' 'তে' তব 'একম্' 'অক্ষরং' বর্ণং 'পরং' উৎকৃষ্টং 'চ' অপিচ 'সহস্রা' সহস্রং 'অযুতং' দশসহস্রং বহুতরমিতি যাবৎ 'শাখাঃ' বিদ্যন্তে 'তস্যৈ' ঈদৃশ্যৈ 'নিহবে' আহ্বানযোগ্যায়ৈ 'বাচে' বাগ্রূপিণৈ তুভ্যং 'জুহোমি' হবিঃ প্রযচ্ছামি। তথাচ 'বরঃ' প্রসাদঃ এষঃ যথা 'শ্রীঃ' লক্ষ্মীঃ 'যশশ্চ' 'মা' মাম্ আগচ্ছতু ॥ ৯ ॥

দেব মার্গ হইতেছে, সকল চরাচর যেমন তোমাদের বশে থাকে তদ্রূপ এই ঈশ্বর আমার বশে থাকুন্ ॥ ৮ ॥

যজ্ঞের প্রমাণ-কর্ত্রী বাণী রূপা দেবীর মনের সহিত শরণাপন্ন হইতেছি; আমার সুন্দর রূপে আহ্বান হউক তোমার সম্বন্ধে এক বর্ণই উৎকৃষ্ট হইতেছে; এবং সহস্র অযুত অর্থাৎ—বহুতর, শাখাও আছে; এতাদৃশরূপে আহ্বানযোগ্য, বাণীরূপি তোমাকে আমি হবিঃ প্রদান করিতেছি, অতএব তুমি প্রসন্ন হইয়া এই বর প্রদান কর যে, আমাতে শ্রী(লক্ষ্মী, যশ) আসিয়া সমবেত হউক ॥ ৯ ॥

৯ – বাগ্ দেবতা। যজুঃ। প্রসাদ করণে বিনিয়োগঃ।
(গৃহ্যসূত্রে ঽস্য বিনিয়োগো ন দৃশ্যতে)

मभिजुहोमि स्वाहा ॥ १० ॥ पूर्णहोमं यशसे जुहोमि योऽस्मै जुहोति वरमस्मै ददाति वरं वृणे यशसा भामि लोके स्वाहा ॥ ११ ॥ इन्द्रामवदात्तमोवः परस्तादहंवो ज्योति र्मामभ्येत सर्वे स्वाहा ॥ १२ ॥

'श्रीवत्स'' श्रीवत्स-मणिमिव 'इद'' पण्यद्रव्यं 'इमम्' 'विश्वकर्माणं' सर्व्वस्य स्रष्टारं देवं उद्दिश्य 'अभि' अभितः 'जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १० ॥

'पूर्णहोमः' अयं 'यशसे' यशोलाभाय 'जुहोमि' 'यः' यजमानः 'अस्मै' अग्नये 'जुहोति', 'अस्मै' यजमानाय सः अग्निः 'वरं'' प्रसादं 'ददाति', अतोऽहं 'वरं' 'वृणे' प्रार्थये—तदेवोच्यते='लोके' इह 'यशसा' यशस्वी सन् 'भामि' प्रकाशितोस्मि—इत्येव प्रार्थना ॥ ११ ॥

'इन्द्राः' हे इन्द्रादयो देवाः ! 'वः' युस्माकं 'परस्तात्' पृष्ठतः स्थितं 'तमः' अज्ञानम् 'अवदात्' खण्डनं कुरु, तथाच 'अहं' 'वः' युस्माकं 'ज्योतिः' गमेयमिति शेषः। 'सर्व्वे' देवाः 'मा' माम् 'अभ्येत' वरं दातुम् आगच्छत ॥ १२ ॥

শ্রীবৎসমণির ন্যায় এই পণ্য দ্রব্য বিশ্বকর্ম্মার উদ্দেশে অগ্নিতে নিক্ষেপ করিতেছি ॥ ১০ ॥

এই পূর্ণাহুতি যশোলাভের নিমিত্ত হবন করিতেছি, যে, অগ্নিতে পূর্ণাহুতি হবন করে, তাহাকে সেই অগ্নিদেব বর প্রদান করেন, অতএবই আমি বর প্রার্থনা করিতেছি—ইহ লোকে যেন যশস্বী হইয়া প্রখ্যাত হই ॥ ১১ ॥

१०—विश्व कर्म्मा देवता। निगदः। पण्यलाभ कामस्य होमे विनियोगः। "पण्यं होमं जुहुयादिदमहमिमं विश्वकर्माणमिति" गो० ४,८।

अन्नं वा एक छन्दस्य मन्नꣳ ह्येकं भूतेभ्य श्छदयति स्वाहा ॥ १३ ॥ श्रीर्वा एषा यत्सत्वानो विरोचनो मयि सत्व मवदधातु स्वाहा ॥ १४ ॥ अन्नस्य घृतमेव

'अन्नं' व्रीह्यादिकं 'वा' एव 'एकच्छन्दस्यम्' अद्वितीयं छादकं 'हि' यतः 'एकम्' असहायम् 'अन्नम्' 'भूतेभ्यः' भूतान् सर्व्वानेव 'छदयति' प्राणधारकत्वेन आवृणोति ॥ १३ ॥

'यत्' ये इमे 'सत्वानः' भजन-कारिणः वयं तत् 'एषा' 'वै' निश्चयं 'श्रीः' शोभा ईश्वरस्य आदित्यस्य वेति शेषः । 'विरोचनः' दीप्तिमान् देवः आदित्यः 'मयि' 'सत्वम्' बलम् 'अवदधातु' स्थापयतु ॥ १४ ॥

'अन्नस्य' व्रीह्यादेः 'घृतम् एव' 'रसः' सारः, तच्च घृतं

হে ইন্দ্রাদি দেবতারা! তোমাদিগের পশ্চাৎ অবস্থিত অজ্ঞান তিমিরকে নষ্ট কর, তাহা হইলে আমি তোমাদের জ্যোতিঃ প্রাপ্ত হই। সকলদেবতারা আমাকে বর প্রদান করিতে আগমন করুন ॥ ১২ ॥

অন্নই প্রাণীদিগের প্রাণ-ধারণে অসাধারণ কারণ, অতএব অন্নই প্রাণ-ধারণ রূপ ধর্ম্মদ্বারা সমস্ত ভূতদিগকে রক্ষা করিতেছে ॥ ১৩ ॥

উপাসনা তৎপর যে আমরা,—ইহা সকল, অবশ্যই আদিত্যের শোভা হইতেছে, আদিত্য-দেব আমাতে বল প্রদান করুন ॥ ১৪ ॥

---

१२ – इन्द्रो देवता । गायत्री छन्दः । सहाय कामस्य पूर्णहोमे विनियोगः । "सहाय काम उत्तरां" गो° ४,८ ।

१३,१४ – अनयोः आदित्यो देवता । निगदः । आज्य होमे विनियोगः । "आज्यमादित्य मभिमुखो जुहुयादन्नं वा एकछन्दस्यं श्रीर्वा एषेति च गो° ४,९ ।

रसस्तेजः सम्पत्कामो जुहोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ क्षुधे स्वाहा ॥ १६ ॥ क्षुत्पिपासाभ्याꣳ स्वाहा ॥ १७ ॥ माभैषी र्नमरिष्यसि जरदष्टि र्भविष्यसि ॥ रसं विषस्य नाविदमुग्रं फेनमिवास्यं ॥ १८ ॥ तुरगोपाय मा नाथ

'तेजः' स्वरूपं, 'सम्पत्कामः' अहं तत्तेजः 'जुहोमि' अग्नौ क्षिपामि ॥ १५ ॥

अनयोरर्थः सुगमः ॥ १६,१७ ॥

हे सर्पदष्ट ! 'मा भैषीः' मृत्यु भयं मा कुरु, 'न मरिष्यसि' 'जरदृष्टिः' जराव्याप्तजीवी 'भविष्यसि'। इदं 'आस्य' आस्यगतं 'विषस्य' रसम् निर्यासं 'उग्रं फेनम् इव' अत्यकालजं फेनमिव न 'अविदम्' अपितु यत्सामान्य मितिभावः ॥ १८ ॥

অন্নের সার ভাগ ঘৃত, তেজ স্বরূপ হইতেছে, আমি সম্পত্তি কামনায় ঐ তেজ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৫ ॥ আমি ক্ষুধা নিবৃত্ত্যর্থ, এবং ক্ষুৎপিপাসা উভয়েরই শান্ত্যর্থ অগ্নিতে হবন করিতেছি ॥ ১৬ ॥ ১৭ ॥

হে সর্প-দষ্ট ! মৃত্যুর ভয় করিও না, তুমি মরিবে না, তুমি সমুদয় জরাবস্থা ব্যাপিয়া জীবীত থাকিবে, আস্যান্তর্গত এই বিষরস মরণ জনক ফেনের ন্যায় নহে কিন্তু যৎসামান্য হইতেছে ॥ ১৮ ॥

१५—अग्नि र्देवता। बृहती छन्दः। आज्यहोमे विनियोगः।
'अन्नस्य घृतमेवेति यामी" गों ४,९।
१६,१७—क्षुत्पिपासे देवते। यजुः। सायं प्रात र्होमे विनियोगः।
सायं प्रात र्जुहुयात् "क्षुधे स्वाहा क्षुत्पिपासाभ्यां स्वाहेति" गों ४,९।
१८—सर्पो देवता। अनुष्टुप् छन्दः। विषापनोदने विनियोगः।
"माभैषी र्नमरिष्यसीति विषवता दष्टमद्भि रभ्युक्षञ्जपेत" गों ४,९।

गोपाय मा ॥ अघस्तिभ्यो अरातिभ्यः स्वस्त्ययन-मसि ॥ १९ ॥

हे 'तुर !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय ; हे 'नाथ !' 'मा' मां 'गोपाय' रक्षय, केभ्यः ?—'अघस्तिभ्यः' क्रूरकर्मभ्यः । 'अरातिभ्यः' शत्रुभ्यः । तुरः त्वं 'स्वस्त्ययनं' कल्याणकारणम् 'असि' भवसि यतस्तत एवेत्थं प्रार्थितम् ॥ १९ ॥

হে তুর ! আমাকে রক্ষা কর, হে নাথ ! আমাকে রক্ষা কর, ক্রূরকর্ম্মা শত্রুদিগ হইতে রক্ষাকর, হে তুর ! তুমি যে-রূপে স্বস্ত্যয়ন স্বরূপ হইতে থাক এই রূপ প্রার্থনা করিতেছি ॥ ১৯ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे

षष्ट खण्डः समाप्तः ॥

——:०:——

॥ अथ सप्तम-खण्डः ॥

***हतस्ते अत्रिणा क्रिमिर्हतस्ते जमदग्निना गोत-मेन तिनीकृतो ऽत्रै व त्वा क्रिमे ! ब्रह्मवद्यमवद्यं ॥१॥**

'अत्रिणा' ऋषिणा 'ते' तव पूर्व्वपुरुषः 'क्रिमिः' 'हतः' हिंसितः, 'जमदग्निना' ऋषिणा 'तिनीकृतः' तनूकृतः स्वल्पी-

তোমার পৃষ্ঠদেশে অবস্থিত পুরুষ অত্রি ঋষি কর্ত্তৃক

१९—दण्डीदेवता । यजुः । दण्डस्थापने विनियोगः ।

"तुरगोपायेति स्नातकः संवेशन बेलायां वैणवं दण्डमुपनीयोद्दधीत स्वस्त्ययनार्थं" ४,९ ।

१—अत्र्यादयो देवताः । बृहतीछन्दः । क्रमिपातने विनियोगः ।

*इह खण्डे स्थिताः सर्व्वे एव क्रमि मन्त्राः ।

"हतस्ते अत्रिणा क्रिमिरिति क्रिमिमन्तं देशमद्भिरभ्युक्षन् जपेत्" गो ४, ९ ।

भरद्वाजस्य मन्त्रेण सन्तिनोमि क्रिमे त्वा ॥ क्रिमिं
ह वक्रतोदिनं क्रिमिमांत्रानुचारिणं ॥ क्रिमिं द्वि-
शीर्षं मर्जुनं द्विशीर्षं ह चतुर्हनुं ।२। हतः क्रिमीणां
क्षुद्रको हता माता हतः पिता ॥ अथैषां भिंनकः
हतः। हे 'क्रिमे!' अद्य अहं 'अत्रैव' 'ब्रह्मवध्य' ब्रह्मघ्न 'त्वा'
त्वां 'अवद्यं' निन्दनीयं करोमीति शेषः ॥ १ ॥

हे 'क्रिमे!' 'त्वा' त्वां 'भरद्वाजस्य मन्त्रेण' 'सन्तिनोमि'
सम्यक् तनूकरोमि, कीदृशं कृमि मित्याह—'क्रिमिं' ('ह' अर्थः)
'वक्रतोदिनं' वक्रभावेन व्यथा-कारिणम्, 'क्रिमिम्' 'आन्त्रा-
नुचारिणं' अन्त्रमध्ये अनुचरण शीलं, 'क्रिमिं' 'द्विशीर्षं' अत-
एव 'चतुर्हनुम्', 'अर्जुनं' शुक्लवर्णम् ॥ २ ॥

'क्रिमीणां' 'क्षुद्रकः' वत्स-सङ्घः 'हतः', 'माता' जनयित्री
क्रिमीणामेव 'हता', 'पिता' जनकश्च क्रिमीणामेव 'हतः'।
বিনষ্ট হইয়াছে, তোমার পৃষ্ঠদেশ-স্থিত পুরুষ জমদগ্নি ঋষি
কর্ত্তৃক হিংসিত হইয়াছে এবং গৌতম ঋষি তাহাকে সূক্ষ্ম
(খাট) করিয়াছেন্। হে ক্রিমে! অদ্য আমি এই স্থলেই
ব্রহ্মঘ্ন তোমাকে নিন্দনীয় করিতেছি ॥ ১ ॥

হে ক্রিমে! তুমি বক্রভাবে পীড়াজনক, অন্ত্র (দহ বন্ধক
নাড়ীবিশেষ) মধ্যে গতি শীল, দ্বিমস্তক, অতএব চতুর্হনুক,
ও শুক্লবর্ণা হইতেছ, তোমাকে ভরদ্বাজ ঋষির মন্ত্র বলে ভাল-
রূপে সূক্ষ্ম করিতেছি ॥ ২ ॥

ক্রিমিদিগের বৎস-সমুদয় ও মাতা, পিতা সমুদয়ই আমা-

২—भरद्वाजो देवता। त्रिपादनुष्टुप्छन्दः। कृमिपातने विनियोगः।

कुम्भो य एषां विषधानकः ॥ ३ ॥ क्रिमिमिन्द्रस्य बाहुभ्या मवाञ्चं पातयामसि ॥ हताः क्रिमयः सा-श्वातिकाः सनीलमक्षिकाः ॥ ४ ॥

अपरञ्च 'एषां' क्रिमीणां 'विषधानकः' विषाधारः 'कुम्भः' कलसश्च 'भिन्नकः' भिन्नः मयेति शेषः ॥ ३ ॥

'साश्वातिकाः' अश्वातिकया सह वर्त्तमानाः 'सनील-मक्षिकाः' नील-मक्षिकया सह वर्त्तमानाः 'क्रिमयः' सर्व्वे 'हताः'। तस्य नष्टं 'क्रिमिं' क्रमिकुलं 'इन्द्रस्य' 'बाहुभ्यां' 'अर्वाञ्चम्' अधोमुखं 'पातयामसि' पातयामः ॥ ४ ॥

কর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে এবং ইহাদিগের বিষাধার, কুম্ভ ও আমাকর্ত্তৃক বিনষ্ট হইয়াছে ॥ ৩ ॥

অত্যুচ্চ আশার সহিত বর্ত্তমান, নীলমক্ষিকার সহিত বর্ত্তমান, ক্রিমি-সকল আমাকর্ত্তৃক হত হইয়াছে, সেই হত ক্রিমিকুলকে ইন্দ্রের বাহুরদ্বারা অধোমুখে পাতিত করিতেছি ॥ ৪ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे
सप्तमखण्डः समाप्तः ॥

३—मदहाजोदेवता । अनुष्टुप्छन्दः । क्रमिपातने विनियोगः ।
क्रमिपातने विनियोगः ।

॥ अथ अष्टमः खण्डः ॥

*अर्हणा पुत्र वाससा धेनु रभवद्यमे ॥ सा नः पयस्वती दुहा उत्तरा मुत्तरां समां ॥ १। इद मह मिमां पद्यां विराज मन्नाद्यायाधितिष्ठामि ॥ २ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञी र्बह्वीः शत-

या इयम् 'अर्हणा' पूजासम्पादिनी 'धेनुः' 'सा' 'यमे' धर्मे अतिथि सत्कारात्मके 'अभवत्', 'सा' च धेनुः 'उत्तराम् उत्तरां' उत्तरोत्तरं 'समां' वर्षं 'नः' अस्माकं गृहे 'पयस्वती' दुग्धवती सती 'दुहा' दुग्धदात्री भवतु ॥ १ ॥

'अहम्' अतिथिः 'इदं' आसनं, 'इमां' 'पद्यां' पाद्यं 'विराजं' शोभितं गृहम् 'अन्नाद्याय' अन्नभक्षणं कर्त्तुम् 'अधितिष्ठामि। आश्रये ॥ २ ॥

যে এই পূজা সম্পাদন শীল ধেনু, ইহা অতিথি-সৎকার রূপি ধর্ম্মের নিমিত্ত হইয়াছিল, সেই এই ধেনু উত্তরোত্তর বর্ষে আমাদিগের গৃহে দুগ্ধবতী হইয়া দুগ্ধ প্রদান করুক ॥ ১ ॥

আমি (অতিথি) অন্ন ভক্ষণ করিবার নিমিত্ত এই আসন, এই পাদ্য গ্রহণ করিয়া শোভিত গৃহে অধিকার করিতেছি ॥ ২ ॥

---

१ – अर्हणीय-देवता। अनुष्टुप्छन्दः। धेनु बन्धने विनियोगः।

*अथार्चनीयप्रकरणम्। "षडार्घ्यारिहाभवन्ति – आचार्य्य – ऋत्विक्—स्नातका – राजा – विवाह्यः – प्रियोतिथिरिति,, गो ४,१०।

२—अर्हणीय-देवता। यजुः। उपविशतो जपे विनियोगः

"इमां पद्यां** इति प्रतिष्ठमानो जपेत्" गो ४,१०।

विचक्षणाः ॥ तामह्यमस्मिन्नासने च्छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ३ ॥ या ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु ॥ तामह्यमस्मिन् पादयोरच्छिद्राः शर्म्म यच्छत ॥ ४ ॥ यतो देवीः प्रतिपश्याम्याप स्ततोमारा-

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः फलपाकान्ता व्रीहयः, 'सोमराज्ञीः' चन्द्रमा देवताकाः, 'बह्वीः' बह्वः 'बहुतराः 'शत-विचक्षणाः' बहु-जीवन-रक्षण-निपुणाः 'अस्मिन्' आसने 'अच्छिद्राः' निरन्तरं स्थिताः—'ताः' 'मह्य' 'शर्म' कल्याणं 'यच्छत' प्रदानं कुरुत ॥ ३ ॥

'याः' 'ओषधीः' ओषध्यः 'सोमराज्ञीः चन्द्रमा देवताकाः 'पृथिवीम् अनु विष्ठिताः' भूमि मनुलक्ष्य अधिष्ठिताः; परार्द्धार्थः पूर्व्ववत् ॥ ४ ॥

हे 'आपः !' 'यतः' हेतोः युस्मान् 'देवीः' 'प्रति पश्यामि'

বহু জীবন রক্ষণে নিপুণ, এই আসনে নিরন্তর অবস্থিত যে, চন্দ্রদেবতা-জীবন, ওষধি (ধান্যাদি) সকল,—তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৩ ॥

ভূমিতে অধিষ্ঠিত, যে চন্দ্র-দেবতা জীবন, ওষধিরা, তাহারা আমাকে কল্যাণ প্রদান করুক ॥ ৪ ॥

হে আপঃ ! তোমাদিগকে আমি দেবতা রূপে দেখিতেছি,

४,४—आर्षः : ओषधीर्देवता । अनुष्टुप् छन्दः । पादयोरधस्तात् विष्टरदाने विनियोगः "या ओषधीरित्युदञ्चं विष्टरमासीयोऽभ्युनविशेत् रोचेत् पृथक्पृथक्भ्यां पादयोः" गो४,१०

द्धि रागच्छतु ॥ ५ ॥ सव्यं पादमवनेनिजेऽस्मिन् राष्ट्रे श्रियं दधे ॥ ६ ॥ दक्षिणं पादमवनेनिजे ऽस्मिन् राष्ट्रे श्रिय मावेशयामि ॥ ७ ॥ पूर्वमन्य मपरमन्य मुभौ

'यतः' तस्मात् प्रार्थये—यदयं 'धिः' धृतिशील: यजमानः 'मारात्' विघ्नात् 'आगच्छतु' विघ्नान् विसृज्य एतु ॥ ५ ॥

'सव्यं' वामं 'पादम्' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन 'अस्मिन् राष्ट्रे' एतद्-गृहस्थस्य शासनाधीन-राज्ये गृहे 'श्रियं' शोभां लक्ष्मीं वा 'दधे' स्थापयामि ॥ ६ ॥

अस्यार्थः पूर्ववत् सुगमः ॥ ७ ॥

'पूर्वं' प्रथमम् 'अन्यं' पादम्, 'अपरं' द्वितीयं 'अन्यं' पादम् एवं कृत्वा क्रमात् 'उभौ पादौ' 'अवनेनिजे' प्रक्षालयामि, एतेन किम्फल मित्याह—'राष्ट्रस्य' एतद्गृहस्थ-संसारस्य

অতএব প্রার্থিতেছি যে, এই আমার মেধাবী জমান, বিঘ্নকে অপসৃত করত আগমন করুক ॥ ৫ ॥

বাম পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, পাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৬ ॥

দক্ষিণ পাদ প্রক্ষালন করিতেছি, প্রাদ প্রক্ষালন প্রভাবেই এই গৃহে লক্ষ্মী স্থাপন করিতেছি ॥ ৭ ॥

এই সংসার সমৃদ্ধিযুক্ত করিবার নিমিত্ত এবং অভয়ের

५—आपो देवता: । विराट् छन्दः । पादप्रक्षालनार्थोदके विनियोगः ।
"यतीदेवीरित्यपः प्रेक्षेत" गों ८,१० ।
६ – अर्हणीय श्रीर्देवता । निगदः । वामपादप्रक्षालने विनियोगः ।
"सव्यं पादमवनेनिजे इति सव्यं पादं प्रक्षालयेत् गों ४,१० ।
७ – अर्हणीय-श्रीर्देवता । निगदः । दक्षिणपादप्रक्षालने विनियोगः
"दक्षिणं पादमवनेनिजे इति दक्षिणं पादं प्रक्षालयेत्" गों ४,१० ।

स्वसादित्याना ममृतस्य नाभिः॥ प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागा मनागा मदितिं वधिष्ट॥ १४॥

अष्टानां देवानां 'दुहिता', 'आदित्यानां' द्वादशानां 'स्वसा' 'अमृतस्य' दुग्धरूपस्य 'नाभिः' उत्पत्ति-स्थानम्। अतः 'अदितिं' अदीनाम् 'अनागां' निरपराधां 'गाम्' इमां हे यजमान परिचारकाः! यूयं 'मा बधिष्ट' बधं मा कुरुत, अहञ्च तव प्रभो-राज्ञाव्युरति-दोष-प्रशमनाय 'चिकितुषे' ज्ञानवते 'जनाय' यजमानाय त्वत्-प्रभवे 'प्रनुवोचम्' पूर्व्वमेवोक्तवान्, इदमिति यावत्॥ १४॥

খড়্গহস্ত সেই গো-শত্রুকে হনন করিবার নিমিত্ত, ত্যাগ কর ॥ ১৩ ॥

ইনী (গো) রুদ্র সকলের মাতা হইতেছেন, বসু সকলের দুহিতা হইতেছেন, আদিত্য সকলের ভগিনী হইতেছেন, অমৃতের উৎপত্তি স্থান হইতেছেন, অতএব অখণ্ডনীয় নিরপরাধ এই গোকে, হে যজমান-পরিচারকেরা! তোমরা সকলে, বধ করিও না, আমি জ্ঞানবান্ যজমানকে—অর্থাৎ তোমার প্রভুকে, তোমার প্রভুর আজ্ঞা-অবহেলা রূপ অপরাধ মার্জ্জনা করাইবার নিমিত্ত পূর্ব্বেই বলিয়াছিলাম ॥ ১৪ ॥

इति सामवेदीये मन्त्रब्राह्मणे अष्टम-खण्डो द्वितीय-प्रपाठकस्य समाप्तः॥

१३— गौर्देवता। बृहती छन्दः। गोमोचणे विनियोगः।
"मुञ्च गां वरुणपाशा द्विषन्तं **ब्रूयात्" गो० ४,१०।
१४--गौर्देवता। त्रिष्टुप् छन्दः। गवानुमन्त्रणे विनियो[illegible]
"माता रुद्राणामित्यनुमन्त्रयेत" गो० ४,१०।

कलिकातासंस्कृतविद्यामन्दिरे—वि,ए,उपाधिधारिणः श्रीजीवानन्द-विद्यासागर-भट्टाचार्य्यस्य सकाशात् लभ्यानि ।